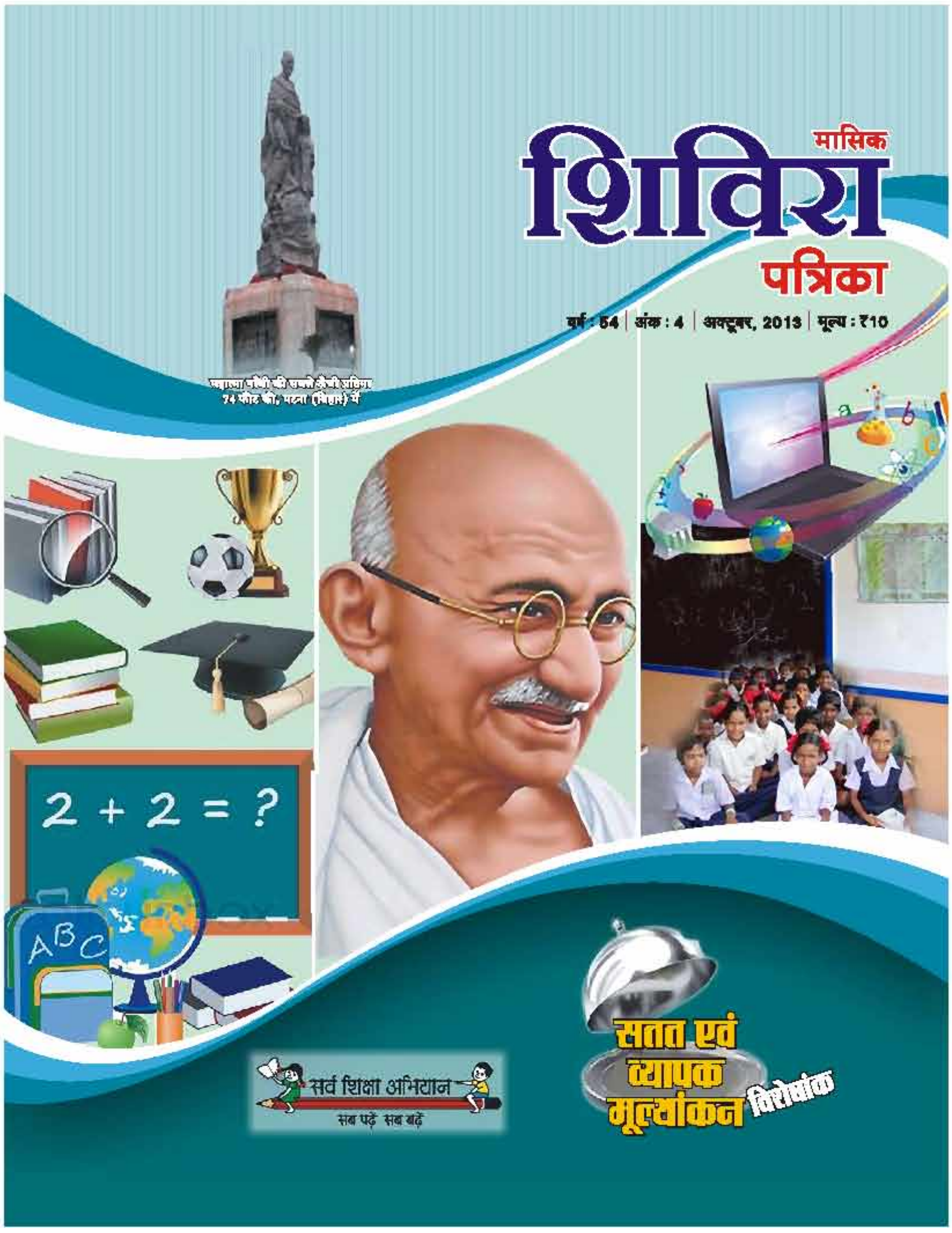
मासिक
शिविरा
पत्रिका
वर्ष : 54 | अंक : 4 | अक्टूबर, 2013 | मूल्य : ₹10
महात्मा गांधी की सबसे ऊँची प्रतिमा
74 फीट की, पटना (बिहार) में
2 + 2 = ?
ABC
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
सतत एवं
व्यापक
मूल्यांकन विशेषांक

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, 2013

दिनांक : 5 सितम्बर, 2013 **स्थान : बिड़ला सभागार, जयपुर**

(बाएं) सम्मान समारोह की मुख्य अतिथि महामहिम श्रीमती मार्गेट आल्वा, राज्यपाल राजस्थान दीप प्रज्वलन करते हुए साथ में खड़े हैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री कृष्णकिशोर शर्मा और माननीया शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती नसीम अख्तर इंसाफ। **(दायें)** शिक्षक दिवस प्रकाशन–2013 की पाँच पुस्तकों का लोकार्पण करते गरिमामय मंच पर अतिथिगण।

(बायें से दायें) : उद्बोधन देते हुए सम्मान समारोह की मुख्य अतिथि महामहिम श्रीमती मार्गेट आल्वा, राज्यपाल राजस्थान, अध्यक्ष माननीय शिक्षा मंत्री श्री कृष्णकिशोर शर्मा, विशिष्ट अतिथि माननीया शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती नसीम अख्तर इंसाफ, माध्य. शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. पी.एस. वर्मा, प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा मीनू गुप्ता और शासन सचिव स्कूल शिक्षा प्रवीण गुप्ता।

सभागार में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों में राज. प्राथमिक शिक्षा परिषद् के आयुक्त श्री भास्कर पु. सावंत तथा शासन सचिव स्कूल शिक्षा प्रवीण गुप्ता एवं अन्य शिक्षा अधिकारियों के साथ राज्य स्तर पर पुरस्कृत शिक्षक।

फोटो सौजन्य : बिड़ला स्टूडियो, जयपुर

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 54 | अंक : 4 | आश्विन–कार्तिक २०७० | अक्टूबर, 2013

अतिथि सम्पादक
भास्कर ए. सावन्त
आयुक्त
राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्

प्रधान सम्पादक
डॉ. वीना प्रधान

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

सहायक
सांग सिंह
सुकेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंकड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय है।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

नई दिशा। श्रीमती बीनू गुप्ता 5
दिशा बोध। श्री प्रवीण गुप्ता 6
अतिथि सम्पादकीय। श्री भास्कर ए. सावन्त 7
दिशासंकल्प। डॉ. वीना प्रधान 9
गांधी/शास्त्री जयंती विशेष
- महात्मा गांधी का शिक्षा–दर्शन और समाजबोध 10
भवानी शंकर व्यास
- नई तालीम का पुनर्पाठ 13
भगवती प्रसाद गौतम
- यों ही नहीं बन जाता है कोई गांधी 14
कल्याणदान कच्छावा
- महात्मा गांधी–अनुभूतियां एवं जीवन दर्शन 17
पी.डी. सिंह
- गांधी जी की सबसे ऊंची प्रतिमा 49
सुनील पंचारिया
- ऐसे थे लाल बहादुर शास्त्री 18
डॉ. श्याम मनोहर व्यास
सतत एवं व्यापक मूल्यांकन
- व्यापक एवं सतत मूल्यांकन कार्यक्रम के पहले चक्र 19
उषा बाफना
- कक्षा–कक्ष प्रक्रिया एवं योजना में बदलाव 22
डॉ. अमृता बाथोड
- सीसीई के सुदृढ़ीकरण में ईसीसीई की भूमिका 23
अनिल कुमार शर्मा
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में डायट की भूमिका 37
भैंवर सिंह सान्दू
- सीसीई के तहत पूछे जाने वाले प्रश्न 38
कुसुम बिष्ट
- यों करें मासिक कार्यशाला का आयोजन 40
उषा बाफना
- रीडिंग कैम्पेन–प्राथमिक शिक्षा का स्वागतपूर्ण व कारगर कदम 41
कमल शर्मा
- सफलता की कहानी शिक्षकों की जुबानी 42
मुक्ता यादव / पूनम यादव / कल्याण सहाय शर्मा
- कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय में सीसीई 44
चेतन कुमार पालीवाल
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन : भयमुक्त मूल्यांकन : क्या देखा 47
शैक्षिक समाचार
- सेवानिवृत शिक्षा अधिकारियों का स्नेह मिलन। सुमन सिंह 46
इस माह का गीत
- लोकराज आया है मेरे देश में 39
वेद व्यास
नई कलम
- हौसले टूटे नहीं 43
किसन गोपाल व्यास
हमारे पुरोधा
- महान् शिक्षाविद् डॉ. दूलसिंह 48
शिवजी राम चौधरी
दिवस
- अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस 50
डॉ. जमनालाल बावरी
हमारी सांस्कृतिक धरोहर
- सूर्यनगरी : जोधपुर 52
डॉ. गोपाल सिंह कच्छावाह
आँचलिक देखी
- बच्चों ने कलक्टर का मन मोहा 54
विनेश श्रीमाली
राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह–2013
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सबको मिलनी चाहिए : मार्गेट आल्वा 55
सुकेश व्यास
प्रतिध्वनि
- ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान 58

स्तम्भ

आदेश–परिपत्र–25 से 35 निदेशालय प्रसारण, इस माह का पंचांग–36

आवरण :
अविनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185

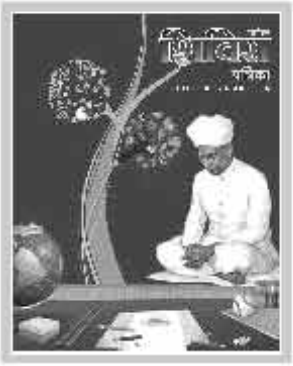

▼ चिन्तन

The woods are lovely, dark & deep
But I have promises to keep
And miles to go before I sleep
And miles to go before I sleep
-Robar Frost
Stopping by Woods on a snowy evening

गहन सघन मनमोहक
वन-तरु मुझको आज बुलाते हैं,
किन्तु किए जो वादे मैंने
याद मुझे आ जाते हैं
अभी कहाँ आराम बदा,
यह मूक निमंत्रण छलना है,
अरे अभी तो मीलों मुझको,
मीलों मुझको चलना है।

अनुवाद : हरिवंशराय बच्चन

पाठकों की बात

● शिविरा पत्रिका सितम्बर 2013 की प्रति प्राप्त हुई, चित्र समाचार में राज्य की वरीयता सूची में स्थान पाने वाले होनहार विद्यार्थियों के साथ प्रदेश की प्रमुख तीन सर्वोच्च शख्सियत के साथ मेरिट में आए छात्रों का अति दुर्लभ क्षणों का फोटो प्रेरणादायी लगा। डॉ. के.के. पाठक जी का आलेख ऋण सिद्धांत व गुरु ऋण बहुत ही उच्च स्तरीय आलेख है। **–सरदार सिंह चारण**
व्याख्याता, डाइट बाड़मेर

● शिविरा का सितम्बर 13 का अंक नई पैकिंग में प्राप्त हुआ जो अन्दर मुखपृष्ठ की सुन्दरता से और आकर्षक हो गया है। साथ ही इसके कागज की क्वालिटी भी अच्छी हुई है अंक मे पूर्व की अपेक्षा साहित्यिक विविधता है लेख तो हैं ही साथ ही संस्मरण, कविता, गीत, लघुकथा आदि भी दिए जा रहे हैं जिससे यह अधिक रोचक व पठनीय होती जा रही है। यह आपके सोच से ही सम्भव हुआ है। **–भारत जोशी**
58/5, मोहन कॉलोनी, बांसवाड़ा

● शिविरा का सितम्बर 2013 का दिशाकल्प प्रेरणा का स्रोत है। निदेशक महोदया ने हमें आत्मचिन्तन के लिए प्रेरित किया है। भाव व अभिव्यक्ति इतनी सुन्दर है जैसे कि शब्द बोल रहे हो। अन्य आलेख भी बहुत सुन्दर है।
–लक्ष्मीनारायण शर्मा, प्र.अ.
रानी बाजार, बीकानेर

● शिविरा सितम्बर 2013 का अंक मूलतः शिक्षा व साक्षरता को समर्पित है। आवरण पृष्ठ पर सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन का भव्य दिव्य चित्र बरबस ही ध्यान खींच लेता है। सितम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवसों, शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) साक्षरता दिवस (8 सितम्बर) के महात्म्य को सांगोपांग रूप से प्रस्तुत कर रहा है। आदरणीय डॉ. राधाकृष्णन, श्री तेजकरण डंडिया, श्री चतरसिंह मेहता को श्रद्धा सहित याद करते हुए शिक्षकों की ओर से आदर सहित भावसुमन अर्पित किये हैं। शैक्षिक परिदृश्य को गति प्रदान करने वाली पाठ्यसामग्री सहित, प्रेरक प्रसंग, संस्मरण, अनुभूत तथ्यों को यथोचित स्थान दिया है। **–टेकचन्द शर्मा**
मुनि आश्रम के पास, झुंझुनूं

● शिविरा सितम्बर 2013 अंक मिला। शिक्षक दिवस के प्रणेता डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का आराधन मुद्रा-चित्र, विभिन्न शैक्षिक प्रतीकों के साथ प्रस्तुत भावात्मक आकर्षक मुखपृष्ठ विशिष्ट रंग-संयोजन के साथ संदेश परक है और सांस्कृतिक धरोहर 'जामा मस्जिद टोंक' अपने परिचय के साथ सुन्दर प्रस्तुति है। शिक्षक दिवस ही नहीं हर दिवस ही आत्मचिन्तन का दिवस है। विशेषतः शिक्षक के लिए क्योंकि उसका वास्ता मानव निर्माण में है, निदेशक महोदया का यह संदेश प्रेरक है। डॉ. पाठक के विशद अध्ययन और गहरे ज्ञान से संपूरित आलेख का मुख्य संदेश यही है कि आचार्य देवोभव लेकिन जिनका चरित्र श्रेष्ठ हो वही उपासना योग्य है, अन्य नहीं।
–रूपनारायण काबरा
ए-438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर, जयपुर

● गुरु शिक्षक और आचार्य का दर्जा तभी प्राप्त कर सकता है जब वह भौतिक सुविधा संपन्न जीवन के स्थान पर सादा जीवन उच्च विचार एवं कर्तव्य बोध को अंगीकार करे। आलेख सदैव हमें शिक्षक और आचार्य बनने हेतु प्रेरित करता रहेगा। निदेशक महोदया का श्रेष्ठ दिशाकल्प यही संदेश दे रहा है। **–सीताराम उपाध्याय**
प्राध्यापक, रा.उ.मा.वि., कोटपूतली, जयपुर

मानदेय के सम्बन्ध में निवेदन

शिविरा एवं नया शिक्षक के रचनाकारों से निवेदन है कि नवीन व्यवस्था के अनुसार अब शिविरा/नया शिक्षक में रचनाएं छपने पर लेखकीय मानदेय का भुगतान 'ऑन लाईन' आपके बैंक खाते में ही जमा किया जा सकेगा। अतः अब तक अप्रैल, मई-जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर 2013 अंकों में छप चुके तथा भविष्य में प्रकाशनार्थ भिजवाए जाने वाली रचनाओं के साथ लेखक महानुभाव कृपया निम्न सूचनाएं अवश्य भिजवाएं-

1. लेखक का नाम.....
2. पैन नम्बर.....
3. बैंक का नाम.....
4. ब्रांच का नाम.....
5. खाता संख्या.....
6. बैंक IFSC No. .....
7. MICR No. .....
8. फोन बेसिक/मोबाईल नं.....

–वरिष्ठ संपादक

बीनू गुप्ता
प्रमुख शासन सचिव
स्कूल शिक्षा विभाग

> "नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 शिक्षा को सतत गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखता है जहाँ बच्चों को गरिमामय जीवन व्यतीत करने और बिना डर और भय से ग्रस्त हुए अपने ज्ञान का सृजन करने का अवसर उपलब्ध करवाने का पुरजोर समर्थन करता है।"

नई दिशा

सुनिश्चित हो शिक्षा की गुणवत्ता

महात्मा गाँधी ने शिक्षा को सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त अन्याय, हिंसा व असमानता के प्रति राष्ट्र की अन्तर्आत्मा को जगाने के माध्यम के रूप में देखा था। उनके द्वारा सुझाई गई "नई तालीम" व्यक्ति में आत्म निर्भरता एवं आत्म सम्मान को स्थापित करने पर जोर देती थी। शिक्षा ऐसे सामाजिक सम्बन्धों का आधार बने जिससे समाज के भीतर व बाहर अहिंसा स्थापित करने में मदद मिल सके। उन्होंने ऐसे भारत का सपना देखा था जिसमें प्रत्येक बालक अपनी योग्यता एवं सम्भावनाओं की तलाश कर सके और दूसरों के साथ मिलकर समाज के पुनर्निर्माण के लिए काम कर सके।

नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 शिक्षा को सतत गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखता है जहाँ बच्चों को गरिमामय जीवन व्यतीत करने और बिना डर और भय से ग्रस्त हुए अपने ज्ञान का सृजन करने का अवसर उपलब्ध करवाने का पुरजोर समर्थन करता है। अधिनियम में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यदि बच्चे नियमित रूप से स्कूल आते हैं तथा शिक्षकों द्वारा प्रत्येक बच्चे के शैक्षिक स्तर एवं सीखने की गति का नियमित आकलन कर उसके अनुसार कक्षा में अपनी शिक्षण योजना में बदलाव के साथ गतिविधियाँ आयोजित की जाती है, तो बच्चा आवश्यक रूप से सीखता रहेगा। बच्चों के पास-फेल का आधार मात्र परीक्षाओं के प्राप्तांक न होकर उनके सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अभिलेख होगा। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में बालक सबसे महत्वपूर्ण है। इसमें शिक्षकों से यह भी अपेक्षा की गई है कि वे बच्चों की स्कूल में नियमित उपस्थिति और उनके शैक्षिक स्तर के बारे में उनके अभिभावकों को नियमित जानकारी दें।

इस सबके लिए सम्पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था विशेषकर विद्यालयी एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं एवं शिक्षकों की भूमिका में सकारात्मक बदलाव की आवश्यकता है। शिविरा के सतत एवं समग्र मूल्यांकन विशेषांक के माध्यम से मैं सभी शिक्षकों, अधिकारियों एवं इससे जुड़े सभी लोगों का आह्वान करना चाहूँगी कि शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने वाले इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में अपनी भूमिका निभाने हेतु अन्तर्मन से जुड़ें।

शुभकामनाओं सहित...

(बीनू गुप्ता)

प्रवीण गुप्ता
शासन सचिव
स्कूल शिक्षा विभाग

"गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी में रहने वाले बालक-बालिकाएँ न केवल अच्छे वातावरण में शिक्षा ग्रहण करें अपितु उनका सर्वांगीण विकास सम्भव हो सके इसे सुनिश्चित करना शिक्षकों एवं शिक्षण व्यवस्था का उत्तरदायित्व है।"

दिशाबोध

बच्चों को समझाएं जीवन का अर्थ

नि: शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के क्रम में राजस्थान ने पहल करके नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2010 लागू कर इस कानून के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है।

गाँव-गाँव, ढाणी-ढाणी में रहने वाले बालक-बालिकाएँ न केवल अच्छे वातावरण में शिक्षा ग्रहण करें अपितु उनका सर्वांगीण विकास सम्भव हो सके इसे सुनिश्चित करना शिक्षकों एवं शिक्षण व्यवस्था का उत्तरदायित्व है। शिक्षकों का कर्तव्य बनता है कि वह बच्चों को इतना सक्षम बनाएं कि वे जीवन का अर्थ समझ सकें तथा अपनी योग्यताओं का अधिकतम विकास करने के अवसर प्राप्त कर सकें। स्कूल गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में सामाजिक सरोकारों की ओर ले जाने वाली क्षमताओं का विकास होना चाहिए।

बच्चों को लगातार चिन्तन के अवसर मिलते रहें तथा विभिन्न विषयों पर प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 को ध्यान में रखते हुए समुचित गतिविधियों और शिक्षण के तरीकों को अपना कर शिक्षक बच्चों के सीखने की गति को बढ़ाने में मददगार हो सकते हैं। बच्चे की प्रगति को सतत एवं व्यापक रूप से आकलन करते हुए यदि शिक्षक अपने कार्य को नियोजित करेंगे तो बच्चों को कक्षा में असफल घोषित करने की संभावना न्यूनतम हो जाएगी।

यह हर्ष का विषय है कि शिविरा पत्रिका के अक्टूबर 2013 अंक को सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विशेषांक के रूप में राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद के सौजन्य से प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक में सतत मूल्यांकन के इस नवाचारी कदम के बारे में आवश्यक अकादमिक एवं अब तक किये गये प्रयासों के साथ-साथ इसके विस्तार एवं शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न चरणों की जानकारी को स्थान दिया जा रहा है। निश्चय ही यह पत्रिका शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वालों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं के साथ...

(प्रवीण गुप्ता)

भास्कर ए. सावंत
आयुक्त
राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद्

"बालक प्रारम्भ से ही अवलोकन, अनुभूति एवं क्रियात्मक गतिविधियों में गहरी रुचि लेते हैं। उन्हें अपनी गति से सीखने के अवसर प्रदान करने, सक्रिय रखने एवं सीखने के विभिन्न विकल्पों की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना शिक्षक का दायित्व है।"

अतिथि सम्पादकीय

बाल-गतिविधियों का हो शिक्षण में समावेश

राष्ट्रीय स्तर पर निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 समाज की शैक्षिक आवश्यकता की पूर्ति एवं शिक्षा की गुणवत्ता के लिए उठाये गये दूरगामी कदमों में से एक है। इसमें बच्चों के सीखने का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन किये जाने की बात निहित है। शिविरा पत्रिका का यह विशेषांक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों एवं शैक्षिक व्यवस्था के अंतर्गत किये जाने वाले बदलावों की जानकारी के लिए समर्पित है।

भारतीय संसद द्वारा पारित कानून की अनुपालना में राज्य सरकार द्वारा 1 अप्रैल, 2010 से आरटीई 2009 के प्रावधानों को स्वीकार करने के उपरान्त इसमें निहित घटकों को भली-भाँति लागू करने के लिए मौजूदा शैक्षिक व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसमें मूल्यांकन को सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया तय करने में राजस्थान राज्य अग्रणी रहा है। केन्द्र सरकार के स्तर पर हमारे प्रयासों को केवल सराहा ही नहीं गया अपितु इस मॉडल के सकारात्मक पक्षों को उनके द्वारा स्वीकार करते हुए उन्होंने सीसीई में संबंधित संदर्भ साहित्य में भी उचित स्थान दिया है।

बालक प्रारम्भ से ही अवलोकन, अनुभूति एवं क्रियात्मक गतिविधियों में गहरी रुचि लेते हैं। उन्हें अपनी गति से सीखने के अवसर प्रदान करने, सक्रिय रखने एवं सीखने के विभिन्न विकल्पों की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना शिक्षक का दायित्व है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यांकन को औपचारिक परीक्षा से जोड़ा जाता रहा है। सामान्यतया ये परीक्षाएँ तनाव और चिन्ता को जन्म देती हैं। अतः हमारा यह दायित्व है कि परीक्षा के इन दुष्प्रभावों को दूर करते हुए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों के सार्थक और आनन्ददायी अनुभवों एवं संदर्भों को जोड़ते हुए भयमुक्त मूल्यांकन के प्रयास किये जाएं। अच्छे शिक्षक आज भी अपनी शिक्षण प्रक्रिया में बच्चों के द्वारा की जाने वाली सभी गतिविधियों का बारीकी से अवलोकन करते हैं। प्रत्येक बच्चे की रुचि एवं क्षमताओं को भी जानते हैं एवं उसके अनुसार ही अपनी दैनिक कार्य योजना बनाते हैं।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन के लिए 2010 से संचालित पायलेट प्रोजेक्ट के अन्तर्गत बच्चों के शैक्षिक स्तर, नामांकन, नियमितता एवं ठहराव में वृद्धि, बालकों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के बीच संवाद तथा बच्चों के कार्यों एवं प्रगति में अभिभावकों की रुचि ने इसके क्रमबद्ध विस्तार के लिए सकारात्मक वातावरण तैयार किया है। इसी के आधार पर मैं सभी सुधि पाठकों को यह बताना चाहूँगा कि वर्ष 2017-18 तक कक्षा 1 से 8 में सतत एवं समग्र मूल्यांकन लागू कर दिया जाएगा।

इसके अन्तर्गत डाइट्स के विषय विशेषज्ञों की क्षमता संवर्द्धन, नोडल रिसोर्स स्कूल एवं विषय विशेषज्ञ तैयार करना, शिक्षकों का प्रशिक्षण, ब्लॉक से लेकर उच्च स्तर तक के अधिकारियों में सीसीई के संदर्भों की समझ बनाने एवं निरंतर शिक्षक सम्बलन एवं विद्यालयों की मॉनिटरिंग की व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए प्रयास प्रारम्भ कर दिये गये हैं। सतत एवं समग्र मूल्यांकन विद्यालय आधारित होने के कारण शिक्षकों का सजग एवं मानसिक रूप से इस बदलाव को स्वीकार करने के लिए तैयार होने की आवश्यकता है। इस विशेषांक के माध्यम से मैं सभी शिक्षकों एवं अधिकारियों का आह्वान करना चाहूंगा कि बच्चों के भविष्य निर्माण एवं शिक्षा की गुणवत्ता कायम करने के इस अभियान में दिलोदिल से शामिल होकर अपना योगदान दें।

शुभकामनाओं सहित...

(भास्कर ए. सावंत)

हम होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन।
ओहो मन में है विश्वास पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन।

हम चलेंगे साथ-साथ, डाल हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।
ओहो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।

नहीं डर किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन।
ओहो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
नहीं डर किसी का आज के दिन।

होगी शान्ति चारों ओर, होगी शान्ति चारों ओर
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन।
ओहो मन में है विश्वास पूरा है विश्वास
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन।

होगी शिक्षा सबके पास, होगी शिक्षा सबके पास
होगी शिक्षा सबके पास एक दिन।
ओहो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
होगी शिक्षा सबके पास एक दिन।

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन।

डॉ. वीना प्रधान
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

> "छात्रवृत्तियाँ एवं प्रोत्साहन जहाँ इन्हें प्राप्त करने वाले बालक-बालिकाओं के मन में उत्साह भरते हैं, वहीं अन्य बालक-बालिकाओं को भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करते हैं। ये विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा के स्रोत होते हैं।"

दिशाकल्प

नैतिक शिक्षा के पुरोधा बने शिक्षक

राज्य सरकार द्वारा छात्र हित में अनेक योजनाएं संचालित की जा रही है जिनमें पात्रतानुसार निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का वितरण, साईकिल क्रय हेतु चैक, विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियाँ, शुल्क मुक्ति अथवा उसमें रियायत आदि प्रमुख है। इनके अलावा मेरिट में स्थान प्राप्त करने वाले बालक-बालिकाओं को योजना के प्रावधानानुसार लेपटॉप, पीसी टेबलेट, विभिन्न पुरस्कार आदि देकर भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

छात्रवृत्तियाँ एवं प्रोत्साहन जहाँ इन्हें प्राप्त करने वाले बालक-बालिकाओं के मन में उत्साह भरते हैं, वहीं अन्य बालक-बालिकाओं को भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करते हैं। ये विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा के स्रोत होते हैं। पिछले दिनों इन योजनाओं की समीक्षा करने पर विदित हुआ कि जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय स्तर पर योजनाओं के सफल क्रियान्वयन की दिशा में अपेक्षित जागरुकता नहीं है। इस कारण समय पर वांछित प्रस्ताव या तो प्राप्त नहीं होते या प्राप्त प्रस्ताव उपयुक्त व पूर्ण नहीं होते। हमें पूर्ण सचेष्ट रह कर विभिन्न प्रस्ताव यथा समय-यथा निर्देश भिजवाने का संकल्प लेकर उसे पूरा करना चाहिए। विद्यार्थियों के हित की चिन्ता यदि हम नहीं करेंगे, तो भला कौन करेगा।

भारत सरकार की प्रमुख योजनाओं में Direct Benefit Transfer योजना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना है। हम जानते हैं कि आने वाले समय में विभिन्न प्रकार की सबसिडी पात्र व्यक्ति को उनके बैंक खाते में आधार कार्ड के माध्यम से जमा कराई जाएगी। स्कूल शिक्षा विभाग में पाँच छात्रवृत्तियों को इस योजना में शुमार किया गया है। फिलहाल इसके लिए छह जिले यथा अजमेर, अलवर, उदयपुर, कोटा, पाली एवं झुंझुनूं को लिया गया है। इन जिलों में छात्रवृति की राशि पात्र बालक-बालिकाओं को उनके आधार कार्ड के माध्यम से बैंक खातों में जमा की जाएगी। अतः संबंधित शत-प्रतिशत बालक-बालिकाओं के आधार कार्ड एवं बैंक खाते होने परमावश्यक है। मेरी शिक्षा अधिकारियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों से अपील है कि वे इन औपचारिकताओं को पूर्ण करने में तत्परता बरतते हुए विभाग को सहयोग प्रदान करें ताकि यथासमय वांछित आर्थिक मदद पात्र विद्यार्थियों को मिल सके।

इस माह में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं यशस्वी प्रधानमंत्री रहे लाल बहादुर शास्त्री के जन्मदिन है। इन महापुरुषों को नमन। इनके जीवन व महान कार्यों से प्रेरणा लेकर हमें आगे बढ़ना चाहिए। गांधी-शास्त्री का जीवन नैतिकता और उच्च मानवीय मूल्यों का आदर्श उदाहरण है। विभाग ने इन महापुरुषों के जन्म दिन से विद्यालयों में नैतिक शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने का निर्णय लिया है (देखें पृ.सं. 34)। मुझे पूरा विश्वास है कि शिक्षक भाई-बहन इस कार्यक्रम की भावना को समझ कर तद्नुसार कार्य करेंगे जो अन्ततः आदर्श समाज की निर्मिति का आधार बनेगा। शिविरा पत्रिका का यह अंक राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर के सौजन्य से व्यापक एवं सतत मूल्यांकन विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है यह अंक इस महती विषय की अवधारणा को स्पष्ट करने में शिक्षकों का मार्गदर्शन करने में सफल सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं के साथ...

(डॉ. वीना प्रधान)

गांधी जयंती विशेष

महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शन और समाजबोध

❑ भवानी शंकर व्यास

शिक्षाविद् एवं साहित्यकार के रूप में श्री भवानी शंकर व्यास 'विनोद' का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। आप शिविरा एवं नया शिक्षक पत्रिकाओं के वरिष्ठ संपादक रहे हैं। अंग्रेजी भाषा के निष्णात शिक्षक, शिक्षाविद् एवं कुशल शिक्षा अधिकारी के रूप में आपकी पहचान है। आप द्वारा अंग्रेजी विषय पर लिखी पुस्तक माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर के पाठ्यक्रम में वर्षों शुमार रही। उद्भट कवि, वक्ता एवं साहित्यकार के रूप में आपको राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त है। शिविरा पत्रिका को आपका मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद सतत मिलता रहता है। आप अनेक विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित हैं।

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन के पीछे व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की बात है-एक ऐसा विकास जो व्यष्टि की जगह समष्टि से जोड़ता हो, जिसमें स्वस्थ परम्पराओं की प्राणवायु हो और जो भारत की आत्मा से संवाद करते हुए समूची मानवता के कल्याण की बात करता हो। सदियों तक शिक्षा आगे बढ़ती रही पर उसमें विचलन और भटकाव भी कम नहीं हुए। शिक्षा ने जब कभी केवल हृदय की पुकार को सुना तो उसमें आदर्श व मूल्यबोध तो मुखरित हुए पर वैज्ञानिक दृष्टि का अभाव बना रहा। उधर जब-जब शिक्षा केवल दिमाग पर केन्द्रित रही उसमें वैज्ञानिक चिन्तन का तो विकास हुआ साथ ही भौतिकतम व आत्मपोषी व्यावहारिकता भी हावी हो गई। आदर्श गौण हो गए और 'स्व' विस्तार पाता चला गया। तीसरी तरफ शिक्षा का लक्ष्य जब कभी केवल पेट भरने का रहा तो उदरपूर्ति भले ही हो गई है। पर आत्मा की भूख नहीं मिट सकी। डॉ. राधाकृष्णन ने एक जगह लिखा भी है-'हम सारे विश्व को भले ही जीत लें पर यदि आत्मा को हार जाएँ तो हमारी यह विजय बेमानी ही रहेगी।'

आवश्यकता है समन्वय की

महात्मा गांधी इन तीनों पृथक-पृथक विधियों से अवगत थे, अतः वे जानते थे कि इनका समन्वय हुए बिना केवल एकाकी मार्ग से कुछ भी होने वाला नहीं है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में हैंड, हार्ट एवं हैण्ड मस्तिष्क व हाथ का समन्वय करके अपनी क्रम प्रधान, आस्थापरक और वैज्ञानिक शिक्षा पद्धति का सूत्रपात किया और उसे भारत की तत्कालीन परिस्थितियों से जोड़कर प्रासंगिक बना दिया। उनका कहना था कि- 'एक राष्ट्र के नाते शिक्षा में हम इतने पिछड़े हुए हैं कि शिक्षा अगर शिक्षा-प्रसार के कार्यक्रम का आधार केवल पैसा रहा तो इस विषय में हम जनता के प्रति अपने कर्तव्य के पालन की आशा नहीं कर सकते। इसलिए रचनात्मक कार्य सम्बन्धी अपनी सारी प्रतिष्ठा को खो बैठने की जोखिम उठाकर भी मैंने यह कहने का साहस किया है कि शिक्षा स्वावलम्बी होनी चाहिए। सच्ची शिक्षा वह है जिसे पाकर मनुष्य अपने शरीर मन और आत्मा के उत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास कर सके और उन्हें प्रकाश में ला सके। साक्षरता न तो शिक्षा का अंतिम ध्येय है और न उससे शिक्षा का आरंभ ही होता है।'

जाहिर है कि वे शिक्षा के माध्यम से लड़कों व लड़कियों के अन्तर्निहित गुणों को बाहर लाकर उनका विकास करना चाहते थे पर क्या वह काम मात्र जानकारियाँ परोस देने से होने वाला था? क्या मात्र सूचनाओं का आयतन बढ़ाकर ही शिक्षा के सही स्वरूप को गढ़ा जा सकता था। यह समस्या तो सुकरात के सामने भी आई थी। तभी तो उसने कहा था- 'लोगबाग अपने सिर पर न जाने कितना फालतू चीजों का बोझ लिए फिरते हैं पर जब कभी परीक्षण होता है तो साबुन के झाग की तरह वह सब समाप्त हो जाता है।' सूचना और स्थायी ज्ञान में बुनियादी अंतर है। महात्मा गांधी ने भी बाहर से ढूंढी जाने वाली अल्पजीवी जानकारियों की जगह शिक्षा को जीवन के सही प्रयोजन से जोड़ने पर बल दिया। हम संसार में आए हैं तो हमारे जीवन का कुछ प्रयोजन भी तो होना चाहिए। लक्ष्यहीन जीवन तो भ्रम है भटकाव को ही जन्म देता है तभी गांधीजी ने कहा था 'शिक्षा का यह काम विद्यार्थियों के दिमाग में अनापशनाप व अनचाही जानकारी भर देने से कभी नहीं होगा। शिक्षक यदि दुनिया भर का पूरा ज्ञान भी उन्हें दे देवें तब भी शिक्षा अधूरी ही रहेगी, जब तक कि वह उनमें सत्य व पवित्रता का विकास न करें। केवल ज्ञान देने तक ही शिक्षक यदि सीमित रहता है तो वह तो छात्रों के साथ एक धोखा है।'

अच्छी शिक्षा का स्वरूप

महात्मा गांधी अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों में पूर्णतया स्पष्ट थे। वे न तो किन्तु-परन्तु के चक्कर में पड़ते थे न मूलभुलैया या भटकाव की बात ही करते थे। शिक्षा के लिए सही दृष्टि चाहिए तो मंतव्य गंतव्य की दिशा और प्रयोजन भी चाहिए। उनके अनुसार 'आत्मा सम्बन्धी शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है। सच्ची शिक्षा वह है जो चित्त को शुद्ध करे, मन व इन्द्रियों को संयमी बनाए, शिक्षार्थियों में स्वावलंबन का भाव भरे, निर्वाह के साधन उपलब्ध कराए, पर पीड़ा के प्रति संवेदन करे और पारस्परिक सहयोग के साथ जीवन बिताना सिखाएं। मैं तो उसे ही अच्छी शिक्षा कहूंगा। कोरी पंडिताई मात्र अक्षर ज्ञान और (व्यर्थ के) तर्क-वितर्क की शिक्षा मेरे मत में तो अधूरी शिक्षा ही कहलाएगी।'

खिड़कियाँ खुली रखें

गांधीजी न तो बंद समाज के पक्षपाती थे और न संकीर्णता के पक्षधर। वे तो इस दिशा से आने

वाले सही ज्ञान का स्वागत करते थे। शिक्षा में यदि मदान्ध केवल अपने ही विचारों को श्रेष्ठ मानने का भाव हो और गैरजरूरी वैचारिक कट्टरता तो उससे एक अच्छी व सही विश्वदृष्टि नहीं बन सकती। उनका स्पष्ट मत था कि जहाँ कहीं भी मानवता का हित चिन्तक केन्द्र में हो, वही शिक्षा सर्वश्रेष्ठ है और हमें उसके मार्ग में बाधक नहीं बनना चाहिए। इस प्रसंग में उनके विचार आज भी प्रासंगिक है। 'मैं न तो मेरे घर के चारों ओर दीवारें चाहता हूँ और न खिडकियाँ बंद। मैं चाहता हूँ कि विश्व की संस्कृतियाँ मेरे दरवाजों से अंदर प्रवेश करें पर मैं यह भी चाहता हूँ कि मेरे पैर जमीन पर टिके रहें।'

पाठ्यपुस्तकें कैसी हों ?

भारत की तत्कालीन परिस्थितियों में जो शिक्षा दी जानी थी वह न तो छात्रों में देश प्रेम के भाव भरती थी न उन्हें स्वाभिमान से जीना सिखाती थी। गांधीजी ने कहा 'मेरा पक्का विश्वास है कि सरकारी स्कूलों में दी जाने वाली आज की शिक्षा ने हमें बुजदिल, लाचार व अविश्वासी बना दिया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आम स्कूलों में बच्चों को जो पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं वे चाहे हानिकारक न हो पर अधिकांश निकम्मी होती हैं। उन्हें बड़ी ही होशियारी से लिखा जाता है, जिन लोगों और जिन परिस्थितियों के लिए वे लिखी जाती हैं। उनके लिए वे अच्छी हो सकती हैं पर भारत के लड़कों व लड़कियों और भारतीय परिस्थितियों के लिए वे उपयुक्त नहीं है।' मेरा वश चले तो मैं सारी पाठ्यपुस्तकों पर जो अनावश्यक व अनुपयुक्त है, तत्काल रोक लगा दूं और हमारी परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए नए सिरे से पाठ्यपुस्तके तैयार करवाऊँ।' कितने क्रांतिकारी विचार है ये! शासन (ब्रिटिश शासन) का हित साधन करने वाली पाठ्यपुस्तकें न तो भारतीय जन के लिए उपयुक्त थी और न भारतीय मन के लिए। महात्मा गांधी ने तो एक बार विश्वगुरु रवीन्द्रनाथ टेगौर को भी अपने मन की बात कही थी। टेगौर ने जब गांधीजी का प्रतिरोध करते हुए कहा कि 'अर्थशास्त्र को धत्ता बताकर उसकी जगह झूठे नैतिक उपदेशों को घसीटा जा रहा है।' तब गांधीजी ने उनको करारा जवाब देते हुए लिखा-'करोड़ों भूखे लोग आज एक ही कविता की माँग कर रहे हैं, भूख मिटाने वाली भोजन रूपी कविता की। मैं अर्थशास्त्र व नीतिशास्त्र में तनिक भी भेद नहीं करता पर जो अर्थ व्यवस्था व्यक्ति या राष्ट्र की नैतिकता को चोट पहुँचाती है वह अनैतिक है। इसलिए पाप पूर्ण है।'

आइंस्टीन गिजुभाई और गांधी

गांधीजी का शिक्षादर्शन एक हद तक आइंस्टीन और गिजुभाई के चिंतन से मेल खाता हुआ सा लगता है। आइंस्टीन के अनुसार जब तक दुनिया का एक भी बालक दुखी है, तब तक कोई भी खोज महान नहीं है और कोइ भी प्रगति महत्त्व की नहीं है। दूसरी ओर गिजुभाई का मानना है कि 'यदि हम बालक रूपी वसन्त को न समझ सके, उसके पराग को न सूंघ सके, उसके गान को न सुन सके तो हम बालक के पीछे खड़ी समूची जनता को थोड़े ही समय में अंधकार की तरफ ले जाएंगे या उसे एक गहरी खाई में धकेल देंगे।'

गांधीजी का फलक सामाजिक-राजनैतिक था, आइंस्टीन का वैज्ञानकि व गिजुभाई का शैक्षिक पर तीनों के इन विचारों में गजब का साम्य है। लक्ष्य समाज का व्यापक कल्याण करना, उसे अंधी गुफाओं में गिरने से बचाना तथा मानवता के पथ को प्रशस्त करना। यह बालक शिक्षा की वह धुरी है जिस पर समाज बोध परिक्रमा करता है। गांधी के शैक्षिक चिन्तन को हमें इसी परिप्रेक्ष्य में समझना होगा।

बुनियादी शिक्षा और उसकी बुनियाद

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा की बात को लेकर जहाँ उसकी प्रशंसा हुई वहाँ तीव्र आलोचना भी की गई। उसे चर्खे के चक्कर में प्रगति को रोकने वाली शिक्षा प्रणाली बताया गया। गांधीजी तो बच्चों को ऐसी उत्पादक शिक्षा देना चाहते थे जो उनको श्रम को प्रतिष्ठित कर सके और जन जीवन के साथ उन्हें जोड़ कर रख सके। गाँवों और शहरों में रहने वाले करोड़ों बच्चों को विकास में भागीदार बनाना अपने वतन के साथ उन्हें जोड़े रखना तथा शिक्षा के माध्यम से उनका शारीरिक व बोद्धिक विकास करना ही बुनियादी तालीम का लक्ष्य था। गांधीजी चाहते थे कि पूरी शिक्षा रचावलंबी हो, विद्यार्थी हाथों से हिकारत न करें यानी स्वयं अपने श्रम द्वारा ज्ञान प्राप्त करें, उत्पादन की क्रियाओं में भागीदार बनें तथा अपने को भारत का नागरिक मानते हुए सभी नागरिकों के साथ प्रेम भाव रखें।

प्रौढ़ शिक्षा : ज्ञान वह जो जीवनोपयोगी हो

गांधीजी ने प्रौढ़शिक्षा की अवधारणा और उपयोगिता पर भी अपने स्पष्ट विचार रखे थे। उन्होने कहा था 'अगर बड़ी उम्र के सभी-पुरुषों को तालीम देने का काम मेरे जिम्मे होतो मैं अपने विद्यार्थियों को अपने देश के विस्तार और उसकी महत्ता का बोध कराकर उनकी पढ़ाई शुरू करूं। हमारे गाँवों में कितना घोर अज्ञान घुसा हुआ है, इसका हमें अंदाजा हीं नहीं है। वे यह नहीं जानते कि विदेशी हुकूमत का देश पर कितना बुरा प्रभाव पड़ रहा है। वे यह भी नहीं जानते कि इस विदेशी हुकूमत की बला को दूर करने की ताकत उनमें है।' (रचनात्मक कार्यक्रम पृ.सं. 30, 31) फिर भी प्रश्न बना हुआ है कि प्रौढ़शिक्षा के बारे में असल में उनकी संकल्पना क्या थी। क्यों जरूरी है प्रौढ़शिक्षा? गांधीजी ने लिखा-'जन साधारण में फैली हुई व्यापक निरक्षरता भारत का कलंक है। वह मिटना ही चाहिए। बेशक साक्षरता की मुहिम का आरंभ और अंत वर्णमाला के ज्ञान के साथ ही नहीं जाना चाहिए। वह उपयोगी ज्ञान के प्रचार के साथ-साथ चलनी चाहिए। लिखने, पढ़ने व अंकगणित (थ्री आर) का शुष्क ज्ञान देहातियों के जीवन का स्थायी अंग न आज है और न कभी हो सकता है। उन्हें ऐसा ज्ञान देना चाहिए जिसका वे रोज उपयोग कर सकें। वह उनपर थोपा नहीं जाना चाहिए। उसकी उन्हें भूख होनी चाहिए।

अध्यापकों की महिमा

गांधीजी का मत था कि अध्यापन का कार्य सामान्य नौकरी से पृथक है। अध्यापक पीढ़ी का निर्माण करते हुए देश का निर्माण करते हैं। मात्र धंधा न मान कर 'मिशन' माना जाना चाहिए। आज लोगों में ज्ञान की इच्छा है और वे इसकी मांग भी कर रहे हैं। इसमें कोई बुराई नहीं है। गांधीजी जानते थे कि इस कार्य के लिए हजारों अध्यापकों की जरूरत पड़ेगी। हमें उन्हें एक निश्चित वेतन देने की व्यवस्था करनी होगी। राष्ट्र अपनी क्षमता के अनुसार उन्हें यथोचित देगा। यहाँ तक तो ठीक है पर अध्यापक पर जो अतिरिक्त दायित्व है, (पीढ़ी को संस्कारित करने का) उसमें धन इतना अहम नही है जितना मन है। गांधीजी ने यंग इण्डिया में लिखा था, 'ऐसे पुरुषों व स्त्रियों को आगे आना चाहिए जो आर्थिक लाभ

की पर्वाह न करके शुद्ध देश सेवा के भाव से अध्यापन का कार्य अपनाएँ। यदि लेखा हो तो राष्ट्र शिक्षा के धंधे को छोटा नहीं समझेगा बल्कि इन त्यागी स्त्रियों व पुरुषों को अपना प्रेम व आदर प्रदान करेगा।' (यंग इंडिया 6-8-1925)

शिक्षाविदों की आलोक पंक्ति में गांधीजी

महात्मा गांधी शिक्षा के माग सिद्धान्त का विषय न मान कर व्यावहारिक जीवन का अंग मानते थे। विश्व के शिक्षा मनीषियों ने स्वयं को शिक्षा से जोड़ने के लिए विद्यालयों की स्थापना की थी। ए.एस. नील की 'समर हिल', टेगोर का 'शांति निकेतन', हॉर्स्टरम्फ का 'फ्री स्कूल', गिजु भाई का 'बालमंदिर' व मेरिया मोन्टेसरी का 'चिल्ड्रन होम' तो काफी चर्चित हुए ही थे पर दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी ने जिस फिनिक्स विद्यालय की शुरवात की। उनकी अपनी विशेषता थी। इस विरल विशेषता के कारण ही देश-विदेश में उसकी काफी प्रशंसा हुई। उस विद्यालय के छात्र श्रम से स्वावलंबन की, व्यवहार से जीवन विज्ञान की और स्वयं के अनुभव से तत्कालीन परिस्थितियों में सामाजिक बदलाव की शिक्षा प्राप्त करते थे। उपयोगी शिक्षा, व्यर्थ की सूचना परक शिक्षा नहीं। भारत आने पर महात्मा गांधी उन छात्रों को अपने साथ ले आए ताकि शिक्षा जगत के सामने एक दृष्टांत रख सकें। ये छात्र कुछ दिनों तक शांति निकेतन में भी रहे पर वहाँ के वातावरण में जब हाथों से श्रम करने का कोई काम नहीं देखा तो उनका मन उचट गया। शांति निकेतन के छात्रों को भी जीवन में रुचियों के परिष्कार की शिक्षा दी जाती थी पर माध्यम थे कला, संगीत व काव्य। विद्यार्थियों के सभी काम वहाँ के नौकर-चाकर करते थे। न उन्हे बागवानी करनी होती थी, न सफाई और न खाना बनाने का काम। दस्तकारी खेती या उद्योग से जुड़े जीवनोपयोगी काम भी वे नहीं करते थे। वे यद्यपि प्रकृति की छाया में रहते थे पर उन्हें पौधारोपण का या पौधों की प्रजातियों का या घरेलू धंधों का तनिक भी ज्ञान नहीं था। फिनिक्स विद्यालय के बच्चों के लिए तब पृथक व्यवस्था करनी पड़ी। फिर भी एक बात महत्व की है कि उन बच्चों के लिए जो शिक्षा विधियां काम में ली जाती थी, उनमें विश्व के मान्य शिक्षाविदों की प्रणालियाँ भी किसी न किसी रूप में जुडी हुई थी।

पृथक प्रणालियाँ और उनका सामंजस्य

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध व बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध ने विश्व के शिक्षा-क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव किए थे। भारत के अलावा अन्य देशों के बड़े-बड़े शिक्षाशास्त्री जैसे पेस्टोलोजी, रोबर्टअवन, सेमुअल विल्डर, हर्बर्ट, मेरिया मोंटेसारी, फ्रोबल, फॉन हॉल्ट, पाब्लोफ्रेयरे, नीत्से, चारगाफ, हॉर्स्ट रम्फ अल्फेड और साइमन आदि ने अपने विचारों से शिक्षा जगत में काफी हलचल पैदा की जो भारत के रवीन्द्रनाथ टेगोर, मदनमोहन मालवीय, कृष्णामूर्ति, महर्षि अरविंद, महात्मा गांधी, डॉ. राधाकृष्णन, डॉ. जाकिर हुसैन, श्री मन्नारायण, कालेलकर आदि ने शिक्षा संग में अग्रणी भूमिका निभाई। महात्मा गांधी इनमें अग्रणी थे। पेस्टोलोजी की तरह गांधीजी ने भी शिक्षा क्षेत्र में संस्कार देने के लिए माँ की ममता व पिता के दुलार को मान्यता दी। बच्चे के प्रारंभिक संस्कार घर के स्नेहिल वातावरण में ही बन सकते है। उनका भी मानना था कि बच्चा व्यस्कों का लघु संस्करण नहीं है प्रत्युत एक विकासमान प्राणी है। अवन व विल्डर की तरह वे भी समाज को शिक्षा की प्रयोगशाला मानते थे। पर वे इर्बर्ट की इस प्रणाली से सहमत नहीं थे। जहाँ सुधार के नाम पर बच्चे की पिटाई होती है। रूसो की तरह उनकी भी मान्यता थी कि अध्यापक को अपने ही विचारों को सही मानकर उन्हें बच्चों पर लादने का कोई अधिकार नहीं है। बच्चे को अपने ही अनुभवों से सीखने देना चाहिए। वे कोई खिलौना नहीं है जो साँचे में ढल कर आकार लेता हो। मेरिया मोंटेसरी बच्चों का विकास उनकी जिज्ञासा जगा कर स्वयं अनुभव का अवसर देकर तथ्य उनके भीतर के देवत्व को जगा कर करना चाहती थी। महात्मा गांधी मेरिया मोटेसरी की पांच सूत्रीय शिक्षा प्रणाली को अच्छा मानते थे पर उनकी दृष्टि में श्रम व स्वावलंबन सर्वोपरि थे। गिजुभाई के सम्पूर्ण शिक्षा दर्शन पर तो गांधीजी का प्रत्यक्ष प्रभाव ही था। फ्रोबल की तरह गांधीजी भी खेलकूद, व्यायाम, शरीर सौष्ठव, श्रम आदि को कारगर शिक्षण विधि मान कर चलते थे। ध्यान, योग, खेल आदि मन को केन्द्रित करने के साथ-साथ सह अस्तित्व के भाव भी उपजाते हैं।

तिलिस्म को तोड़ने का श्रेय

महात्मा गांधी को इस बात का श्रेय दिया जाता है कि उन्होंने पाश्चात्य शिक्षा के उस तिलिस्म को तोड़ने का काम किया जो यह सिद्ध करती थी कि बस यही शिक्षा श्रेष्ठ है। सभ्य वही है जो इस शिक्षा को ग्रहण करता हो। गांधीजी ने कहा कि इस शिक्षा के चक्कर में हम अपनी जड़ों से अलग-थलग हो गए हैं। 'हम लोग अपनी जनता को पहचानते तक नहीं। वह (जनता) हमें सभ्य मानकर पराया देखने लगती है और हम उसे (जनता को) जंगली समझकर तिरस्कार करते हैं। अर्थ तो यही हुआ न कि पढ़ा-लिखा बेटा सभ्य और अनपढ़ माँ-बाप 'जंगली', आधुनिकता का चक्कर सभ्य और भारत की संस्कृतिक विरासत 'जंगली', अंग्रेजी राइम्स रहना 'सभ्य' और भारतीय मनीषियों की कविताओं, मंत्रों की ऋचाओं गिरी को याद करना जंगली, बाबूगीरी सभ्य और कृषि कार्य जंगली। गांधी की सबसे बड़ी देन है कि उन्होंने इस तिलिस्म को तोड़ा और शिक्षा प्रणाली में भारतीयता का संचार किया।

-1-स-9, पवनपुरी, बीकानेर
मो. 9352653164

नई तालीम : गाँधी की अन्तिम वसीयत

मैं इस देश के सामने और उसके द्वारा संसार के सामने कुछ नए विचार रखने का दावा कर सकता हूं। मैंने अब तक जिन विचारों की भेंट जगत के चरणों पर चढ़ाई है, उनमें यह विचार (नई तालीम सम्बन्धी) मुझे सबसे अधिक क्रान्तिकारी और महत्वपूर्ण लगता है। इससे अधिक महत्वपूर्ण और अधिक मूल्यवान भेंट में संसार के सामने रख सकूंगा, ऐसा मुझे नहीं लगता। इसमें मेरे सारे रचनात्मक कार्यक्रम को व्यावहारिक रूप देने की कुंजी समाई हुई है। जिस दुनिया के लिए मैं छटपटा रहा हूं, वह इसमें से उत्पन्न की जा सकती है। **यह मेरी अन्तिम वसीयत है ।**

प्रथम वर्धा शिक्षा परिषद में दिए गए वक्तवय का अंश-22 सितम्बर 1937

गाँधी जयंती / विश्व अहिंसा दिवस

नई तालीम का पुनर्पाठ

❑ भगवती प्रसाद गौतम

श्री भगवती प्रसाद गौतम आदर्श शिक्षक, कुशल शिक्षा अधिकारी होने के साथ ही मूर्धन्य साहित्यकार हैं। शिक्षा विभाग में आपने विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए प्रतिमानकारी परिणाम दिए हैं, जो आपकी कुशलता के परिचायक है। आपकी अब तक आठ कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। आप महामहिम राज्यपाल द्वारा राज्यस्तरीय शिक्षक पुरस्कार तथा राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा संगुइमाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित हैं।

घर में श्रेष्ठ पुस्तकों का कोई बहुत बड़ा खजाना तो नहीं है, फिर भी जितनी हैं उनमें कुछ तो हैं ही, जिनकी अहमियत जीवन के ऊपरी पड़ाव पर पहुंचकर समझ में आने लगी है। ऐसी अद्भुत पुस्तकों में महात्मा गाँधी कृत 'हिन्दस्वराज', 'सत्य के प्रयोग' (An Autobiography or The Story of My Experiments With Truth) और 'नई तालीम' (Towards New Education) जैसी कालजयी कृतियाँ भी सम्मिलित हैं। संयोग ही रहा कि इनमें से पहली पुस्तक तो एक बार 'अमूल सीमांत' बज्जू (बीकानेर) में सम्पन्न एक शिक्षा शिविर (जून 2005) से लौटते समय 'अनौपचारिका' के पूर्व संपादक भाई रमेश थानवी ने भेंट की थी, जबकि अंतिम दोनों कृतियाँ छात्रजीवन (1966-67) में कुछ खास उपलब्धियों के लिए पुरस्कार स्वरूप प्राप्त हुई थीं और वे जिस हालत में भी है, अभी तक इधर उपलब्ध हैं।

'हिन्द स्वराज' (1909) के शुरुआती पृष्ठों पर ही 'दो शब्द' के बहाने महान शिक्षा शास्त्री काका कालेलकर ने जो भी लिखा है उसकी बीच पंक्तियाँ हैं- 'गाँधी जी के सारे जीवनकार्य के मूल में जो श्रद्धा काम करती रही, वह सारी 'हिन्द स्वराज' में पाई जाती है। इसलिए गाँधी जी के विचार-सागर में इस छोटी-सी पुस्तक का महत्त्व असाधारण है।' यद्यपि इसी पुस्तक के संदर्भ में यह बात भी बड़ी रोचक किन्तु विचारणीय लगती है कि गाँधी जी के ही मित्र-सम गुरु गोखले जी ने इस पुस्तक को 'एक मूर्ख आदमी की रचना' कहा था। गाँधी जी ने अपनी 'आत्मकथा' (1927) में लिखा भी है- 'यहाँ यह कहना अप्रस्तुत न होगा कि हिन्द स्वराज में मैंने जो विचार व्यक्त किए हैं, गोखले उनका मजाक उड़ाते थे और कहते थे-'आप एक वर्ष हिन्दुस्तान में रहकर देखेंगे तो आपके विचार अपने आप ठिकाने आ जाएंगे।'

वस्तुतः महात्मा गांधी के जीवन एवं चिंतन में जबरदस्त बदलाव लाने वाली पुस्तक थी जॉन रस्किन की 'अंटु दिस लास्ट' जिसका बाद में उन्होंने 'सर्वोदय' नाम से गुजराती में अनुवाद किया। सच यह भी है कि कालांतर में उनकी 'आत्मकथा' से प्रेरित होकर अनेक आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों ने भी अपनी जीवन शैली बदली और सहज-सरल सामाजिक भूमिका निभाई। यही है एक अच्छी किताब की ताकत।

जोहांसबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) से इक्कीस मील की दूरी पर स्थित टॉल्सटॉय फार्म में और बाद में भारत-भूमि पर बच्चों की शिक्षा के संबंध में महात्मा जी द्वारा जो प्रयास और प्रयोग किए गए, उन बहुआयामी एवं अद्भुत अनुभवों के निष्कर्ष रूप में 1953 में जो पुस्तक आई, वह थी नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद की 'नई तालीम' (Towards New Education)। यद्यपि इससे पूर्व भी इसी प्रकाशन के जरिए 'बुनियादी शिक्षा' (Basic Education) पर उनकी एक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी थी, मगर तत्कालीन नई शिक्षा योजना को लेकर प्रस्तुत 'नई तालीम' स्वयं में अनूठी है। यह कृति कोई मौलिक कृति नहीं है, बल्कि उनके शिक्षा संबंधी उन लेखों-आलेखों और भाषणों की ऐसी समेकित प्रस्तुति है जो 1937 के पूर्व और बाद की अवधि में समय-समय पर पाठकों के सामने आते रहे।

उल्लेखनीय है कि 2 अक्टूबर को गाँधी जयंती (अब विश्व अहिंसा दिवस भी) मनाई जाती है और अक्टूबर 1953 में ही यह पुस्तक (अंग्रेजी संस्करण) प्रकाशित हुई। इसमें निहित बेजोड़ सामग्री का संग्रह किया प्रो. निर्मल कुमार बोस और प्रो. अनाथ नाथ बोस ने, जबकि इसके सुनियोजित संपादन का श्रेय जाता है गाँधीवादी विचारक भारतन कुमारप्पा को, जिन्होंने अपना मंतव्य स्पष्ट करते हुए संपादकीय (EDITOR'S NOTE) में लिखा भी है- 'An attempt has have been made to arrange the writings in such a way that the reader may see for himself the evolution of Gandhiji's ideas in regard to Education.'

अभी-अभी अनायास ही एक लेख से गुजरना हुआ। (रविवारी जनसत्ता, 9.6.2013) जिसमें 'शिक्षा का अधिकार फोरम' के राष्ट्रीय संयोजक अंबरीश राय के हवाले से रेखांकित किया गया है कि 'शिक्षा का बुनियादी लक्ष्य एक बेहतरीन समाज की संरचना तैयार करने वाले नागरिकों को तैयार करना है। लेकिन व्यवहार में हम देख रहे हैं कि शिक्षा का लक्ष्य सिर्फ अच्छी से अच्छी नौकरी पाना रह गया है। पढ़-लिखकर बच्चा सबसे पहले अच्छा इंसान बने, उसके बाद डॉक्टर या इंजीनियर, ऐसी इच्छा शायद ही समाज में रह गई हो।'

इस दृष्टि से देखें तो छह दशक बीतते-बीतते भी शिक्षा चिंतन की पुस्तक 'नई तालीम' आज तलक उतनी ही प्रासंगिक जान पड़ती है, जितनी विगत कालखंडों में रही होगी। कारण स्पष्ट है कि बुनियादी शिक्षा योजना 7-14 आयु वर्ग के बच्चों के लिए बनी थी, किन्तु समय के साथ उनमें सात वर्ष से नीचे के और चौदह वर्ष से ऊपर के छात्र-छात्राओं के लिए क्रमशः पूर्व बुनियादी (Pre-Basic) और उत्तर बुनियादी (Post-Basic) शिक्षा-योजना की जरूरतों को भी अनुभव किया गया। इसीलिए बापू की 'नई तालीम' अथवा 'New Education' के सरोकार बच्चों-किशोरों की तीनों अवस्थाओं से जुड़े हैं, केवल एक से नहीं।

समग्रतः नब्बे पृष्ठों की यह पुस्तक आठ खंडों में विभाजित है। यद्यपि संपादकीय में संकेत दे दिया गया है कि जहाँ प्रथम खंड में समसामयिक शिक्षा नीति के विरोध में स्वर मुखरित हुआ है, वहीं दूसरे में नए-नए प्रयोगों संबंधी प्रक्रिया पर कुछ प्रकाश डाला गया है। जबकि तीसरे और उसके बाद के खंडों में समय-समय पर अर्जित अनुभवों के आधार पर विभिन्न सिद्धांतों का प्रतिपादन-निरूपण होता नजर आता है। फिर भी यहाँ किसी प्रकार की कठोरता के प्रति आग्रह नहीं है। संपादक कुमारप्पा लिखते हैं-'It is hardly necessary to say that these sections are by no means rigid, for even in his period of revolt and experimentation we find Gandhiji formulating principles. Nevertheless it is hoped that classifying his writings thus will help to provide a clearer understanding of the development of his ideas.'

उपर्युक्त तीन खंडों के क्रम में ही शिक्षा, संस्कृति एवं जन-जीवन, चरित्र-निर्माण, पाठ्यपुस्तकों की अहमियत, श्रम का सम्मान, स्वयं नियोजन, हस्तकौशल, धार्मिक, नैतिक एवं मूल्य परक शिक्षा, शिक्षण का माध्यम, राष्ट्रभाषा, लिपि एवं अन्य भाषाएं, शिक्षा की अनिवार्यता, प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा, विशिष्ट वर्गों (प्रौढ़, नारी, वंचित) की शिक्षा आदि ऐसे अनेक विषय-उपविषय हैं जिन पर पुस्तक में समयोचित और सार्थक चर्चा की गई है। खासियत यह है कि यहाँ बापू के विचार अनुभूत, तर्क संगत, बेबाक और प्रेरणास्पद रहे हैं।

इस आलेख को आकार दिए जाने के क्षणों में दृष्टि बरबस ही दैनिक समाचार पत्र की एक खास पंक्ति पर ठहर गई। वहाँ मुद्रित था-'मार्टिन लूथर किंग जूनियर के प्रसिद्ध भाषण

गाँधी का पत्र हिटलर के नाम

यों ही नहीं बन जाता है कोई गाँधी

❑ करुणीदान कच्छावा

महात्मा गांधी का इस धरती पर अवतरण किसी चमत्कार से कम नहीं है। वे शक्ति, सहिष्णुता व अहिंसा के अवतार थे। भारत को इस पर गौरव होना स्वाभाविक है। उनके जीवन चरित्र को लेकर अमेरिका के राष्ट्रपति मिस्टर बराक ओबामा सहित दुनिया के कल और आज के लोग अचम्भित हैं। भविष्य के लोग भी अचम्भित होंगे, यह निश्चित है। ओबामा महोदय तो अपने मन की हसरत बताते हुए फरमाते हैं-'यदि किसी भी जीवित अथवा दिवंगत हस्ती के साथ मुझे रात्रि भोज का मौका दिया जावे तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी मेरी पहली पसन्द होंगे। अगर भारत में अहिंसा आन्दोलन शुरू नहीं होता तो अमेरिका में भी नागरिक अधिकारों के लिए आंदोलन नहीं हो पाता।' कोई व्यक्ति अपने उत्तम कार्यों और मन में सबके भले की मंगल भावना के बल पर महान बनता है और गांधी इन सबके सरदार हैं। वे दुनिया में सबके मित्र हैं। उन्हें सब अपने लगते हैं। कोई पराया नहीं लगता। कबीर बाबा ने कहा था-'ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।' वही बात यदि गांधी बाबा से पूछते तो वे बोलते, 'अपनी सबसे दोस्ती ना काहू से बैर।' गांधी खड़ा बाजार में, सबकी मांगें खैर अपनी सबसे दोस्ती, ना काहू से बैर।

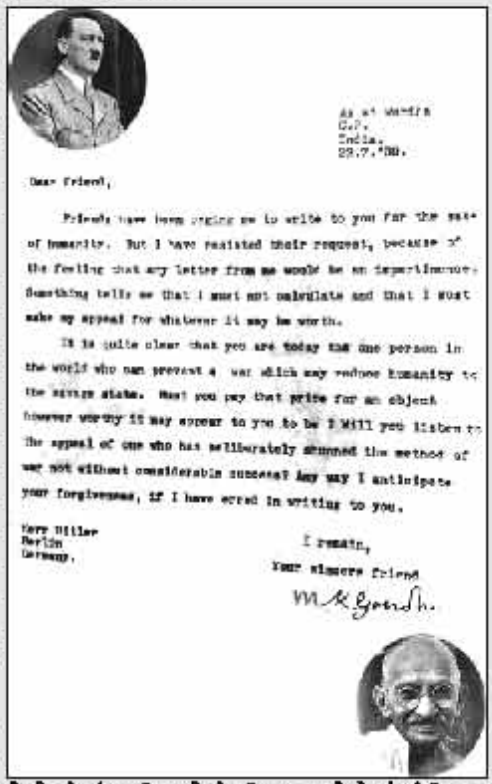

Sabarmati
C.P.
India.
22.7.'39.

Dear Friend,

Friends have been urging me to write to you for the sake of humanity. But I have resisted their request, because of the feeling that any letter from me would be an impertinence. Something tells me that I must not calculate and that I must make my appeal for whatever it may be worth.

It is quite clear that you are today the one person in the world who can prevent a war which may reduce humanity to the savage state. Must you pay that price for an object however worthy it may appear to you to be? Will you listen to the appeal of one who has deliberately shunned the method of war not without considerable success? Any way I anticipate your forgiveness, if I have erred in writing to you.

Herr Hitler
Berlin
Germany.

I remain,
Your sincere friend
M K Gandhi.

जब दूसरे विश्वयुद्ध के बादल आसमान में मँडराने लगे। हिटलर एक तरह से नरभक्षी पिशाच बनकर सामने आया। किसी की हिम्मत नहीं होती थी उसे समझाने की। ऐसे वक्त में गाँधी आगे आये। उन्होंने वर्धा में विचार किया और हिटलर को मानवता की दुहाई देकर युद्ध टालने की अपील एक पत्र के माध्यम से करने का निर्णय लिया। गाँधी को हिटलर के रूप में कोई पिशाच नहीं दिखाई दिया। उस सौम्यमूर्ति के दिल में तो सब इंसान ही बसे हैं। वे हिटलर को प्रिय मित्र सम्बोधन प्रदान करते हैं तथा स्वयं को उसका शुभचिन्तक सद्भावी मित्र बताते हैं।

वर्धा से 23 जुलाई 1939, यानी अब से लगभग 75 वर्ष पूर्व लिखा गांधी का हिटलर के नाम पर पत्र किसी रोमांचक दस्तावेज से कम नहीं है। इस दो पैराग्राफ के पत्र में गांधी हिटलर को मानवता की दुहाई देते हुए युद्ध को रोकने का निवेदन करते हैं। उनकी विनम्रता और सहनशीलता की शीर्ष मिसाल पत्र की अन्तिम लाइनें हैं, (प्रियमित्र) यदि मेरा यह लिखना ठीक न लगे तो माफ करें। (Any way I anticipate your forgiveness, If I have erred in writing to you)

महात्मा गांधी द्वारा तानाशाह हिटलर को अपना मित्र बनाकर तथा स्वयं उसके मित्र बनकर लिखा यह अद्भुत पत्र हू-ब-हू उनके जन्म दिवस 2 अक्टूबर 2013 के अवसर पर यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। जो उनके उज्ज्वल व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रमाण है। (लेखक एम.ए. (इतिहास) में स्वर्ण पदक विजेता हैं)

-वैधिक प्रकोष्ठ अधिकारी, निशिम (प्रा.लि.) बीकानेर मो. 9214633947

'मेरे पास एक सपना है' की 50 वीं वर्ष गाँठ।' उक्त ऐतिहासिक भाषण 28 अगस्त 1963 को वाशिंगटन के 'लिंकन मेमोरियल' पर एक विशाल आम सभा में दिया गया था। अभी-अभी विगत 28 अगस्त 2013 को, यानी ठीक पचास साल बाद, उसी संदर्भ को याद करते हुए अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी सार्वजनिक तौर पर स्वीकार किया- 'महात्मा गाँधी से प्रेरित 'वाशिंगटन मार्च' हमारे देश (अमेरिका) में स्वतंत्रता के लिए सबसे बड़ा प्रदर्शन था।'

महात्मा गाँधी स्वयं जानते थे कि प्रारंभिक शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर-ज्ञान से ही लिया जाता रहा है। ऐसी शिक्षा 3R's (Reading, Writing and Arithmetic) तक ही सीमित थी। जबकि उच्च शिक्षा के नाम पर भारतीयता और भारतीय जनमानस की आकांक्षाओं का हनन होता था। वे बड़ोदा जैसे नगरीय क्षेत्र एवं राज्य की शिक्षा व्यवस्था को भी 'ब्रितानी शिक्षा पद्धति की दासतापूर्ण नकल' (an almost slavish imitation of British type) मानते थे। 'यंग इंडिया' (21.1.1926) में उन्होंने लिखा था-'Higher education makes us forigners in our country and the primary education being practically of no use in after-life becomes almost useless. There is neither originality nor naturalness about it.'

'नई तालीम' में भाषा-चिंतन का दायरा बड़ा व्यापक है। बापू साफ शब्दों में कहते थे कि मैं अपने आवास को सभी ओर से दीवारों से घिरा हुआ और खिड़कियों को बिल्कुल बंद नहीं देखना चाहता। वे तो हमेशा दुनिया की विभिन्न सांस्कृतिक हवाओं के स्वागत के लिए भी तत्पर रहे। मगर जहाँ भारतीय और विदेशी भाषाओं का मामला उठता तो वहाँ भी उनकी धारणा सुस्पष्ट रही। एक बार टैगोर के सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने लिखा था कि मैं अपने भाइयों-बहनों पर थोथे अहंकार और दिखावे के लिए अंग्रेजी सीखने के दबाव को नकारता हूँ...मगर मैं किसी भी भारतवासी से यह अपेक्षा नहीं कर सकता कि वह अपनी ही मातृभाषा को भुलादे, नजर अंदाज कर जाए या उस पर मन ही मन शर्मिन्दगी महसूस करे।

अफसोस की बात तो यह है कि आज की तथाकथित उच्च शिक्षा और भ्रमित युवा पीढ़ी ने विराट व्यक्तित्व के धनी उन 'राष्ट्रपिता' को हाशिए पर जा खड़ा किया है जिनको संयुक्त राष्ट्र संघ ने वैश्विक सम्मान दिया है, जो दुनियां की सर्वाधिक जानी-मानी पत्रिका 'फोर्ब्स' की सदी की लोकप्रिय हस्तियों की सूची में सर्वोच्च सोपान पर अवस्थित रहे हैं। सजग पाठकों और बुद्धिजीवियों को अवश्य याद होगा कि लगभग दस वर्ष पूर्व 'भारतीय गाँधी अध्ययन परिषद' के तत्वावधान में एक राष्ट्रीय अभियान चलाया गया था जिसमें युवा पीढ़ी को गाँधी से जुड़ने और हिंसा मुक्त समाज गढ़ने के लिए प्रेरित करने का उपक्रम किया गया था। अब पुनः 'गाँधी की फिर एक खोज' नाम से 121 दिन के राष्ट्रीय अभियान की घोषणा की गई है। 2 अक्टूबर 2013 से 30 जनवरी 2014 तक आयोजित इस प्रसंग में अनेक सांस्कृतिक, शैक्षणिक व रचनात्मक कार्यक्रम संपन्न होंगे जिसमें मुख्यतः युवाओं की ही भागीदारी सुनिश्चित रहेगी।

वस्तुतः मानवीय मूल्यों के पक्षधर राष्ट्रपिता बापू छात्र-छात्राओं में अंतर्निहित शक्तियों के विकास को ही वास्तविक शिक्षा मानते थे और उसमें भी वे मानवता एवं पारस्परिक सौहार्द्र का सपना देखते थे। 'हरिजन' (30.3.1934) में उन्होंने लिखा भी-'What better book can there be than the book of humanity...Mine is no narrow creed (पंथ, धर्म). It is one of realizing the essential brotherhood of man.'

उनके चिंतन के अनुसार 3H (Head, Heart and Hand) का सूत्र ही समग्र शिक्षा का आधार हो सकता है। जब तक देह के साथ-साथ मस्तिष्क और आत्मा को समुचित प्रशिक्षण के अवसर नहीं मिलेंगे, तब तक व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की संभावना नहीं बन सकती। 'आत्मकथा' में भी इस बात का स्पष्ट संकेत है कि 'टॉल्सटॉय फार्म' में कुछ खास प्रयोगों से गुजरने के बाद ही वे चरित्र निर्माण को शिक्षा का खास उद्देश्य मानने लगे थे। उन्होंने कहा भी-'मैंने चरित्र को उनकी शिक्षा की बुनियाद माना था। यदि बुनियाद पक्की हो तो अवसर मिलने पर दूसरी बातें बालक मदद लेकर या अपनी ताकत से खुद भी जान-समझ सकते हैं।' इस दृष्टि से भाषिक व सृजनात्मक पक्ष को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। बापू प्राथमिक शिक्षा के स्तर तक शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा के हिमायती रहे। उन्होंने एक बार यह घोषणा भी कर दी थी कि 'कुछ कमियों के बावजूद मैं अपनी मातृभाषा से उसी तरह चिपटा रहूँगा जैसे कि अपनी माँ की छाती से, क्योंकि वही मुझे जीवन रक्षक दूध का पान करा सकती है।'

हम जब भी बालकेन्द्रित शिक्षा की चर्चा करते हैं तभी हमें 'नई तालीम' की शरण में चले जाने की प्रेरणा मिलती है। यहाँ पुस्तकों की भूमिका उतनी महत्वपूर्ण नहीं होती, जितनी सक्रिय शिक्षकों और शिक्षण-अधिगम सामग्री की। गाँधी के ही शब्दों में-'अब मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि पाठ्यपुस्तकों की जरूरत केवल शिक्षकों को हो सकती है, शिक्षार्थियों को नहीं और प्रत्येक शिक्षक यदि वास्तव में बच्चों के साथ न्याय करना चाहता है तो उसे उपलब्ध सामग्री के अनुसार ही दैनिक पाठयोजना तैयार करनी होगी।' (हरिजन, 1.12.1933) 'आत्मकथा' में तो उन्होंने यहाँ तक कहा है-'मेरा खयाल है कि शिक्षक ही विद्यार्थियों की सच्ची पाठ्यपुस्तक है।'

उनके लिए धर्म का अभिप्राय था सत्य और अहिंसा, बल्कि इससे भी ऊपर केवल सत्य, क्योंकि अहिंसा सत्य का ही अभिन्न अंग है। उनकी व्याख्या में सत्य-अहिंसा जैसे जीवन मूल्य केवल शिक्षार्थियों के लिए ही नहीं, बल्कि शिक्षकों के लिए भी आध्यात्मिक-नैतिक शिक्षा की दृष्टि से अत्यावश्यक हैं। बहुपठित कृति 'नई तालीम' के खंड 'धार्मिक शिक्षा का प्रश्न' के अंतर्गत वे आग्रह करते हैं-'There fore anything that promotes the practice of these virtues is a means for imparting religious education and the best way to do this, in my opinion, is for the Teachers rigorously to practise these virtues in their own person.' (Y.I.)

यों भी सामाजिक-राजनीतिक सरोकारों और मूल्यों के अधोपतन के दौर में ये विचार बड़े ही सटीक और प्रासंगिक प्रतीत होते हैं, किन्तु श्रम के मूल्य को अनुभव किए बिना अन्य समस्त मूल्य अधूरे-से प्रतीत होते हैं। 'अनपढ़ मजदूर के होते हुए अपने हाथों का इस्तेमाल क्यों करें?' इसी शंका के समाधान हेतु बापू लिखते हैं-'मैं सोचता हूँ, हमें श्रम की प्रतिष्ठा को स्वीकार करना ही चाहिए। यदि कोई हज्जाम या मोची किसी

महाविद्यालय में अध्यक्षरत है, इसका यह तात्पर्य नहीं कि उसे अपने व्यवसाय का त्याग कर देना चाहिए। मेरी दृष्टि में एक इन्जाम का व्यवसाय भी उतना ही सम्मानजनक है जितना किसी दवा-विक्रेता का।' इसी मत के समानांतर रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक पुस्तक 'शिक्षा' में प्रस्तुत यह विचार भी यहाँ दृष्टव्य है-'जो शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती है कि 'लिखना-पढ़ना सीखे जोई, गाड़ी-घोड़ा पावे सोई,' वह शिक्षा है ही नहीं। विद्या का यह अपमान मनुष्य जाति के लिए कदाचित शोभायमान नहीं है।'

महात्मा जी के लिए राष्ट्रभाषा का प्रश्न भी उतना ही जरूरी रहा, जितना देश की स्वाधीनता का। वैसे राष्ट्रभाषा की कसौटी क्या हो सकती है? इस संबंध में उनका विचार था-जो भाषा कार्यालयी व्यवहार के लिए सरल हो, जो धार्मिक, व्यापारिक एवं राजनीतिक कार्यकलापों में उपयुक्त हो, देश के अधिकांश नागरिक जिसे सहजता से बोलते समझते हों, जिसे सभी के लिए सीखना आसान हो और जो दीर्घकालिक स्थितियों में खरी उतर सके, वही भाषा राष्ट्रभाषा के पद पर मान्य हो सकती है। उन्होंने एक महत्वपूर्ण भाषण (20.10.1917) में स्पष्ट कर दिया था-'मेरे मतानुसार यह सोचना ही अमानवीय होगा कि अंग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है।... तो फिर हमें यह स्वीकार करना होगा कि हिन्दी उक्त सभी शर्तों पर खरी उतरती है।.... इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है।' उन्होंने 'हिन्दस्वराज' में भी पहले ही लिख दिया था कि हर एक पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानी को अपनी भाषा का ज्ञान होना चाहिए, मगर सारे देश के लिए जो भाषा चाहिए, वह तो हिन्दी ही हो सकती है।

यह सदी 'विज्ञी' यानी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की सदी है। दुनिया कहाँ से कहाँ आ पहुंची है। ऐसे में शिक्षा का संपूर्ण हुलिया ही बदल गया है। मगर साठ वर्ष पूर्व रचित-संपादित और 90-95 पृष्ठों में सिमटी कृति 'Towards New Education' (नई तालीम) आज भी बहुत-कुछ सोचने को मजबूर करती है। जहाँ शिक्षा शिक्षार्थियों को धन कमाने की मशीनों में परिवर्तित करती जा रही हो और जहाँ संवेदनाएं बरबस ही दम तोड़ती नजर आ रही हो, वहाँ यह अद्भुत एवं अतुल्य पुस्तक निस्संदेह शिक्षा की देहरी पर अब भी रोशनी का एक चमत्कारी माध्यम साबित हो सकती है।

-1 ब 8 'अंजलि', बारांमाड़ी, कोटा
मो. 09461182571

कैसे हैं गांधी जी

□ जवाहर लाल नेहरू

कुछ महीने हुए। श्री राधाकृष्णन् ने मुझे लिखा था कि वह गांधी जयन्ती के लिए एक किताब तैयार कर रहे हैं, जिसमें दुनिया के बहुत सारे बड़े आदमी गांधीजी के बारे में लिखेंगे। मुझसे भी उन्होंने इस किताब के लिए एक लेख लिखने को कहा था। मैं कुछ राजी हुआ लेकिन फिर भी एक झिझक थी। गांधीजी पर कुछ भी लिखना मेरे लिए आसान बात नहीं थी। फिर मैं ऐसी परेशानियों में फंसा कि लिखना और भी कठिन हो गया और आखिर में मैंने कोई ऐसा मजमून नहीं लिखा।

मैं अक्सर कुछ न कुछ लिखा करता हूं और लिखने में दिलचस्पी भी है। फिर यह झिझक कैसी? कभी-कभी गांधी जी पर भी लिखा है। लेकिन जितना मैंने सोचा वह मजमून मेरे काबू के बाहर निकला। यह आसान था कि मैं कुछ ऊपरी बातों को, जो दुनिया जानती है, दुहराई। लेकिन उससे फायदा क्या? अक्सर बातें उनकी मेरे समझ में नहीं आई, कुछ बातों में उनसे मतभेद भी हुआ। एक जमाने में उनका साथ रहा, उनकी निगरानी में काम किया। उनका छापा मेरे ऊपर पड़ा, मेरे ख्याल बदले, रहने का ढंग बदला। जिन्दगी ने एक करवट ली, दिल बड़ा, कद कुछ ऊंचा हुआ, आँखों में रोशनी आई, नए रास्ते दिखे और उन रास्तों पर लाखों और करोड़ों के साथ हम कदम होकर चला। क्या मैं ऐसे शख्स के के बारे में लिखूं जो कि हिन्दुस्तान का और मेरा एक अंग हो गया जिसने एक जमानेको अपना बनाया।

हम जो इस जमाने में बड़े और उसके असर में पले, हम कैसे उसका अंदाजा करें? हमारे रंग और रेशे में उसकी मोहर पड़ी और हम सब उसके टुकड़े हैं।

जहां-जहां मैं हिन्दुस्तान के बाहर गया, चाहे यूरोप का कोई देश हो या चीन या कोई और मुल्क, पहला सवाल मुझसे यही हुआ, "गांधी कैसे हैं ? अब क्या करते हैं ?" हर जगह गांधी का नाम पहुंचा था, गांधी की शोहरत। गैरों के लिए गांधी हिन्दुस्तान था और हिन्दुस्तान गांधी। हमारे देश की इज्जत बढ़ी, हैसियत बढ़ी। दुनिया ने तसलीम किया कि एक अजीब ऊंचे दर्जे का आदमी हिन्दुस्तान में पैदा हुआ, फिर से अंधेरे में रोशनी आई। जो सवाल लाखों के दिल में थे और उनको परेशान करते थे, उनके जवाबों की कुछ झलक नजर आई। आज उस जवाब पर अमल न हो, तो कल होगा, परसों होगा। उस जवाब में और भी जवाब मिलेंगे और भी अंधेरे में रोशनी पड़ेगी लेकिन वह बुनियाद पक्की है और उसी पर इमारत खड़ी होगी।

आजकल की दुनिया में लड़ाई का तूफान फैल रहा है और हर एक के लिए मुसीबत का वक्त है। हम क्या करें यह हर हिन्दुस्तानी के सामने सवाल है। वक्त इसका जवाब देगा। लेकिन जो भी कुछ हम करें, उसकी बुनियाद उन उसूलों पर हो जिनको हमने इस जमाने में सीखे। बड़े कामों में हम पड़े, पहाड़ों की ऊंची चोटियों की तरफ हमने निगाह डाली और लम्बे कदम उठाकर हम बढ़े। लेकिन सफर दूर का है। इसके लिए हमको भी ऊंचा होना है और छोटी बातों में पड़कर अपने देश को छोटा नहीं करना है।

-साभार

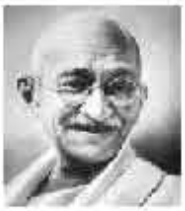

गाँधी जयंती

महात्मा गांधी-अनुभूतियां एवं जीवन दर्शन

❑ पी.डी. सिंह

महात्मा गाँधी कहते थे, 'मानवीय गतिविधि के अतिरिक्त मैं किसी धर्म को नहीं जानता हूँ और वही अन्य समस्त गतिविधियों को नैतिक आधार प्रदान करता है।' वे मानव जीवन की पूर्णता में विश्वास करते थे साथ ही समाज की समझदारी एवं मानसिक संतुलन में। उनके लिये मानव जीवन एक कृत्रिम समग्रता है जिसे मनमाने ढंग से विभक्त नहीं किया जा सकता। हर जीवन की नियति है, अच्छी प्रकार से और प्रतिष्ठा से जिया जाय।

गांधी जी ने अपना जीवन अपने चिन्तन संपूरित संजोये सिद्धान्तों एवं मूल्यों के साथ जिया। उनके लिये जीवन एक ईश्वर प्रदत्त उपहार था अतः यह अपेक्षित था कि यह एकीकृत एवं सार्थक हो। वे ऐसे विद्वान या दार्शनिक नहीं थे जो अपने विचारों को कोई दर्शनशास्त्र का सिद्धान्त बतायें। उन्होंने विभिन्न विषयों पर बहुत कुछ लिखा है लेकिन यह सब लोगों को कुछ करने की दिशा में प्रेरित एवं निर्देशित करना ही था।

गांधी जी का चिन्तन व सोच किसी विशिष्ट लीक से हटकर एवं क्रांतिकारी था। यह रचनात्मक प्रक्रिया सामयिक चुनौतियों से जूझने का उत्पाद था। उनकी सोच सहज थी और उनकी कार्यप्रणाली सम्बद्ध थी। राष्ट्र के समक्ष खादी एवं कुटीर उद्योग अपनाने की बात कही तो किसी व्यवस्थित अर्थशास्त्री के रूप में नहीं बस सहज ढंग से इसकी उपयोगिता एवं प्रभाव स्पष्ट करके अपनाने की अपील की। उन्होंने सीधी और सरल घरेलू उपयोगिता को स्पष्ट किया। उन्होंने व्यापक दरिद्रता की चर्चा की, और लोगों के विवशतापूर्ण आलस्य को महसूस किया और सदैव यही उद्घोष किया कि भारत को जानना, समझना, जगाना है तो गांवों पर ध्यान दो क्योंकि वास्तविक भारत गांवों में ही है।

उन्होंने कभी-भी हिन्दू एवं मुस्लिम तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष अथवा विवाद को महत्व नहीं दिया। यद्यपि अपने आपको हिन्दू कहना उन्हें अच्छा लगता था लेकिन हिन्दू धर्म में व्याप्त निर्दयतापूर्ण छूआछूत का घोर विरोध किया और इसको दूर करने का व्रत लिया। वे जाति प्रथा में भी आस्था नहीं रखते थे। वे हिन्दू धर्म में प्रचलित कर्मकांड एवं रीति रिवाजों को नहीं स्वीकारते थे। उनका हिन्दुत्व गीता और उपनिषदों की शिक्षाओं पर आधारित था।

वे कहा करते थे, मैं मानव मात्र और विशेषतः दरिद्रनारायण की सेवा में ईश्वर के दर्शन कर लेता हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि ईश्वर न स्वर्ग में है न मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर में वह तो हर व्यक्ति में अन्तर्व्याप्त है। ईश्वर को प्राप्त करने का सीधा और सही मार्ग है कि हम ईश्वर की सभी संतानों एवं समग्र प्रकृति से प्रेम करें एवं सेवा करें।

गाँधी जी की दृष्टि में धर्म एवं नैतिकता अन्योनाश्रित एवं अंतर्बंदल हैं और नैतिकता के आधारभूत सिद्धान्त हैं, सत्य एवं अहिंसा जो उनकी प्रार्थना 'वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाणे रे.....' में अन्तर्निहित है। वे यह भी कहा करते थे कि 'धर्म मानव की रचना है अतः इसमें कमियां भी हैं और वे स्वयं मनुष्यों के कारण ही हैं।' गहरे अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर मेरी मान्यता है कि सभी धर्म अच्छे हैं और सच्चे हैं तथा सभी में कमियां भी हैं। मैं बाइबल, कुरान और जेंद अवेस्ता से भी उतना ही प्रभावित हूं जितना कि वेदों से व रामायण इत्यादि से।' उनकी मान्यता थी कि धर्म की साधना किसी गुफा या पहाड़ की चोटी पर नहीं होती है। वे ईश्वर में आस्था रखते थे लेकिन ईश्वर का स्वरूप नैतिक मर्यादाओं एवं सेवा में ही मानते थे। ईश्वर भक्ति के रूप में वे प्रार्थना में दृढ़ आस्था रखते थे। उनकी प्रार्थना सभाओं में कभी भी कोई देश भक्ति गीत नहीं गाया गया। वे कहते थे, 'देश से प्रेम अच्छा है और वांछनीय भी है पर इसे ईश्वर भक्ति नहीं कह सकते।'

गांधी जी की आस्था आत्मसंयम में थी। वे अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपने आत्मसंयम एवं संयमित जीवन को देते थे। वे जो कुछ कहते वहीं करते थे और जो करते थे वहीं कहते थे, उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होता था। जो कहते उसे पूरा करते थे यही उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति का आधार था। वे कहा करते थे, एक सीमा के पश्चात् मनुष्य की इच्छाएं उनके दुख का कारण बन जाती हैं अतः इच्छा व आवश्यकताओं को सीमित ही रखना चाहिए।

गांधी जी द्वारा प्रेरित-निर्देशित आंदोलन सभी सहनशीलतायुक्त विरोध थे जैसे कि सविनय अवज्ञा, असहयोग आंदोलन इत्यादि। अपनी सभी ब्रिटिशराज विरोधी गतिविधियों को उन्होंने एक विशिष्ट शैली और नाम दिया, 'सत्याग्रह'।

'सत्याग्रह' मानवीय बंधुत्व में विश्वास करता है यह 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' की अवधारणा को नकारता है। सत्याग्रही विरोध तो प्रेम, पारस्परिक सहयोग एवं सहायता में विश्वास करता है। सत्याग्रह तो सत्य के प्रति दृढ़ निष्ठा का प्रतीक है और अहिंसा सत्य का स्वाभाविक उत्पाद है। 'सत्य और अहिंसा उतने ही पुराने हैं जितने पहाड़, 'गांधी जी कहा करते थे। बचपन से ही उनकी सत्य के प्रति निष्ठा थी। वे हिंसा को असत्य का उत्पाद मानते थे। सत्य और अहिंसा के साथ सत्याग्रह के लिये उन्होंने एक और सिद्धान्त का समावेशन किया, वह था 'साधन की पवित्रता' अर्थात् लक्ष्य प्राप्ति के साधन का पूर्णतया पवित्र होना आवश्यक है।

गांधी जी कहते थे कि गरीबी व्यापक नहीं होनी चाहिए। प्रचलित सामाजिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन करके व्यापक निर्धनता को दूर किया जा सकता है। दौलत समाज से ही आती है समाज में ही बराबर-बराबर बँट जानी चाहिए। किसी भी कारखाने या कार्यालय के कर्मचारी व मजदूर को जीवन के लिये आवश्यक भोजन, वस्त्र, घर, शिक्षा चिकित्सा इत्यादि सुविधाएं मिलनी ही चाहिए।

उनका कथन एवं मान्यता थी कि 'प्रकृति और धरती माता हमारी आवश्यकताओं के लिये पर्याप्त प्रदान करती है लेकिन लालच की पूर्ति नहीं कर सकती।' जब तक हम आवश्यकता से अधिक का उपयोग करेंगे विषमता नहीं या

सकती। उन्होंने चरखे को कमाई का व्यवसाय न बताकर केवल एक सहायक घरेलू उद्योग बताया था।

गाँधी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे और कहते थे कि यह केवल आजादी की लड़ाई के लिये ही नहीं अपितु शान्ति काल में और सदैव सह-अस्तित्व के रूप में भी उतनी ही आवश्यक है राष्ट्र के सम्यक् निर्माण, विकास एवं सहजीवन हेतु।

अहिंसा के समर्पित समर्थक के रूप में वे किसी भी प्रकार की सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक असमानता के विरोधी थे क्योंकि इससे शोषण पनपता है। डॉक्टर, शिक्षक, वकील, व्यापारी या मिनिस्टर सभी के कार्य का समान महत्त्व है। वे स्त्री और पुरुष में भी भेद नहीं करते थे। वे बाल विवाह के विरोधी एवं विधवा विवाह के समर्थक थे। पर्दा प्रथा एवं दिखावे के खर्च के विरोधी थे। उन्होंने अपने सत्याग्रह आंदोलन में महिलाओं को भी सम्मिलित किया था। वे स्त्रियों के समान अधिकार एवं सम्मान के पक्षधर थे। वे किसी भी प्रकार के व्यसन के घोर विरोधी थे।

उनकी 'नई तालीम' में सीखने के साथ समाजोपयोगी उत्पादन समाहित था। अपने रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा वे हाथ, मस्तिष्क एवं हृदय के उन्नयन में ही एक स्वतंत्र देश के नागरिकों की अपेक्षा रखते थे। गांधी जी वस्तुतः आधुनिक थे और स्वच्छता, स्वास्थ्यप्रद भोजन, शारीरिक श्रम का सम्मान, महिला शिक्षा आर्थिक समानता सबके अधिकारों की सुरक्षा एवं जनतांत्रिक भावना, अछूतों से निकट संपर्क दरिद्रनारायण की सेवा तथा वासना मुक्त होना यही उनकी आधुनिकता थी।

कालजयी युगपुरुष राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने न केवल स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये अहिंसक संघर्ष हेतु प्रेरित किया अपितु राष्ट्र की जनता को सार्थक, प्रभावी, शान्त, सत्यनिष्ठ एवं अहिंसावादी जीवन जीने की राह दिखाई। उस महामना मनीषी, संत, देशभक्त एवं समर्पित समाजसेवी को नमन, वन्दन, अभिनन्दन!

-निदेशक
टैगोर ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
शास्त्री नगर, जयपुर-302016
मो. 9829014513

शिक्षा स्वराज्य की कुंजी है। -महात्मा गांधी

शास्त्री जयंती

ऐसे थे लाल बहादुर शास्त्री

□ डॉ. श्याम मनोहर व्यास

गृह विहीन गृह मंत्री

भारत के पूर्व गृह मंत्री होते हुए भी लाल बहादुर शास्त्री का अपना कोई घर दिल्ली या इलाहाबाद में नहीं था। एक बार पूछने पर उन्होंने कहा-'मैं भारत का गृह विहीन गृह मंत्री हूँ। मेरी इतनी आय नहीं है कि मैं घर खर्च चलाने के बाद अपने लिए मकान बनवा सकूँ।'

मैं क्यों झुकूँ

पाकिस्तान के भूतपूर्व राष्ट्रपति अयूब खाँ लम्बे कद के थे जबकि शास्त्री जी छोटे कद के।

पत्रकार सम्मेलन में किसी ने शास्त्री जी से कहा-'शास्त्रीजी, अयूब से आप कैसे बात करेंगे? वे तो कद में लम्बे हैं।'

शास्त्रीजी ने मुस्कराकर कहा-'भाई, मैं कद में छोटा हुआ तो क्या? झुकना तो पाकिस्तान के जनरल को ही पड़ेगा। मैं तो सिर ऊँचा किये रहूँगा।'

महंगी साड़ी क्यों?

एक बार शास्त्रीजी पत्नी की साड़ियाँ खरीदने बाजार गए। पत्नी ललिता देवी भी साथ में थी। दुकानदार शास्त्री जी का पद देख कर अच्छी व महंगी साड़ियाँ दिखाने लगा। शास्त्रीजी ने कहा-'भैया, इन्हें सस्ती साड़ियाँ दिखाओ। ये गृह मंत्री की पत्नी नहीं लाल बहादुर शास्त्री की पत्नी है। एक मध्यमवर्गीय परिवार के अनुकूल ही साड़ियाँ दिखाओ।'

फसल का नुकसान क्यों?

एक बार शास्त्रीजी अपने चुनाव प्रचार के दौरे पर थे। उनकी जीप खेत के पास से गुजर रही थी। खेत में हरे चने की फसल उग रही थी। शास्त्रीजी को हरे चने खाने की इच्छा हुई। उन्होंने खेत के मालिक से कहा-'भैया, चने की कुछ फलियाँ खिला सकोगे?' किसान अपने प्रिय नेता की बात सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। ढेर सारे चने के पौधे वह तोड़ने लगा। यह देख कर शास्त्रीजी बोले-'भाई, यह क्या कर रहे हो? हमें तो केवल थोड़ी फलियाँ चाहिए। पूरा पौधा मत तोड़ो। इससे तुम्हारा, हमारा और देश का नुकसान होगा।' कितना ध्यान देते थे शास्त्रीजी अपव्यय पर। उन्होंने देशवासियों को संकट की घड़ी में अन्न बचाने के लिए सप्ताह में एक दिन उपवास करने की भी सलाह दी थी जिसे देशवासियों ने सहर्ष स्वीकार किया। स्वयं भी उन्होंने उस वचन का पालन किया।

काश, आज हम लालबहादुर शास्त्री जी के आदर्श गुणों को अपनाएं और उनके पदचिह्नों पर चलें। उनका कथन था-'जय जवान-जय किसान।'

-15-पंचवटी, उदयपुर (राज.)

शिक्षा का अधिकार

व्यापक एवं सतत मूल्यांकन कार्यक्रम के बढ़ते कदम

❒ उषा बापना

शिक्षा कोई वस्तु नहीं है, जो शिक्षक बच्चों को प्रदान करता है, वरन् वह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो सहजता से एवं संवाद के माध्यम से विकसित होती है। शिक्षा केवल शब्दों को सुनने एवं किताबों के पढ़ने से नहीं मिलती। बच्चा अपने चारों ओर के वातावरण एवं अपने अनुभव से इसे स्वत: ही अर्जित करता है। शिक्षक का कार्य बच्चे के लिये ऐसा वातावरण तैयार करना है जिसमें उसे स्वाभाविक क्रियाओं को करने की प्रेरणा मिलती रहे।

अगर बच्चे को निष्क्रिय रहने के लिये कक्षा की परिस्थितियाँ मजबूर नहीं करें तो शिक्षक एवं बच्चों के बीच के आदान-प्रदान से शिक्षक एवं बच्चा दोनों सीखते हैं। बचपन विकास एवं निरन्तर बदलाव की अवस्था है जिसमें शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं का पूर्ण विकास शामिल होता है। समाज से मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा विद्यार्थी को अपना ज्ञान स्वयं सृजित करने की स्वाभाविक क्षमता को विकसित करती है। अत: शिक्षक को ऐसे अवसर बच्चों को देने चाहिए जिससे वह नई चीजों का प्रयोग करें, उन्हें जोडे. व तोड़े भीं, गलतियाँ करें और इन गलतियों को वे स्वयं सुधारें। इन सब गतिविधियों से ही वे सीखते हैं, ज्ञान का सृजन करते हैं।

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को यह अधिकार है कि वे नि:शुल्क एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकें। इस कानून की धारा 29 में स्पष्ट रूप से अंकित है कि कक्षा एक से आठ तक की कक्षाओं के लिये पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसमें बच्चों के सर्वांगीण विकास के पहलुओं को ध्यान में रखा जाये। स्कूल और कक्षाओं में पढ़ने-पढ़ाने के तरीकों से बच्चों की अन्तर्निहित क्षमताओं को उबारा जाये एवं उनमें ज्ञान सृजन की क्षमता स्वयं में विकसित हो सके। बच्चे ने जो सीखा है उसका मूल्यांकन उनके पढ़ने के दौरान लगातार होता रहे और उन्हें परीक्षा का भय नहीं लगे। इस प्रक्रिया से बच्चों के सीखने के स्तर का तो निरन्तर आकलन होगा ही, साथ ही उससे शिक्षक को अपनी शिक्षण योजना में बदलाव करने का आधार एवं अवसर भी मिल सकेगा।

इस कानून में पहली बार शिक्षक की भूमिका को भी धारा 24 में स्पष्ट किया गया है। उसमें बताया गया है कि शिक्षक का उत्तरदायित्व है कि वह निर्धारित समय में पाठ्यक्रम को पूरा करे तथा प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर और गति को नियमित जाँच कर दर्ज करता रहे। उसके आधार पर अपनी शिक्षण योजना में बदलाव करते हुए बच्चों को अधिक से अधिक सीखने के अवसर उपलब्ध कराये। बच्चों के स्तर को देखते हुए, वह आवश्यक समझे तो बच्चों के लिये अतिरिक्त कक्षाएं भी आयोजित करे।

कानून के उपर्युक्त प्रावधानों के आधार पर शिक्षक, विद्यालय एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण बदलाव की आवश्यकता है तथा इस सब के पीछे का उद्देश्य यही है कि बच्चों के सीखने के स्तर में सुधार हो जिससे शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके। अनेक शोध एवं अध्ययनों ने यह स्थापित किया है कि राज्य में प्रारम्भिक शिक्षा का स्तर सन्तोषप्रद नहीं है। कक्षा पाँच का बच्चा कक्षा 3 के स्तर को भी प्राप्त नहीं कर सका है। यह एक चिन्तन का विषय है जब तक शिक्षक प्रत्येक बच्चे के स्तर को जानकर उससे आगे काम नहीं करेगा तथा सीखने का निरन्तर आकलन एवं मूल्यांकन करते हुए अपने शैक्षिक नियोजन में बदलाव करते हुए सिखने सीखाने के भिन्न-भिन्न तरीके नहीं अपनायेगा तब तक शिक्षा के स्तर में कोई सुधार की सम्भावना दिखाई नहीं देती। इसलिये यह निश्चित रूप से स्थापित किया जाना चाहिये कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया वास्तव में व्यापक रूप में गुणवत्ता सुधार की प्रक्रिया ही है। सीसीई का तात्पर्य विद्यार्थी के स्कूल आधारित मूल्यांकन व्यवस्था से है जो विद्यार्थी के सीखने के सभी पक्षों पर ध्यान देती है। यह पूरी व्यवस्था अवसर भी देती है कि शिक्षक-शिक्षक के बीच, शिक्षक-बच्चों के बीच एवं शिक्षक-समुदाय या अभिभावक के बीच विद्यार्थियों को लेकर निरन्तर संवाद स्थापित हो।

अच्छे शिक्षक आज भी अपनी शिक्षण प्रक्रिया में बच्चों के द्वारा की जाने वाली सभी गतिविधियों का बारीकी से अवलोकन करते हैं। अवलोकन एवं बच्चों के सीखने के सभी पक्षों पर ध्यान देते हुए प्रत्येक बच्चे की रुचियों क्षमताओं को भी जान जाते हैं तथा विद्यालय में विषयों के अध्यापन के साथ-साथ संगीत, चित्रकला, अभिनय, नृत्य हस्तकार्य, शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद की गतिविधियों का आयोजन भी पढ़ाते समय अथवा अन्य गतिविधियों के साथ करते हैं। सभी विद्यार्थियों को इनमें भाग लेने के लिये प्रेरित भी करते हैं। केवल वर्तमान में वे इन सब प्रक्रियाओं का दस्तावेजीकरण व्यवस्थित ढ्ंग से नहीं करते हैं यद्यपि इसकी जानकारी उन्हें निश्चित रूप से रहती है।

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के लागू होने के बाद से ही शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं, शिक्षाविदों एवं शिक्षकों के बीच इन कानून के प्रावधानों के आधार पर स्कूल में चल रही शिक्षण व्यवस्था में अपेक्षित परिवर्तनों पर चर्चा होती रही है। इस कानून के प्रावधानों के सन्दर्भो में इस व्यवस्था के मूल सरोकारों को इस प्रकार समझा जा सकता है :-

1. कक्षा में शिक्षण के तरीके बाल-केन्द्रित होने चाहिये।
2. बच्चों मे व्याप्त परीक्षा के भय व तनाव को कम करते हुए बच्चों में मूल्यांकन की ऐसी प्रणाली तय करनी होगी जो बच्चों के सीखने की निरन्तर जानकारी दें।
3. बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये कला, संगीत, व्यक्तित्व विकास, खेल व

स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियाँ पाठयक्रम में शामिल करते हुए इनमें भी बच्चों की रुचि एवं दक्षताओं का अंकन किया जाये।

4. बच्चों की क्षमताओं को बढ़ाने वाली गतिविधियों का आयोजन पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के अनुसार होना अपेक्षित है।

अधिनियम की धारा 16 के आधार पर प्रारम्भिक शिक्षा के स्तर के बालक को किसी भी कारण से अनुतीर्ण घोषित नहीं किया जायेगा तथा न ही विद्यालय से निष्कासित किया जायेगा। इसका आशय स्पष्ट है कि प्रत्येक बच्चा महत्वपूर्ण है, और उसके सीखने का अपना स्तर है इसलिए किसी के होशियार या कमजोर होने का प्रश्न ही नहीं है अत: वह फेल भी नहीं किया जा सकता। इसका सीधा अर्थ है कि यदि बच्चा नियमित विद्यालय आता है तो वह सीखता भी है अत: उसे फेल कर स्कूल से नहीं निकाला जा सकता। प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली में दो टैस्ट, दो परीक्षाएं और आन्तरिक मूल्यांकन निर्धारित हैं इस प्रक्रिया से बच्चे की मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति का आकलन किया जाता है इससे केवल बच्चे क्या नहीं जानते हैं कि जानकारी होती है तथा पारस्परिक तुलना प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती है क्योंकि इसमें प्राप्तांकों पर अत्यधिक बल दिया जाता है। इसमें बच्चों की अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास एवं मूल्यांकन की सामान्यत: उपेक्षा की जाती है।

राज्य में सतत एवं समग्र मूल्यांकन लागू करने के चरण

प्रथम चरण 2010-11

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुसार मूल्यांकन एवं कक्षागत प्रक्रियाओं में सुधार कर शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु सी.सी.ई. लागू करने के लिये मई 2010 में सबसे पहले जयपुर शहर के 20 एवं अलवर जिले के 40 ग्रामीण इस प्रकार 60 प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पायलेट प्रोजेक्ट प्रारम्भ किया गया। प्रारम्भ में कक्षा 1-4 में सीसीई के परिप्रेक्ष्य में NCERT की पुस्तकों के साथ कार्य प्रारम्भ किया गया। इसका कारण कक्षा 6-8 की नवीन पाठ्यपुस्तक को लागू करना प्रक्रियाधीन था। अगले साल कक्षा 5-8 में कार्य शुरू किया गया। इस पायलेट प्रोजेक्ट का प्रमुख उद्देश्य था सम्पूर्ण राज्य में प्रारम्भिक शिक्षा के राजकीय विद्यालयों के लिये सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की योजना एवं प्रक्रिया तय करना जो कि भविष्य में कार्यक्रम के विस्तार के साथ ही राज्य के पाठ्यक्रम का हिस्सा बन सकें। इसके लिये शिक्षकों को नियमित सम्बलन देने हेतु विषयवार मासिक कार्यशालाओं का आयोजन एवं विद्यालयों की सघन मॉनिटरिंग का कार्य भी किया गया। बच्चों के नामांकन एवं ठहराव तथा शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिये पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर भी कार्य किया गया।

पायलेट प्रोजेक्ट की उपलब्धि इस प्रकार रही :-

- बच्चों के शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई है।
- बच्चों के नामांकन, नियमितता एवं ठहराव में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई है।
- बच्चों के सीखने सिखाने की प्रक्रिया में रुचि एवं भागीदारी बढ़ी है।
- बच्चों एवं शिक्षकों के बीच संवाद स्थापित हुआ है।
- अभिभावकों ने पढ़ने-पढ़ाने व मूल्यांकन के नये तरीकों की वजह से बच्चों के व्यवहार एवं कार्य में आ रहे परिवर्तनों की गुणवत्ता को सराहा है।
- अभिभावकों एवं विद्यालय प्रबंधन समिति की भागीदारी बढ़ी है।
- शिक्षकों ने एनसीएफ 2005 के अनुसार पाठयक्रम के विभाजन को स्वीकारा है।
- अधिकांश शिक्षकों द्वारा मासिक कार्यशालाओं एवं विद्यालयों में आरटीई एक्ट 2009ए एनसीएफ 2005 एवं सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के मुद्दों पर संवाद करना प्रारम्भ कर दिया है।
- सीखने सिखाने की प्रक्रिया में प्रशंसनीय बदलाव आया है जिसमें परिणामस्वरूप बच्चों की झिझक दूर हुई है तथा उनसे पूछे जाने वाले प्रश्नों के जवाब देने के लिये आतुर दिखाई देते हैं। उनके सीखने के स्तर में भी बदलाव आया है।
- कक्षाकक्ष में गतिविधि आधारित अधिगम प्रक्रिया एवं सीखने सिखाने की प्रक्रिया में कला संगीत और खेलों को पर्याप्त महत्ता मिलने लगी है।

द्वितीय चरण 2012-13

सीसीई की पायलेट परियोजना की सफलता को देखते हुए अकादमिक सत्र 2012-13 से राज्य के 178 ब्लॉक्स के 3059 राजकीय प्राथमिक विद्यालयों (लहर विद्यालयों) में इसके विस्तार का निर्णय लिया गया। साथ ही 23 केजीबीवी विद्यालयों एवं पायलेट प्रोजेक्ट के उच्च प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 5-8 में भी सीसीई शुरू किया गया।

इस चरण के अन्तर्गत भी विषयवार मासिक कार्यशालाओं के आयोजन एवं सघन मॉनिटरिंग के लिये जिला व ब्लॉक स्तरीय समिति का गठन किया गया। यह सोचा गया था कि पूरे राज्य के विभिन्न ब्लॉक्स में सीसीई के माध्यम से मॉडल स्कूल तैयार कर लिये जायें, जिससे आगामी चरण में ये विद्यालय अन्य स्कूलों को मार्गदर्शन दे सकें। इस दौरान कार्य का विस्तार एवं फैलाव होने के कारण चुनौतियों के साथ-साथ कुछ सकारात्मक अनुभव भी रहे :

- शिक्षकों के लिये एक बार का प्रशिक्षण पर्याप्त नहीं है अपितु विद्यालयी समर्थन एवं नियमित कार्यशाला का आयोजन शिक्षकों की क्षमता संवर्धन के लिये आवश्यक है।
- विषयवार कार्यशालाओं के आयोजन में सन्दर्भ व्यक्तियों की अनुपलब्धता एवं शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित नहीं होने के कारण ये कार्यशालाएं नियमित रूप से आयोजित नहीं हो सकीं।
- विषयवार कार्यशालाओं में जिन शिक्षकों ने भागीदारी की वहां वे इनकी उपयोगिता को समझ सकें एवं अकादमिक प्रश्न पूछने एवं सीसीई की प्रक्रिया को समझने में उनकी रुचि दिखाई दी।
- बच्चों के सीखने के स्तर एवं तरीकों पर शिक्षक विचार करने लगे है।
- ब्लॉक स्तर पर पर स्कूलों की मॉनिटरिंग समग्रता में नहीं हो सकी।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर सन्दर्भ सामग्री मासिक कार्यशालाओं का उद्देश्यपूर्ण आयोजन, योजना निर्माण एवं शिक्षण के उच्च स्तरीय मानकों एवं उद्देश्यों के लिये कुशल सन्दर्भ व्यक्तियों की उपलब्धता चुनौती रही ।

तृतीय चरण 2013–14

द्वितीय चरण की चुनौतियों एवं समग्र राज्य में सीसीई के विस्तार को ध्यान में रखते हुए इस शैक्षिक सत्र से सम्पूर्ण ब्लॉक को कवर करते हुए व ब्लॉक के लगभग 2500 विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में सीसीई कार्यक्रम के विस्तार का निर्णय लिया गया। जयपुर शहर में पूर्व एवं पश्चिम ब्लॉक, अलवर जिले में थानागाजी एवं उमरैन ब्लॉक, डूंगरपुर आसपुर व बीछीवाड़ा ब्लॉक, उदयपुर–सराड़ा, गिरवा ब्लॉक, बीकानेर–लूणकरणसर ब्लॉक को लिया गया है।

इस चरण का प्रमुख उद्देश्य यह जानना है कि ब्लॉक के सभी विद्यालयों के सीसीई लागू करने के लिये ब्लॉक स्तर पर किस तरह की अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था करनी होगी।

पूर्ण ब्लॉक में कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लिये निम्न कार्य को प्राथमिकता के साथ करना होगा–

- शिक्षकों की क्षमता संवर्धन एवं समर्थन प्रक्रिया का विकेन्द्रीकरण
- सूचित सकारात्मक एवं सहयोगी परिवीक्षण की प्रक्रिया स्थापित करना।
- संकुल स्तर पर साधन सम्पन्न एवं शैक्षिक नेतृत्व देने वाले विद्यालयों की पहचान कर नोडल विद्यालय के रूप में कार्य करने हेतु उनमें गुणवत्तापूर्ण संसाधनों को विकसित करना।
- ब्लॉक स्तर पर अकादमिक एवं प्रशासनिक मुद्दों को देखने के लिये दो अलग–अलग समितियों का गठन।
- इसी प्रकार जिला स्तर पर जिला प्राथमिक शिक्षा की अध्यक्षता और डाइट प्राचार्य की सहअध्यक्षता में गठित समिति सीसीई के क्रियान्वयन के प्रशासनिक मुद्दों को देखेगी।
- इसी प्रकार राज्य स्तर पर एक कोर टीम का गठन जिसमें ब्लॉक स्तरीय शैक्षिक समिति के प्रतिनिधि, एस.आई.ई. आर.टी., डाइट, यूनिसेफ एवं राज्य सन्दर्भ संस्था के सदस्य भी शामिल होंगे।
- डाइट की प्रशिक्षण, शिक्षक समर्थन एवं स्कूल के परिवीक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका देखी जायेगी।

भविष्य में सीसीई सभी प्राथमिक शिक्षा के विद्यालयों में लागू किया जाना है। इसके लिये अगले शैक्षिक सत्रों के लिये कार्य योजना भी तैयार की गई है जो इस प्रकार है–

वर्ष	विद्यालयों की संख्या	कक्षाएं
2014–15	10017 (नोडल विद्यालय) (5389 पुराने सीसीई विद्यालय)	कक्षा–5 तक कक्षा 1–8 तक
2015–16	30000 (15416 पुराने विद्यालय) (15000 नये विद्यालय)	कक्षा 1–8 तक कक्षा 1–5 तक
2016–17	45787	कक्षा 1–8 तक
2017–18	86787 सभी विद्यालय	कक्षा 1–8 तक

वर्ष 2014–15 में नोडल विद्यालयों में सीसीई लागू करने के लिये इस अकादमिक सत्र में प्रमुख रूप से निम्नानुसार गतिविधियां नियोजित की गई हैं :–

- नोडल विद्यालयों का चयन एवं उनका सशक्तिकरण का कार्य
- प्रत्येक नोडल विद्यालय के कार्यक्षेत्र में चारों विषयों के सन्दर्भ व्यक्ति लगभग 40,000 तैयार किये जायेंगे।
- राज्य में लगभग 3000 मुख्य संदर्भ व्यक्ति अगामी शिक्षक प्रशिक्षण के लिये तैयार किये जायेंगे।
- अक्टूबर 2013 तक प्रशिक्षण देने वाले सन्दर्भ व्यक्तियों का डाटा बेस तैयार कर लिया जायेगा।

इस सब प्रयासों के साथ ही सतत एवं समग्र मूल्यांकन को सभी विद्यालयों में लागू करने के मार्ग में कई कठिनाइयां एवं चुनौतियां हैं जिनका हल ढूंढने का प्रयास भी प्रशासनिक एवं शैक्षिक दृष्टि से किया जा रहा है। ये चुनौतियाँ प्रमुख रूप से इस प्रकार है :–

- शिक्षक–शिक्षार्थी अनुपात सुनिश्चित करना।
- ब्लॉक से लेकर उच्च स्तर के अधिकारियों के बीच सीसीई के अनुसार कक्षागत गतिविधियों एवं मूल्यांकन के तरीकों को सरल बनाना।
- डाइट के व्याख्याताओं का क्षमता संवर्धन जिससे वे सीधे–सीधे प्रशिक्षण, सामग्री निर्माण, विद्यालय की मॉनिटरिंग, शोध एवं दस्तावेजीकरण के कार्य से जुड़ सकें।
- संदर्भ शिक्षकों का चयन प्रशिक्षण एवं शिक्षकों के प्रशिक्षण आयोजित करना
- मासिक कार्यशालाओं का नियमित आयोजन व विद्यालयों की मॉनिटरिंग एवं शिक्षक को सम्बल देना।
- समुदाय एवं अभिभावकों का जुड़ाव।
- सामग्री का सरलीकरण, प्रिन्टिंग एवं विद्यालय तक समय पर पहुंचाना।
- शिक्षकों में इस बदलाव को स्वीकारने का मनोबल बनाना।
- सम्पूर्ण कार्यक्रम के लिये पर्याप्त वित्तीय संसाधन की उपलब्धता।

इन सब चुनौतियों से ऊपर उठकर बच्चा सीखे एवं अपनी कक्षा के स्तर के अनुसार आगे बढ़े इसका उत्तरदायित्व शिक्षक का है। शिक्षा के गिरते स्तर के कारण पूरे शिक्षा जगत एवं शिक्षकों की अस्मिता पर उठने वाले प्रश्नों को विराम देने हेतु सतत एवं समग्र मूल्यांकन ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए संजीवनी बूटी है। यह केवल मूल्यांकन की विधा में ही परिवर्तन को इंगित नहीं करती अपितु बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं सीखने सिखाने के वर्तमान तरीकों में भी बदलाव को प्रेरित करती है।

–परामर्शक, सीसीई, यूनिसेफ
सर्व शिक्षा अभियान, राजस्थान जयपुर
मो. 9828448743

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

कक्षा-कक्ष प्रक्रिया एवं योजना में बदलाव

❒ डॉ. अमृता दाधीच

यदि हमें सचमुच बच्चों की क्षमताओं का आकलन करना है तो हमको इस हेतु स्वयं पूर्ण रूप से तैयार होना होगा। इस तैयारी का आशय यह है कि मूल्यांकन की ऐसी समझ विकसित की जानी होगी जिसमें बच्चों को भयमुक्त व गरिमामय वातावरण प्रदान कराते हुए उनको शिक्षण कराया जाए तथा साथ-साथ उनकी क्षमताओं एवं कौशल को जाँच लिया जाए। एक शिक्षक के रूप में यह जानना आवश्यक है कि हम किस प्रकार से मूल्यांकन करें जिससे यह समझा जा सके कि बच्चे किस क्षेत्र में कैसा प्रदर्शन कर रहे हैं? अर्थात् क्षेत्रवार सीख पा रहे हैं या नहीं। आकलन का उद्देश्य यह है कि बच्चों का लगातार दिन/प्रतिदिन शिक्षण के साथ ही व्यापकता के साथ आकलन किया जाए ना कि परीक्षाएँ आयोजित करना। यह बात मूल रूप से एनसीएफ 2005 एवं शिक्षा का अधिकार कानून 2009 में सम्मिलित हैं।

सीसीई अन्तर्गत आवश्यक परिस्थितियों एवं इसकी समझ को जानने के लिए निम्न बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है-

● बच्चों की समझने की प्रक्रिया को जानना व समझना। ● सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के रूप में जीवन्त कक्षा को समझना। ● शिक्षक के सशक्तिकरण को समझना एवं प्रक्रिया का हिस्सा बनाना। ● संज्ञानात्मक क्षेत्रों/कौशलों को समझकर जाँचना। ●मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव।

बच्चों की समझने की प्रक्रिया को जानना व समझना :- बच्चे कैसे सोचते हैं, चीजों एवं घटनाओं को कैसे व किस नज़रिए से देखते हैं ? इसको हम बारीकी से देखें तो हमें बच्चे के कई कौशलों का पता स्वत: चल जाता है। दुनिया में प्रत्येक बच्चा असीम क्षमताएँ एवं संभावनाएं लेकर पैदा होता है और सीखने की उसकी चाहत उसमें प्राकृतिक और स्वाभाविक रूप से विद्यमान होती है। बच्चों के सीखने में अगर कोई बाधा हैं तो वो अधिकतर बच्चों में ना होकर सीखने-सिखाने की गतिविधियाँ व तकनीक में होती हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हर बच्चे अपनी गति, रीति व मति से सीखते है। हर बच्चे को समझना एवं जानना सी.सी.ई. का महत्वपूर्ण अंग है।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के रूप में जीवन्त कक्षा को समझना :- आगे बढ़े तो हमें सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के रूप में जीवन्त कक्षा की मिसाल देनी होगी। ऐसी कक्षा जिसमें सीखने-सिखाने की प्रक्रिया अन्तर्गत बच्चे अपने स्तर पर खोजबीन करते हैं, अपने अनुभव बताते हैं, शिक्षक की समझाई हुई बातों को जोड़कर निष्कर्ष निकालते हैं। बच्चों को सीखने के पर्याप्त अवसर दिये जाते हैं। बच्चे शिक्षक के साथ निरन्तर अन्त:क्रिया/संवाद करते नज़र आते हैं। यहाँ कक्षा में किसी प्रकार का भय, तनाव व दबाव नज़र नहीं आता है। बच्चों को उनकी असफलता पर डाँटा नहीं जाता है बल्कि शिक्षक यह जानने का प्रयास करता है कि असफलता के कारण क्या रहे ? कारणों को जानकर अपनी शिक्षण योजना में किस प्रकार बदलाव करें कि बच्चा सीख पाए। अर्थात् बच्चों की असफलता के प्रति शिक्षण के दृष्टिकोण में बदलाव आवश्यक है। इसे सकारात्मक रूप से लिया जाए ना कि नकारात्मक। मूल्यांकन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा है ना कि पृथक प्रक्रिया।

शिक्षक के सशक्तिकरण को समझना एवं प्रक्रिया का हिस्सा बनाना :- आगे बढ़े तो शिक्षक के सशक्तिकरण की प्रक्रिया के रूप में अनुभव ये बताते हैं कि यदि पूरी तैयारी, आवश्यक संसाधन सामग्री के एवं योजना के साथ शिक्षक कक्षा में प्रवेश करें तो वह अधिक प्रभावी व सशक्त तरीके से बच्चों के साथ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया कर पाता है जिससे शिक्षक अपने आपको कक्षा में ऊर्जावान व अधिक मजबूत अनुभव करता है। शिक्षक द्वारा कक्षा में करवाई जाने वाली गतिविधियाँ सौद्देश्य सम्पादित हो इस हेतु योजना निर्माण बहुत सोच समझकर, सुव्यवस्थित व बच्चों के समूह अनुसार बनाना आवश्यक है। कक्षा के प्रत्येक बच्चे को समझ कर उसके साथ कार्य करने की सही योजना का निर्माण शिक्षक के सशक्तिकरण का प्रमुख घटक है।

शिक्षण में आने वाली चुनौतियों को शिक्षक अपनी अनुभव डायरी में लिखते रहें तथा विषयवार मासिक बैठकों/ब्लॉक स्तरीय कार्यशालाओं/प्रशिक्षणों में अवश्य प्रस्तुत करें ताकि सब मिल कर उनका समाधन खोज सकें। इसके अतिरिक्त शिक्षक सन्दर्भ्य व्यक्ति व सम्बलनकर्ताओं से भी लगातार अपनी चुनौतियों की चर्चा अवश्य कर समाधान का रास्ता निकालें। चर्चा उपरान्त शिक्षण कराने पर बच्चे चहकते, महकते नज़र आएंगे। यही शिक्षक की शक्ति है, जो भक्ति उपरान्त प्राप्त होती है।

संज्ञानात्मक क्षेत्रों/कौशलों को समझकर जाँचना :- हालांकि सीखना अपने-आप में एक व्यापक सन्दर्भ लिए हुए है और सीखना हमारी जिन्दगी से जुड़ा हुआ है। अत: हम यह नहीं कह सकते हैं सीखना केवल विद्यालय में ही होता है। लेकिन हम यह कह सकते हैं कि प्रारम्भिक स्तर पर सीखने को सुव्यवस्थित व सुनियोजित स्वरूप में प्रस्तुत करने के लिए विद्यालय एक सशक्त मंच है। अत: विद्यालय में सिखाने के तरीकों द्वारा उन सभी पहलुओं का विकास किया जाता है, जो बालक के सर्वांगीण विकास से जुड़े हैं। इसमें विषयगत जानकारी व समझ के साथ-साथ कला, कार्यानुभव, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा से संबंधित कौशलों का भी विकास किया जाता है इन्हें पृथक क्षेत्र के रूप में ना देखा जाकर संज्ञानात्मक क्षेत्र के साथ सम्मिलित किया गया है। इसके साथ ही सामाजिक व व्यक्तिगत गुणों के विकास का कार्य भी साथ-साथ किया जाता है अर्थात् ये सभी कौशल आपस में गुँथे हुए हैं, इन्हें पृथक-पृथक दृष्टि से देखना सही नहीं होगा। जैसे-सामाजिक विज्ञान पढ़ाते समय संवेदनशीलता, सहयोग, नेतृत्व न्याय व समता के प्रति सरोकार जागरुकता, श्रम के प्रति सम्मान

आदि बातों पर विस्तृत गतिविधियाँ करवाकर सामाजिक व व्यक्तिगत गुणों के विकास हेतु पर्याप्त अवसर दिये जाते हैं। इसी प्रकार विज्ञान शिक्षण के दौरान पर्यावरणीय संवेदनशीलता एवं जागरूकता के बारे में बताया जा सकता है। उपर्युक्त सभी बिन्दुओं के आधार पर शिक्षण कार्य करवाया जाए तो मूल्यांकन प्रक्रिया में स्वत: बदलाव आ जाता है।

यदि बच्चे को समझते हुए जीवन्त कक्षा के माहौल में, पूरी तैयारी के साथ शिक्षक, कक्षा में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया संचालित करता है तो मूल्यांकन प्रक्रिया में परीक्षा के भय जैसा माहौल नज़र नहीं आता है।

मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव :– सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया को वास्तव में देखा जाए तो यह गुणवत्ता सुधार की प्रक्रिया है जो विद्यालय आधारित है, इसमें शिक्षक पाठ्यक्रमानुसार अपनी योजना के अनुसार शिक्षण करवाते हुए बच्चों के सीखने के सभी पक्षों की जाँच करते हैं तथा आगे बढ़ते हैं। उल्लेखनीय है कि शिक्षण की योजना बनाने व मूल्यांकन प्रक्रिया में शिक्षक को पर्याप्त स्वायत्ता है।

शिक्षक सी.सी.ई. प्रक्रिया की क्रियान्विति के प्रारम्भिक दौर को तैयारी वर्ष के रूप में देखे तथा पूरी मेहनत व लगन के साथ अपनी शिक्षण योजनाएँ बनाए, समय-समय पर उनकी समीक्षा करें, तदनुसार बदलाव करें, साथ ही साथ आवश्यकतानुसार कार्यपत्रक बनाए, गतिविधियों का नियोजन करें, आयोजन करें। तदनुरुप निरन्तर आकलन करें, व्यापक मूल्यांकन करें। अभिभावकों से समय-समय पर बातचीत करें, बच्चों की प्रगति से अवगत कराएँ तथा इस सारी प्रक्रिया को अपने निर्धारित प्रपत्रों में दर्ज करते रहें, तो सी.सी.ई. बहुत आसान व सरल लगने लगेगा।

हम स्वयं अपना आकलन अच्छे से कर सकते हैं तथा आत्मसन्तुष्टि (Self Setisfaction) प्राप्त कर सकते हैं तो चलिए हम सीसीई से जुड़ते हुए भरपूर ऊर्जा के साथ मजबूत पहल करें ताकि शैक्षिक परिदृश्य में आत्मसंतुष्ट हो सकें।

-व्याख्याता (सीसीई प्रभारी)
एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
नो. 9828344989

सीसीई के सुदृढ़ीकरण में ईसीसीई की भूमिका

❑ अनिल कुमार शर्मा

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन एक मूल्यांकन का तरीका नहीं होकर शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य कक्षा कक्ष में होने वाली समस्त गतिविधियों की प्रक्रिया है। अत: कहा जाता है कि सीसीई मूल्यांकन न होकर पैडोगॉजी का हिस्सा हैं। सीसीई का सीधा संबंध औपचारिक शिक्षा से जुडे है। क्योंकि सीसीई करने वाला एक शिक्षक है, जो औपचारिक रूप से समय की सीमा में रहकर निश्चित अवधि में शिक्षार्थी द्वारा की जाने वाली क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थी के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को देखता है व उसकी घोषणा करता है। औपचारिक शिक्षा का प्रारंभ किसी संस्था में कक्षा 1 से माना जाता है जहाँ प्रवेश की आयु राजकीय नियमानुसार छ: वर्ष रखी गई है, परन्तु गैर राजकीय विद्यालयों में यह आयु 4 या 5 वर्ष से ही प्रारंभ हो जाती है। इन संस्थाओं में शिक्षार्थी को औपचारिक रूप से प्रतिदिन विद्यालय में जाना व वहाँ 6-8 घंटे तक बैठना होता है, जो बालक या बालिकाओं के विकास को कम करता है। परन्तु माता-पिता का अति उत्साही होना या बायलोजिकल डवलपमेंट ऑफ ए चाइल्ड के ज्ञान का अभाव होना या माता-पिता दोनों का राजकीय या निजी सेवा में होना या एकल परिवार इसका महत्वपूर्ण कारण है। यह सत्य शोध आधारित है कि जो बालक कम उम्र में विद्यालय में प्रवेश लेता है, आगे चलकर वही बालक अवसाद से ग्रसित हो जाता है या शारीरिक व मानसिक रूप से कमजोर रह जाता है। अत: 6 वर्ष से पूर्व आयु के शिक्षार्थी को औपचारिक शिक्षा का अंग न बनाया जावें, परन्तु जैसा उपर्युक्त बताया गया है कि एकल परिवार के कारण व ज्ञान का अन्य स्रोतों से प्रगटीकरण के कारण उसे व्यावहारिक रूप से ज्ञान देने की आवश्यकता है। अत: उसके लिये हमें एक ऐसी संस्था की आवश्यकता होगी जो बालक के ज्ञान को व्यावहारिक रूप से संगृहित करने में उसकी सहायता करें व यह भी देखा जावे की बालक/बालिका के शारीरिक विकास (मांस पेशियों के विकास) को ध्यान में रखकर उसे उसकी क्षमता के अनुरूप ज्ञान से जोड़ा जावे। इसके लिये पूर्व प्राथमिक शिक्षा सबसे अच्छा विचार है, जो सी.सी.ई. के सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण घटक के रूप में देखा जा रहा है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा क्या है:-

पूर्व प्राथमिक शिक्षा को 0-6 आयु वर्ग के बालक/बालिकाओं की शिक्षा व देखभाल के रूप में जाना जाता है, यहाँ इस आयु वर्ग को दो खण्डों मे बांटा गया है 0-3 व 3-5 चूँकि 0-3 आयु वर्ग के बालक/बालिका घर पर रहकर अपने अनुभव के आधार पर लर्निंग करेगा इसके लिये बालिका या बालक के माता-पिता या अभिभावक को बालक के सहज विकास से परिचय करवाना आवश्यक होगा व 3-6 आयु वर्ग की बालिका या बालक शाला पूर्व शिक्षा से जुड़ेगा, जो उसके आस पास पडौस में औपचारिक रूप से संचालित हो रही होगी।

जैसा हम जानते हैं कि यह आयु (3-6 वर्ष) ऐसी आयु है जहाँ बालक या बालिका के मस्तिष्क का 90 प्रतिशत विकास हो जाता है। अत: इस दृष्टि से यह आयु 3-6 वर्ष उस बालिका-बालक के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। इस आयु में मिला मार्गदर्शन व वातावरण, जीवन में बुनियाद का काम करता है। अत: इस समय बालक के साथ की जाने वाली गतिविधियाँ बाल केन्द्रित हों जो उसका सर्वांगीण विकास करने वाली हों। शाला पूर्व कार्यक्रम बच्चे के सीखने-सिखाने का ऐसा वातावरण तैयार करता है। जिसमें संवेगात्मक रचनात्मक प्रवृति का विकास होता है तथा यहां बालिका या बालक को औपचारिक शिक्षा के लिये तैयार करता है।

ईसीसीई सीसीई के लिये आधार है कैसे-

औपचारिक शिक्षा में बालक या बालिका का सतत व व्यापक मूल्यांकन के माध्यम से ज्ञान व अनुभव को मापा जाता है साथ ही उसके व्यवहार में आये परिर्वतन को भी नोट किया जाता है। ईसीसीई की निम्न गतिविधियाँ है जो शिक्षक को सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में मदद करेंगी-

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बालक

बालिकाओं को परिवार, समाज की समझ बनाने हेतु ऐसी गतिविधियाँ सृजित की जाती है, जैसे परिवार के सदस्यों का परिचय, सदस्यों के कार्य की समझ आदि।

- अपने विचारों की अभिव्यक्ति को कहानी, कविता, नाटक के माध्यम से व्यक्त करने का अवसर दिया जाता है।
- सूक्ष्म व स्थूल मांस पेशियों के विकास के लिये ऐसे खेल खिलाना, संतुलन बनाना Eye Hand cordination विकसित करना, प्लास्टिक या लकड़ी के मनकों को पिरोना, कागज या कपड़ा फाड़ना आदि।
- संज्ञानात्मक विकास हेतु।
- वस्तुओं को पहचानना, ध्वनियों को सुनना व पहचानना, वस्तुओं को स्पर्श कर पहचानना व चख कर स्वाद बताना।
- वस्तुओं का वर्गीकरण करना या छँटनी करना, समान व असमान, छोटा व बड़ा, लम्बा व गोल, के आधार पर वर्गीकरण।
- सामाजिक संवेगात्मक विकास हेतु नाटक, खिलवाना, कविता व गीत आदि गँवाना।
- रचनात्मक विकास के लिये दैनिक अनुभव पर चर्चा करना, कक्षा कक्ष को सजाना, बैठक व्यवस्था आदि गतिविधियां।
- स्वास्थ्य के बारे में चर्चा करना, सफाई देखना, हाथ धोने की आदत बनाना, दौड़ना, खेलना, उछल कूद लुढ़कना, रेंगना, फेंकना, चढ़ना, उतरना आदि।

उक्त गतिविधियाँ आंगनबाड़ियों पर करवायी जाती हैं। सभी गतिविधियो के आयोजन के साथ टी.एल.एम का प्रयोग करना जिसमें मुखौटे, कठपुतलियाँ, कार्ड्स, चार्ट्स, गेम्स के सामान, Abecas blocks, स्वच्छता की जांच व उपयुक्त पोषण आदि।

प्रत्येक बालिका/बालक का अभिलेख संधारित किया जाता है। प्रत्येक बालक या बालिका की स्वास्थ्य की जांच करवायी जाती है।

उक्त सभी गतिविधियों के अभ्यास के साथ बालिका या बालक 2-3 घंटे अपनी रूचि के अनुसार कार्य कर कुछ भी सीखता है। इन्हीं को सीसीई में आधार बनाया गया है, यथा

- सीसीई में भी टीएलएम किट का अधिकाधिक प्रयोग किया जाता है।
- सीसीई में Learning by doing होता है।
- प्रत्येक बालिका या बालक का व्यक्तिगत अभिलेख संधारित किया जाता है।
- औपचारिक शिक्षा में कक्षा-कक्ष में बालक को स्वयं की अभिव्यक्ति प्रगट करने की पूर्ण स्वंतत्रता दी जाती है।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में समूह में कार्य करने से बालक, बालिका में नेतृत्व का गुण विकसित होता है। जो कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा में समूह में कार्य करने जैसे-कहानी सुनाना, नेता बनना व समस्या का सामाधान ढूंढना आदि से विकसित होता हैं।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में कक्षा-कक्ष में बालक या बालिका स्वयं की अभिप्रेरणा से कार्य करता है व अभ्यास के द्वारा अधिगमित ज्ञान को पक्का करता है।
- रंगों की पहचान व आकार, ज्यामिति के आधार पर आकृतियों को बनाना व पहचान करना। यह पूर्व प्राथमिक शिक्षा के पूर्व संख्या बोध व संख्या बोध कौशलों से आता है।
- उक्त सभी गतिविधियाँ पूर्व प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों (आंगनबाड़ी) पर आयोजित की जाती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा को स्कूल रैडिनेस कार्यक्रम भी कहा जाता है।

आवश्यकता है कि ईसीसीई का आंगनबाड़ियों पर सफल क्रियान्वयन हो तब ही यह कार्यक्रम सीसीई में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सारांश में कहा जा सकता है कि सीसीई के सुदृढ़ीकरण में ईसीसीई की भूमिका इस आधार पर बनती है कि यहाँ सभी गतिविधियाँ बालक बालिका को (सक्रिय शारीरिक व मानसिक) बनाये रखती है तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बालक संज्ञानात्मक, शारीरिक विकास, भाषायी विकास, सामाजिक भावनात्मक विकास एवं शरीर व गामक विकास के कौशलों के माध्यम से औपचारिक शिक्षा के लिये पूर्ण रूप से तैयार हो जाता है। इन्हीं कौशलों के विकास के कारण सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करने में आसानी होती है। यह कौशल ही सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का आधार बनते है।

-ईसीसीई प्रभारी
राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद, जयपुर
मो. 9414819523

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
(राज्य सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

मधुमती (मासिकी)
के आगामी अंक
निम्नलिखित विषयों पर प्रकाशित
किए जा रहे हैं-

- अक्टूबर, 2013 - 'लघुकथा' अंक (अतिथि संपादक- डॉ. रामकुमार घोटड़)
- नवम्बर, 2013- 'बाल साहित्य' अंक (अतिथि सम्पादक-श्रीमती विमला भंडारी)
- दिसम्बर, 2013- 'नाटक' अंक (अतिथि संपादक- श्री अशोक राही) जिसमें आप हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखकों की रचनाएं पढ़ पायेंगे।

अकादमी 'मधुमती' के आगामी अंक निम्नांकित विषयों पर भी प्रकाशित करने जा रही है-

- राजस्थान का सांस्कृतिक पुनर्जागरण
- राजस्थान की हिन्दी ग़ज़ल
- राजस्थान का युवा रचनाकार
- राजस्थान का व्यंग्य लेखन

कृपया इन अंकों के लिए अपनी रचनाएं अकादमी कार्यालय में शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें।

पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र 120/- रुपये है।

शुल्क बैंक ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा सचिव, राजस्थान साहित्य अकादमी, 'मीरा भवन', सेक्टर-4 हिरन मगरी, उदयपुर-313002 के नाम प्रेषित करें।

दूरभाष 0294-2461717
www.raaudr.org

कृपया मधुमती (मासिक) की रचनाएं madhumati.udaipur@gmail.com पर ही भेजें।

सोहन कन्हैया — अध्यक्ष
डॉ. प्रमोद भट्ट — सचिव

आदेश-परिपत्र : अक्टूबर, 2013

1. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की मॉनिटरिंग हेतु जारी दिशा निर्देश। ● 2. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से सम्बन्धित सीडी फिल्म ब्लॉकवार भिजवाने के क्रम में। ● 3. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन सम्बन्धी सामग्री विद्यालयों में प्रेषित करने बाबत। ● 4. जिले के सीसीई विद्यालयों में आवश्यक शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करवाने हेतु एसएमसी को राशि उपलब्ध करवाने के सम्बन्ध में। ● 5. राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित पायलेट प्रोजेक्ट के विस्तार के संदर्भ में। ● 6. राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पायलेट प्रोजेक्ट के विस्तार के सम्बन्ध में। ● 7. पायलेट प्रोजेक्ट के सुसंचालन के लिए समन्वय समिति का गठन। ● 8. सत्र 2013-14 में सीसीई कार्यक्रम लागू करने के सम्बन्ध में। ● 9. सीसीई विद्यालयों में शैक्षिक सम्बलन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रभावी क्रियान्वयन हेतु जारी निर्देश। ● 10. सीसीई विद्यालयों में उत्तीर्ण विद्यार्थियों के प्रवेश के सम्बन्ध में। ● 11. राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पायलट प्रोजेक्ट के विस्तार के संबंध में। ● 12. क्रमोन्नत सैकण्डरी विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तथा पायलेट विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाओं में सीसीई यथावत संचालन के क्रम में। ● 13. सर्व शिक्षा अभियान की वार्षिक कार्य योजना एवं बजट 2013-14 के तहत सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के संबंध में। ● 14. गाँधी जयन्ती से विद्यालयों में नैतिक शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ। ● 15. निदेशालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों के ई-मेल पते।

1. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की मॉनिटरिंग हेतु जारी दिशा-निर्देश

● राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर ● क्रमांक : राजप्राशिप/जय/सी.सी.ई./2012/7407-08 दिनांक : 17.8.12 ● विषय : सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की मॉनिटरिंग हेतु जारी दिशा-निर्देश। ● संदर्भ : सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पायलेट परियोजना समीक्षा बैठक 30.7.2012 ● उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि परिषद मुख्यालय के सभागार में दिनांक 30.7.2012 की प्रमुख शासन सचिव, स्कूल एवं संस्कृत शिक्षा विभाग की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें राज्य में संचालित 3059 लहर स्कूलों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की मॉनिटरिंग हेतु निम्न निर्णय किये गये-

1. जिला स्तर पर एक मॉनिटरिंग कमेटी का गठन किया जायेगा जिसमें निम्नानुसार पदाधिकारी होंगे- ● मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद-अध्यक्ष ● जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक-उपाध्यक्ष, ● अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक-सदस्य सचिव, ● ब्लॉक एज्यूकेशन ऑफिसर-सदस्य, ● दो संस्था प्रधान-सदस्य, ● दो संस्था प्रधान- सदस्य, ● दो संदर्भ व्यक्ति (एक संदर्भ व्यक्ति जिला मुख्यालय वाले ब्लॉक से तथा दूसरा अन्य किसी ब्लॉक से)-सदस्य, ● आईसीडीएस के अधिकारी (विशेष आमंत्रित)-सदस्य, ● एपीसी, लहर/सीसीई/ईसीसीई- सदस्य।

उक्त कमेटी मासिक बैठक में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की समीक्षा करेगी।

2. जिले में अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक प्रत्येक माह सीसीई कार्यक्रम के विद्यालयों के संस्था प्रधानों की बैठक लेकर समीक्षा करेंगे तथा कार्यवाही को लहर की वेबसाईट पर अपलोड कराएंगे।

3. सीसीई विद्यालयों की ब्लॉक स्तरीय कार्यशाला उस ब्लॉक के संदर्भ व्यक्ति व एम.टी.द्वारा (प्रशिक्षण शाखा से प्रशिक्षित) प्रत्येक माह विषयवार शिक्षकों की बैठक आयोजित कर समीक्षा करेंग तथा शिक्षकों को आने वाली शैक्षिक समस्याओं का समाधान भी उपलब्ध करवाऐंगे।

उक्त बिन्दुओं की अनुपालना आपके जिले में जिला परियोजना समन्वयक के माध्यम से करवाकर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम को प्रभावी मॉनिटरिंग में सहयोग प्रदान करें साथ ही बिलों के समस्त सीसीई विद्यालयों में छात्रों का आधारभूत परीक्षण (बेसलाईन सर्वे) करवाकर समूह निर्माण के साथ मॉडयूल आधारित शिक्षण करवाना सुनिश्चित करें। ● ह., अतिरिक्त आयुक्त।

2. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से सम्बन्धित सीडी फिल्म ब्लॉकवार भिजवाने के क्रम में।

● राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर ● क्रमांक : राप्राशिप/जय/औ.शि./2012-13/4977 दिनांक 13.7.12 ● विषयः सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से सम्बन्धित सीडी फिल्म ब्लॉकवार भिजवानेके क्रम में। ● उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि परिषद एवं यूनिसेफ के सहयोग से उपर्युक्त संदर्भ में निर्मित फिल्म आपके जिले में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम संचालित विद्यालयों के उपयोगार्थ एवं सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की समझ विकसित करने हेतु प्रेषित की जा रही है। विद्यालय के छात्रों/अध्यापकों एवं एसएमसी के सदस्यों को फिल्म प्रदर्शन करवाना अपेक्षित है।

जिला :ब्लॉक जहां सतत एवं व्यापक मूल्यांकन संचालित है (कुल ब्लॉक संख्या जिनके लिए फिल्म प्रेषित की जा रही है) - अजमेरः अरांई, भिनाय, जवाजा, केकड़ी, मसूदा, पीसांगन, श्रीनगर (7)। **अलवर** : कठूमर, किशनगढ़ बास, कोटकासिम, लक्ष्मणगढ़, नीमराना, रामगढ़, तिजारा, उमरैण (9)। **बांसवाड़ा** : आनन्दपुरी, बागीडोरा, गढ़ी, घाटोल, कुशलगढ़, सज्जनगढ़, तलवाड़ा (7)। **बारां**: अन्ता, बारां, शाहबाद (3)। **बाड़मेर** : बायतू, बालोतरा, बाड़मेर, चौहटन, धोरीमन्ना, शिव, सिवाना (7)। **भरतपुर** : बयाना, डीग, कमन, कुम्हेर, नगर, रूपवास, सेवर, वैर (8)। **भीलवाड़ा** : आसीन्द, बनेड़ा, मांडल, सराड़ा, शाहपुरा, सुवाणा (6)। **बीकानेरः** बीकानेर, डूंगरगढ़, खाजूवाला, कोलायत, लूणकरणसर, नोखा (6)। **बून्दी** : बून्दी, तालेड़ा, (2) **चित्तौड़गढ़** : चित्तौड़गढ़ (1)। **चूरूः** चूरू, सरदारशहर, तारानगर, (3) **दौसा** : बांदीकुई, दौसा, लालसोट, महुआ (4)। धौलपुर : बाड़ी, बसेड़ी,

धौलपुर, राजाखेड़ा (4)। **डूंगरपुर** : आसपुर, बिछीवाड़ा, डूंगरपुर, सागवाड़ा, सीमलवाड़ा (5)। **श्री गंगानगर** : पदमपुर, सादुलशहर, श्रीगंगानगर, टीबी (6)। **जयपुर** : आमेर, बस्सी, दूदू, जयपुर पश्चिम, जयपुर पूर्व, जमवारामगढ़, झोटवाड़ा, झोटवाड़ा सिटी, कोटपुतली, फागी, सांभरलेक, सांगानेर (12)। **जैसलमेर**: जैसलमेर, पोकरण (2)। **जालौर** : चितलवाणा, सांचौर (2)। **झालावाड़** : बकानी, झालरापाटन, मनोहरथाना, सुनेल (4)। **झुन्झुनूं** : अलसीसर, बूहाना, चिड़ावा, झुन्झुनूं, नवलगढ़, सूरजगढ़, उदयपुरवाटी (7)। **जोधपुर** : बालेसर, बावड़ी, भोपालगढ़, बिलाड़ा, जोधपुर सिटी, लूणी, मंडोर, ओसियाँ, फलौदी, (9)। **करौली** : हिंडोन, करौली, सपोटरा, टोडाभीम (4)। **कोटा** : इटावा, खेराबाद, कोटा, लाडपुरा, सांगोद, सुल्तानपुर (6)। **नागौर** : डीडवाना, डेगाना, जायल, कुचामन, लाडनू, मेड़तासिटी, नागौर, रियां (8)। **पाली** : बाली, मारवाड़ जंक्शन, पाली, रायपुर, रानी, सोजत (6)। **प्रतापगढ़** : अरनोद, प्रतापगढ़ (2)। **राजसमन्द** : भीम, खमनोर, कुम्भलगढ़ (3)। **सवाई माधोपुर** : बामनवास, बूनली, गंगापुरसिटी, खंडार, सवाई माधोपुर (5)। **सीकर** : दातारामगढ़, धोद, फतेहपुर, खंडेला, लक्ष्मणगढ़, नीम का थाना, पीपराली, श्रीमाधोपुर (8)। **सिरोही** : आबूरोड़, पिण्डवाड़ा, रेवदर, सिरोही (4)। **टोंक** : देवली, मालपुरा, टोंक, उनयारा (4)। **उदयपुर** : बडगांव, भींडर, गिर्वा, गोगुन्दा, झाड़ोल, खेरवाड़ा, मावली, रिसभदेव, सलूम्बर, सराड़ा (10)। (**कुल–178**)

3. सतत एव व्यापक मूल्यांकन सम्बन्धी सामग्री विद्यालयों में प्रेषित करने बाबत।

● राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर ● क्रमांक : राप्राशिप/जय/औ.शि./2012-13/4963 दिनांक 13.7.12 ● विषयः सतत एवं व्यापक मूल्यांकन सम्बन्धी सामग्री विद्यालयों में प्रेषित करने बाबत। ● उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि आपकेजिले की विद्यालय एवं छात्र संस्था के अनुरूप सतत एवं व्यापक मूल्यांकन सम्बन्धी समस्त सामग्री प्रेषित कर दी गई है। प्राप्त सामग्री को निम्नानुसार सम्बन्धित विद्यालयों में तुरन्त भिजवाना सुनिश्चित करें जिससे शिक्षक सामग्री का उपयोग सुनिश्चत कर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया को सुचारू रूप से संचालित कर सके। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन हेतु विद्यालय में उपलब्ध कराई जाने वाली सामग्री–

क्र.सं.	सामग्री का नाम	संख्या
1.	स्रोत पुस्तिका कक्षा 1 व 2 **टिप्पणी** : यह प्रशिक्षण के दौरान उपलब्ध करा दी गई है।	प्रति शिक्षक एक
2.	स्रोत पुस्तिका कक्षा 3 से 5 (हिन्दी, गणित, पर्यावरण अध्ययन, अंग्रेजी और कला शिक्षा) **टिप्पणी:** प्रशिक्षण के दौरान उपलब्ध करा दी गई है!	5 प्रति विषय एक
3.	आकलन एवं मूल्यांकन पंजिका कक्षा 3 से 5	बच्चों के नामांकन के अनुसार
4.	आकलन एव मूल्यांकन पंजिका कक्षा 1 व 2	बच्चों के नामांकन के अनुसार
5.	प्रगति कार्ड कक्षा 3 से 5	बच्चों के नामांकन के अनुसार
6.	प्रगति कार्ड कक्षा 1 व 2	बच्चों के नामांकन के अनुसार
7.	संचयी अभिलेख प्रपत्र	विद्यालय में कक्षा 5 के नामांकन के अनुसार
8	मॉड्यूल एवं चैकलिस्ट **टिप्पणी:** यहां विद्यालय में प्रति कक्षा की संख्या के अनुसार देना है। उदाहरण के लिए यदि किसी स्कूल में कक्षा 3 में 45 बच्चें हैं, तो दो मॉडयूल एवं चैकलिस्ट देने होंगे यदि कक्षा 3 में 65 बच्चे हैं तो तीन मॉड्यून देने होंगे लेकिन उसमें यदि 25 ही बच्चे हैं तो एक ही मॉडयूल एवं चैकलिस्ट देना होगा।	प्रति कक्षा 30 बच्चों की संख्या के अनुसार प्रति विषय
9.	स्तर निर्धारण चार्ट **टिप्पणी:** यह नमूने के रूप में दी जा रही है प्रति विद्यालय बच्चों की संख्या एवं आवश्यकतानुसार शिक्षक को स्वयं ऐसे चार्ट बनाने हैं।	प्रति विद्यालय 2 देने हैं।
10.	माईलस्टोन प्रोग्रेस चार्ट (हिन्दी,गणति, अंग्रेजी) **टिप्पणी:** यह नमूने के रूप में दी जा रही है बच्चों की संख्या एवं आवश्यकता के अनुसार शिक्षक को स्वयं ऐसे चार्ट बनाने हैं।	प्रति विद्यालय प्रति विषय प्रति कक्षा 1 यानि कुल 8
11.	शिक्षक योजना प्रपत्र **टिप्पणी:** यह नमूने के रूप में दी जा रही बच्चों की संख्या एवं आवश्यकता के अनुसार शिक्षक को स्वयं ऐसे चार्ट बनाने हैं।	प्रति विद्यालय 2 देने हैं।

नोट : प्रत्येक सामग्री की अतिरिक्त कुछ प्रतियां प्रत्येक ब्लॉक स्तरीय कार्यालय में उपलब्ध करवा दें जिससे विद्यालयों को आवश्यकतानुसार अतिरिक्त सामग्री उपलब्ध करवाई जा सके। ● ह., अतिरिक्त आयुक्त।

4. जिले के सीसीई विद्यालयों में आवश्यक शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करवाने हेतु एसएमसी को राशि उपलब्ध करवाने के सम्बन्ध में।

● राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर ● क्रमांक :राप्रशिप/जय/औ.शि./2012-13/6916 दिनांक : 7.8.12 ● विषय : जिले के सीसीई विद्यालयों में आवश्यक शैक्षिक साममग्री उपलब्ध करवाने हेतु एसएमसी को राशि उपलब्ध कराने के सम्बन्ध में। ● उपर्युक्त संदर्भ में लेख है कि आपके जिले में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम संचालित विद्यालयों में मूल्यांकन प्रक्रिया हेतु आवश्यक शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करवाने हेतु एलईपी मद से प्रति विद्यार्थी 160 रूपये की दर से विद्यालय में वास्तविक विद्यार्थियों के नामांकन अनुसार राशि एसएमसी को उपलब्ध करवानी है। उक्त राशि से प्रति छात्र निम्न सामग्री एसएमसी द्वारा क्रय की जानी है- ● वाटर कलर पैकिट 2, पेन्सिल पैकिट-1, शॉपनर-4, स्कैच पेन सैट-1, रबड-6, ● ए-4 साईज पेपर 200 प्रति विद्यार्थी। ● पोर्टफोलियो फाईल-6, ● कलर पेपर, फेविकाल, क्रेयोन्स कलर, ग्लेज पेपर, धागा एक रोल।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना सुनिश्चित कराते हुए सम्बन्धित सभी विद्यालयों की एसएमसी को राशि व्यय करने के दिशा-निर्देशों के साथ राशि प्रेषित कर शीघ्रातिशीघ्र सम्बन्धित सामग्री क्रय कर विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाने हेतु निर्देशित करें। ● ह., अतिरिक्त आयुक्त।

5. राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित पायलेट प्रोजेक्ट के विस्तार के संदर्भ में

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/सी/19510/08 दिनांक 13.7.11 ● विषय : राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित पायलेट प्रोजेक्ट के विस्तार के संदर्भ में। ● प्रसंग :अति. आयुक्त, प्रारम्भिक शिक्षा परिषद के पत्रांक राप्राशि/जय/औशि/2011/3798 दिनांक 10.05.11 ● उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र की प्रति संलग्न कर निर्देशित किया जाता है कि राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पायलेट प्रोजेक्ट संचालित किया जा रहा है उक्त कार्य जयपुर, अलवर जिले में कक्षा 1 से 4 में संचालित है। सत्र 2011-12 से उक्त विद्यालयों की कक्षा 65-8 के छात्र-छात्राओं को भी प्रोजेक्ट में सम्मिलित किया जाना है, साथ ही जयपुर, अलवर, टोंक एवं उदयपुर की मॉडल-1 की 27 केबीबीवी विद्यालयों में भी इसका विस्तार किया जाना है तथा इन विद्यालयों में एनसीईआरटी पाठ्यक्रम एवं पाठयपुस्तकों के आधार पर ही शिक्षण कार्य किया जाना है। अतः पत्र में दिये निर्देशानुसार आवश्यक कार्यवाही करते हुए राज्य सरकार एवं इस कार्यालय को अवगत कराने का श्रम करें। ह. निदेशक, प्रारंम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

6. राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पायलेट प्रोजेक्ट के विस्तार के सम्बन्ध में।

● राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर ● क्रमांक :राप्रशिप/जय/सी.सी.ई./2012/1492-93 दिनांक 2.5.12 ● विषय : राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पॉयलेट प्रोजेक्ट के विस्तार के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : इस कार्यालय का पूर्व पत्रांक : 16996 दिनांक 6.3.12 ● सत्र 2012-13 में सीसीई के विस्तार के सम्बन्ध में प्रमुख शासन सचिव, स्कूल एवं संस्कृत शिक्षा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि सी.सी.ई.कार्यक्रम को सभी प्राथमिक, उच्च प्राथमिक विद्यालयों में दो फेज में लागू किया जाये। प्रथम फेज में लहर कार्यक्रम वाले लगभग 3000 प्राथमिक विद्यालयों में तथा द्वितीय फेज में सत्र 2013-14 में सभी प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सी.सी.ई. कार्यक्रम शुरू किया जाये।

इसी क्रम में राज्य के विभिन्न जिलों में चयनित एवं राज्य सरकार से अनुमोदित लहर कार्यक्रम संचालित 3077 विद्यालयों की सी.डी. उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ संलग्न कर प्रेषित की गई थी। इन विद्यालयों की जिलेवार पुनः जांच करवाने पर कुछ अशुद्धियां पाई गई जिनके कारण इन विद्यालयों की संशोधित सूची तैयार कर पुनः आपको इस पत्र के साथ संलग्न कर प्रेषित की जा रही है। इन विद्यालयों में एस.आई.ई.आर.टी. पाठयपुस्तकों के आधार पर ही शिक्षण कार्य करवाया जाना है। अतः कृपया सम्बन्धित सभी जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक शिक्षा) को उक्त विद्यालयों में प्रोजेक्ट के अन्तर्गत कक्षागत गतिविधियां एवं सतत एवं समग्र मूल्यांकन प्रारम्भ करने की स्वीकृति जारी करते हुए उचित निर्देश जारी करने का श्रम करावें। ● ह., अतिरिक्त आयुक्त।

7. पायलेट प्रोजेक्ट के सुसंचालन के लिए समन्वय समिति का गठन

● राजस्थान सरकार, प्रशासनिक सुधार (अनुभाग-3) विभाग ● क्रमांक प.6(34)प्र.सु./अनु.3/2010/जयपुर, दिनांक जून 9, 2010 ● आदेश ● एनसी एफ-2005 के अनुक्रम में एनसीईआरटी द्वारा विकसित स्रोत पुस्तिका के आधार पर सतत एवं व्यापक आंकलन राज्य के अलवर एवं जयपुर जिले के चयनित प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1-5 में बोध शिक्षा समिति के सहयोग में सत्र 2010-11 में पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में प्रारम्भ किया जा रहा है। निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम के प्रावधानों की दृष्टि से महत्वपूर्ण इस प्रोजेक्ट के सुसंचालन के लिए आयुक्त, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद की अध्यक्षता में राज्य स्तर पर निम्न प्रोजेक्ट, समन्वय समिति का गठन किया जाता है:-

1. आयुक्त, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर- अध्यक्ष
2. उपायुक्त (औपचारिक शिक्षा), राप्राशिप,जयपुर - सदस्य सचिव
3. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर - प्रोजेक्ट सलाहकार
4. निदेशक, बोध शिक्षा समिति, जयपुर - प्रोजेक्ट निदेशक
5. उपनिदेशिक (औ.शि.) राप्राशिप,जयपुर - प्रोजेक्ट समन्वयक
6. यूनिसेफ प्रतिनिधि - प्रोजेक्ट सलाहकार
7. एनसीईआरटी प्रतिनिधि - प्रोजेक्ट सलाहकार
8. उपनिदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, जयपुर - सदस्य
9. जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक शिक्षा, जयपुर - सदस्य
10. जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक शिक्षा, अलवर - सदस्य

11. एसोसिएट प्रोजेक्ट समन्वयक, बोध, जयपुर – सदस्य
12. प्रधानाचार्य, डाइट, अलवर – सदस्य्य
13. प्रधानाचार्य, डाइट,जयपुर – सदस्य
14. अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक, जयपुर – सदस्य
15. अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक, अलवर – सदस्य
16. फेलो प्रोजेक्ट प्रलेखन, बोध – सदस्य

उक्त प्रोजेक्ट समन्वय समिति का कार्यकाल 3 वर्ष के लिए होगा तथा यह समिति आवश्यकता अनुसार उपसमितियों अथवा कार्यक्रम का गठन कर सकेगी। समिति की बैठकें प्रति 2 माह में एक बार किया जाना आवश्यक होगा। उक्त समिति का प्रशासनिक विभाग, स्कूल एवं संस्कृत शिक्षा विभाग होगा। ● आज्ञा से, ह. उप शासन सचिव।

8. सत्र 2013–14 में सीसीई कार्यक्रम लागू करने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। ● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/3521/2009–12 दिनांक : 13.06.2013 ● विषय : सत्र 2013–14 में सीसीई कार्यक्रम लागू करने के संबंध में। ● प्रसंग : राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद् जयपुर के पत्रांक राप्राशिप/जय/सी.सी.ई/2013/2088 दिनांक 14.05.13

उपर्युक्त विषयांन्तर्गत लेख है कि सत्र 2013–14 हेतु सीसीई अपस्केलिंग हेतु ब्लॉक स्तरीय अवधारणा जिसमें ब्लॉक के समस्त प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है एवं इनमें कक्षा 1 से 5 में सीसीई कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाना प्रस्तावित है। इस हेतु अलवर जिले के थानागाजी एवं उमरैण, जयपुर के जयपुर पूर्व एवं जयपुर पश्चिम, डूंगरपुर के आसपुर एवं सागवाड़ा तथा उदयपुर जिले के बडगांव एवं गिरवा ब्लॉक का चयन किया गया है। उक्त 1879 विद्यालय व 27 केजीबीवी के सीसीई कार्यक्रम का अपस्केलिंग किया गया है।

इस संबंध में आपके जिले से संबंधित विद्यालयों की सूची संलग्न कर निर्देशित किया जाता है कि आप संबंधित विद्यालयों के संस्था प्रधानों को उक्त सूची भिजवाकर इसकी पालना इसी सत्र 2013–14 से करवाना सुनिश्चित करें।

अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) ● प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान ● बीकानेर

9. सीसीई विद्यालयों में शैक्षिक सम्बलन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रभावी क्रियान्वयन हेतु जारी निर्देश।

● कार्यालय निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/प्रार/शैक्षिक/एबी/शैक्षिक/सीसीई/3521/2009–12 दिनांक : 18.3.13 ● विषय : सीसीई विद्यालयों में शैक्षिक सम्बलन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रभावी क्रियान्वयन हेतु जारी निर्देश। ● प्रसंग : आयुक्त राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद जयपुर के अ.शा. पत्रांक राप्राशिप/जय/सीसीई/2013/16325 दिनांक 26.02.2013

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में राज्य में 5275 विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में एस.एस.ए. द्वारा शिक्षकों को एक बार प्रशिक्षण दिये जाने के पश्चात भी निरंतर शैक्षिक संबलन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रभावी क्रियान्वयन हेतु निम्नानुसार कार्यवाही अपेक्षित हैः–

1. शिक्षकों को बच्चों के सीखने के स्तरानुसार प्लानिंग व समीक्षा करने, मूल्यांकन कार्य हेतु सीसीई प्राथमिक विद्यालयों में एक अध्यापक से अधिकतम दो विषयों का अध्ययन करवाया जावे।
2. सीसीई के अन्तर्गत शिक्षकों को निरन्तर शैक्षिक सम्बलन देने हेतु ब्लॉक स्तरीय विषयवार मासिक कार्यशाला में संबंधित विषयाध्यापक आवश्यक रूप से सहभागिता करें।
3. सीसीई के केआरपी/एमटी/डाईट प्रतिनिधि विषयवार कार्यशालाओं में आवश्यक रूप से सहभागिता करें।
4. प्रत्येक जिले में विषयवार केआरपी एवं एमटी तैयार किये गये हैं जिनका सहयोग इस कार्यक्रम की निरन्तर मॉनिटरिंग में प्रारम्भिक रूप में सहयोग लिया जाना अपेक्षित है। जिससे शिक्षकों की सीसीई के प्रति अच्छी समझ बन सके तथा उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की नियमित समीक्षा कर उन्हें समय–समय पर उचित सहयोग दिया जा सके इस हेतु केआरपी/एमटी/आरपी महीने में न्यूनतम एक–एक सीसीई विद्यालय का आवश्यक रूप से अवलोकन करना सुनिश्चित किया जाना अपेक्षित है।

अतः इस संबंध में आपके जिले से संबंधित सीसीई विद्यालयों को उक्त दिशा निर्देश भिजवाकर पालना सुनिश्चित करावें।

अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) ● प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान ● बीकानेर

10. सीसीई विद्यालयों में उत्तीर्ण विद्यार्थियों के प्रवेश के सम्बन्ध में

● कार्यालय निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/शैक्षिक/एबी/3521/2009–12 दिनांकः 03.10.12 ● विषय : सीसीई विद्यालयों से उत्तीर्ण विद्यार्थियों के प्रवेश के सम्बन्ध में ● प्रसंग : राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद के पत्रांक राप्राशिप/जय/सीसीई/12/6967 दिनांक 8.8.12

राज्य सरकार के आदेश के अनुसार जिन विद्यालयों में सीसीई कार्यक्रम संचालित हो रहा है वहां से उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को अंक न देकर ग्रेड दी जाती है तथा उन छात्रों को ग्रेड के आधार पर ही प्रवेश दिया जाना चाहिये। कुछ संस्था प्रधान ग्रेड के आधार पर उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों के प्रवेश में आनाकानी करते हैं। जो कि आर.टी.ई. प्रावधानों के विपरीत हैं। इसलिए समस्त संस्था प्रधानों को आप निर्देशित करें कि ग्रेड के आधार पर उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रवेश देने से मना नहीं किया जावे। इस संबंध में आप द्वारा की गई कार्यवाही से इस कार्यालय को अवगत करावें।

निदेशक

11. राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पायलट प्रोजेक्ट के विस्तार के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/3521/सीसीई/2009–12

दिनांक : 25.06.12 ● विषय : राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पायलट प्रोजेक्ट के विस्तार के संबंध में ● प्रसंग : राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद जयपुर के पत्रांक राप्राशिप/जय/सीसीई/2012/1492-93 दिनांक : 01.05.12, 02.05.12 एवं 30.05.12

उपर्युक्त विषयांतर्गत एवं प्रासंगिक पत्रानुसार लेख है कि पायलेट प्रोजेक्ट के उत्साहजनक परिणाम के आधार पर राज्य सरकार ने यह निर्णय लिया है कि सीसीई कार्यक्रम को सभी प्राथमिक उच्च प्राथमिक विद्यालयों में दो फेज में लागू किया जावे। प्रथम फेज में 'लहर कार्यक्रम' वाले 3059 विद्यालयों में अकादमिक सत्र 2012-13 से तथा द्वितीय फेज में सत्र 2013-14 से सभी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम लागू करने का निर्णय लिया गया है।

इस संबंध में आपके जिले संबंधित विद्यालयों की सूची एवं सीसीई के दिशा-निर्देशों की प्रति संलग्न कर निर्देश दिये जाते हैं कि आप संबंधित विद्यालयों के संस्था प्रधानों को उक्त दिशा-निर्देशों की प्रति भिजवाकर इसकी पालना इसी शिक्षा सत्र 2012-13 से करवाना सुनिश्चित करें।

निदेशक

12. क्रमोन्नत सैकण्डरी विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तथा पायलेट विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाओं में सीसीई यथावत संचालन के क्रम में।

● राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद् ● क्रमांक : राप्राशिप/ जय/ सी.सी.ई./2013/5100 दिनांक : 07.08.13 ● विषय : क्रमोन्नत सैकण्डरी विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तथा पायलेट विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाओं में सीसीई यथावत संचालन के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत 17 जुलाई, 2013 को प्रमुख शासन सचिव (शिक्षा) की अध्यक्षता में सीसीई संचालन हेतु राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक में हुये निर्णयानुसार उच्च प्राथमिक विद्यालयों से क्रमोन्नत सैकण्डरी विद्यालय जिनमें पूर्व में सीसीई का संचालन हो रहा है, में कक्षा 1 से 5 तथा क्रमोन्नत पायलेट विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 तक सीसीई कार्यक्रम पूर्व की भांति यथावत संचालित रहेगा। ● अतः इस क्रम में जिला शिक्षा अधिकारियों को आवश्यक निर्देश प्रदान करवाने का श्रम करें ताकि उनके द्वारा सम्बन्धित संस्था प्रधानों को उक्तानुसार सीसीई संचालन हेतु पाबन्द किया जा सके। ● अतिरिक्त आयुक्त

क्रमांकः शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/सीसीई/3521/2009-13 दिनांक 13.9.13 ● अतिरिक्त निदेशक प्रशासन प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

13. सर्व शिक्षा अभियान की वार्षिक कार्य योजना एवं बजट 2013-14 के तहत सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के संबंध में।

● राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद् ● क्रमांक : राप्राशिप/जय/सी.सी.ई./2013/4582 दिनांक : 24.7.13 ● विषय : सर्व शिक्षा अभियान की वार्षिक कार्य योजना एवं बजट 2013-14 के तहत सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के संबंध में। ● विषयान्तर्गत लेख है कि सर्व शिक्षा अभियान की वार्षिक कार्य योजना एवं बजट 2013-14 की प्रति आपको योजना शाखा द्वारा उपलब्ध करवा दी गई है। तद्नुसार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया के क्रियान्वयन हेतु विस्तृत दिशा-निर्देश संलग्न है। जिला परियोजना समन्वयक यह सुनिश्चित करेंगे कि ये दिशा-निर्देश संबंधित विद्यालयों/कार्यालयों को उपलब्ध हो गये हैं। यह एक समयबद्ध कार्यक्रम है। साथ ही इनके प्रभावी एवं समुचित क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग, योजनाबद्ध रूप से करते हुए संलग्न दिशा-निर्देश अनुरूप कार्यवाही करवाना सुनिश्चित करें एवं की गई कार्यवाही से राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद को अवगत करावें। ● संलग्न : विस्तृत दिशा-निर्देश, 2013-14 ● आयुक्त

● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/सीसीई/3521/2009-13 दिनांक 11.9.13 ● अतिरिक्त निदेशक प्रशासन, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन : दिशा निर्देश (सत्र 2013-14)

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के दिशा निर्देश में निम्नांकित बिन्दू शामिल हैं:-

- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की पृष्ठभूमि और अवधारणा।
- राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को लागू करने के अब तक के चरणों का संक्षिप्त विवरण।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से जुड़ी शब्दावली
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन प्रक्रिया
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय का स्वरूप
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के विस्तार में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री

पृष्ठभूमि एवं अवधारणा

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों का अधिकार है गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना। कानून के सेक्शन 29 में स्पष्ट कहा गया है कि कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम बनाते समय यह ध्यान रखा जाए कि वो पाठ्यक्रम बच्चों के सर्वांगीण विकास लाने वाला हो। स्कूल और कक्षाओं में पढ़ने पढ़ाने के तरीके बच्चों की अंर्तनिहित क्षमताओं को उभारें और उनमें अपना ज्ञान निर्माण स्वयं करने की क्षमता विकसित हो। बच्चों ने जो सीखा है उसका मूल्यांकन उनके पढ़ने के दौरान लगातार होता रहे और उन्हें परीक्षा का भय नहीं लगे। परीक्षाएं बच्चों का मूल्यांकन भी दिखाने वाली हो साथ ही उससे शिक्षक को अपनी शिक्षण योजना में बदलाव करने का आधार एवं मौका भी मिले।

शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली सरकारी-गैर सरकारी संस्थाओं तथा शिक्षाविदों के बीच इस विषय पर लगातार चर्चा होती रही है। इस चर्चा में साफ उभर कर आ रहा है कि कानून के इस प्रावधान का अर्थ है:-

- हमें अपनी कक्षाओं में शिक्षण कराने के तरीकों को बाल केंद्रित

करना होगा।

- बच्चों के मूल्यांकन प्रक्रिया को इस प्रकार तय करना होगा कि वो बच्चों के बारे में लगातार जानकारी दे और उनमें परीक्षा का भय भी पैदा ना हो।
- शिक्षक बच्चों के लगातार मूल्यांकन के आधार पर अपनी शिक्षण योजना बनाएं और उसी के अनुसार बच्चों के साथ शिक्षण का कार्य करें।
- शिक्षक दिए गए पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों का शैक्षिक स्तर देखें और सर्वांगीण विकास के पहलुओं यथा कला, संगीत, व्यक्तित्व विकास, खेल एवं स्वास्थ्य में भी बच्चों की प्रगति को दर्ज़ करें।
- शिक्षक कक्षाओं में पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप इस प्रकार की गतिविधियां करें कि बच्चों को अपनी क्षमताओं को बढ़ाने का अवसर मिले।

इस अर्थ के आधार पर कहा जा सकता है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया वास्तव में व्यापक गुणवतासुधार प्रक्रिया ही है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) का अर्थ विद्यार्थी के स्कूल-आधारित मूल्यांकन व्यवस्था से है, जो विद्यार्थी के सीखने के सभी पक्षों पर ध्यान देती है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कोई नई अवधारणा नहीं है। कोई शिक्षण विधा जिसमें बच्चों के मूल्यांकन की प्रक्रिया सीखने-सिखाने की गतिविधियों में शामिल नहीं है तो उस विधा को उपयुक्त शिक्षण विधा नहीं कहा जा सकता। अतः यह स्पष्ट समझ लिया जाना चाहिए कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षण विधा यानि सीखने सिखाने की विधा का ही हिस्सा है कोई अलग अवधारणा नहीं है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में सततता जहां एक ओर कक्षा प्रक्रिया के रूप में होगी वहीं सावधिक मूल्यांकन के रूप में भी होगी। व्यापकता उन मुद्दों को प्रमुख रूप से रेखांकित करेगी जो बच्चों के विभिन्न कौशल, भावात्मक और क्रियात्मक पक्ष को उजागर करेगी।

राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन लागू करने के चरण

प्रथम चरण (2010-11)

राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन हेतु सत्र 2010-11 से एक पायलेट प्रोजेक्ट शुरू किया गया जिसमें अलवर एवं जयपुर जिले के क्रमशः 40 एवं 20 विद्यालयों को सम्मिलित किया गया। प्रारम्भ में कक्षा 1-5 में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के परिप्रेक्ष्य में कार्य किया गया एवं कक्षा 1-5 एन सी ई आर टी आधारित पाठ्यपुस्तकों को आधार मानक कार्य किया गया। **इस चरण का उद्देश्य था सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की योजना और प्रक्रिया को तय करना जो कि अंततः राज्य के पाठ्यक्रम का हिस्सा बनेगी।** इस चरण के अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया गया शिक्षकों को नियमित संबलन देना। इसके लिए विषयवार मासिक कार्यशालाएं की गई साथ ही सघन मॉनीट्रिंग भी की गई। स्कूल में व्यापक बदलाव की दृष्टि से पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर भी कार्य किया गया। प्रोजेक्ट के प्रारम्भिक परिणाम इस प्रकार रहे :-

- बच्चों के शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई है।
- बच्चों के प्रवेश, नियमितता और ठहराव में सराहनीय वृद्धि हुई है।
- कक्षा कक्ष में सीखने सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की रुचि और भागीदारी बढ़ी है।
- बच्चों और शिक्षकों के बीच रिश्तों में गुणात्मक सुधार आया है।
- अभिभावकों ने मूल्यांकन के नये तरीकों की सराहना की और स्वीकार भी किया है।
- अभिभावकों ने बच्चों की पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता को महसूस किया है।
- विद्यालय प्रबंधन समिति की भागीदारी बढ़ी है।
- शिक्षकों ने एन सी एफ 2005 की मंशा के अनुरूप किए गए पाठ्यक्रम विभाजन को स्वीकार किया है।
- अधिकतर शिक्षकों ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के मुद्दों पर संवाद करना प्रारंभ किया है।
- कक्षा कक्ष में शिक्षकों द्वारा सीखने सिखाने की प्रक्रिया में प्रशंसनीय बदलाव किया गया है।
- कक्षा कक्ष में गतिविधि आधारित प्रक्रिया प्रयोग की जाने लगी है।
- कक्षा कक्ष में सीखने सिखाने की प्रक्रिया में कला, संगीत और खेलों को पर्याप्त महत्ता मिलने लगी है।

द्वितीय चरण (2012-13)

पायलेट परियोजना के उत्साहजनक परिणाम के आधार पर राज्य सरकार द्वारा अकादमिक सत्र 2012-13 से सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया को राज्य के 178 ब्लॉक्स के 3059 राजकीय प्राथमिक विद्यालयों (लहर विद्यालयों) में लागू करने का निर्णय लिया गया। इसके साथ ही पायलेट प्रोजेक्ट के अंतर्गत शामिल उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया की शुरूआत की गई। राज्य भर में फैले इन स्कूलों की मॉनीट्रिंग के लिए जिला स्तर पर समिति का गठन किया गया। इस चरण के अंतर्गत भी विषयवार कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना तय किया गया था जिससे शिक्षकों को संबलन मिले और सी सी ई का व्यवस्थित क्रियान्वयन किया जा सके। इस चरण का उद्देश्य था राज्य के विभिन्न ब्लॉक्स में सी सी ई के माध्यम से ऐसे मॉडल स्कूल तैयार करना जो आगामी चरण में अन्य स्कूलों को मार्गदर्शन दे सकें। इस चरण में कुछ चुनौतियां रहीं और सकारात्मक अनुभव भी रहे :

- विषयवार मासिक कार्यशालाओं का आयोजन सभी जगहों पर नियमित नहीं रहा।
- जिन स्थानों पर मासिक कार्यशालाएं आयोजित की गई उन स्थानों पर शिक्षकों द्वारा अकादमिक प्रश्न कर सी सी ई की प्रक्रिया पर समझ बनाने का प्रयास किया गया।
- शिक्षकों के प्रश्नों से यह स्पष्ट हुआ कि अब शिक्षक बच्चों के सीखने के स्तर और तरीकों पर विचार करने लगे हैं।
- ब्लॉक स्तर पर सी सी ई स्कूलों की मॉनीट्रिंग समग्रता में नहीं हो सकी।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर सी सी ई लागू करने के क्रम में यह चुनौती रही कि शिक्षकों को गणित, अंग्रेजी और विज्ञान जैसे विषयों में सी सी ई के परिप्रेक्ष्य में योजना निर्माण और शिक्षण।

तृतीय चरण (2013-14)

इस शैक्षिक सत्र के अंतर्गत सम्पूर्ण ब्लॉक को कवर करते हुए लगभग 2500 विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में कार्यक्रम का विस्तार करने का निर्णय लिया गया है। इसके अन्तर्गत डूंगरपुर के दो ब्लॉक (आसपुर व सागवाड़ा) उदयपुर के दो ब्लॉक (सराड़ा व गिरवा) अलवर के दो ब्लॉक (थानागाजी व उमरैण), बीकानेर का एक ब्लॉक (लूणकरणसर) एवं जयपुर के दो ब्लॉक (जयपुर पूर्व व जयपुर पश्चिम) लिये गये हैं।

इस चरण का उद्देश्य यह जानना है कि एक ब्लॉक के सभी विद्यालयों में सी सी ई लागू करने के क्रम में ब्लॉक स्तर पर किस तरह की अकादमिक और प्रशासनिक व्यवस्था करनी होगी। इसके लिए यह आवश्यक है कि ब्लॉक एप्रोच के परिप्रेक्ष्य में व्यापक कार्ययोजना बने और स्कूलों की मॉनीट्रिंग भी उसी के अनुरूप हो।

- जिन ब्लॉक्स में सभी विद्यालय लिए जा रहे हैं उन ब्लॉक्स में सी सी ई को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए दो तरह की समितियां बनाई जाएगी। एक समिति अकादमिक प्रगति को और दूसरी समिति प्रमुखतया प्रशासनिक मुद्दों को देखेगी। अकादमिक समिति में ब्लॉक आर पी, विषयवार एम.टी. अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, डाईट संकाय सदस्य, जिला स्तरीय सर्व शिक्षा अभियान कार्यालय के प्रतिनिधि और जिला प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी/प्रतिनिधि शामिल होंगे। समिति समय-समय पर सी सी ई विद्यालयों के प्रधानाध्यापक प्रतिनिधि और शिक्षक प्रतिनिधि भी आमंत्रित किए जाएंगे। यह समिति प्रतिमाह बैठक कर सी सी ई की प्रगति पर चर्चा करेगी और राज्य स्तर पर होने वाली अकादमिक समूह की बैठक में प्रस्तुत करेगी। प्रशासनिक समिति ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में काम करेगी जिसमें अकादमिक समिति के सदस्यों के साथ-साथ जिला कार्यालय के प्रतिनिधि और डाईट के प्रतिनिधि शामिल होंगे।
- इसी प्रकार जिला स्तर पर जिला प्रारम्भिक शिक्षा की अध्यक्षता और डाईट प्राचार्य की सहअध्यक्षता में एक समिति का गठन किया जाएगा। यह समिति प्रमुखतया सीसीई के क्रियान्वयन के प्रशासनिक मुद्दों को देखेगी। समिति में अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक, ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी, सहायक जिला परियोजना समन्वयक (सीसीई), ब्लॉक के सीसीई कार्य को देख रहे आर.पी., डाईट फैकल्टी व एकीकृत बाल विकास परियोजना के अधिकारी एवं शिक्षक सम्मिलित होंगे जो मासिक समीक्षा बैठक आयोजित करेंगे।
- राज्य स्तर पर भी एक कोर टीम बनेगी जिसमें ब्लॉक स्तर की शैक्षिक समितियों के प्रतिनिधि और राज्य संदर्भ संस्था के साथ-साथ एस आई ई आर टी और अन्य सहयोगी संस्थाएं भी शामिल होंगी।
- सम्पूर्ण ब्लॉक के अतिरिक्त सी सी ई स्कूलों वाले ब्लॉक्स और जिलों में भी ब्लॉक एवं राज्य स्तरीय समितियों का गठन किया जाएगा। यहाँ डाईट से यह अपेक्षा होगी कि डाईट अपने नेतृत्व में नियमित रूप से सी सी ई की गतिविधियों की मॉनीट्रिंग करे और आवश्यकतानुसार संबलन भी प्रदान करें।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से जुड़ी शब्दावली

1. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) का अर्थ विद्यार्थी के स्कूल-आधारित मूल्यांकन व्यवस्था से है, जो विद्यार्थी के विकास के सभी पक्षों पर ध्यान देती है।
   (अ) सी.सी.ई. के 'सतत' पक्ष आकलन की 'निरंतरता' (continual) और बार-बार करने (आवर्तन-periodicity) पर ध्यान देता है।
   (ब) सतत का संदर्भ (आशय) शिक्षण के दौरान सतत अवलोकनों और उन पर आधारित समीक्षा तथा योजना की निरन्तरता है। रचनात्मक आकलन (Formative Assessment) सीखने-सिखाने के दौरान बच्चों की स्थिति, प्रगति एवं आवश्यकता से व्यवस्थित रूप से अवगत रहने एवं उसके आधार पर शिक्षण योजना बनाने और लागू करते रहने की सतत प्रक्रिया है। इसके अंतर्गत दरअसल बच्चों का नियमित आकलन दर्ज करना ही रचनात्मक आकलन है।
   (स) आवर्तन का अर्थ है-पाठ्यक्रमीय लक्ष्यों में उपलब्धि स्तर के परीक्षणों तथा मूल्यांकन की विविध तकनीकों का उपयोग करते हुए निश्चित अवधि के अंत में संबंधित अधिगत लक्ष्यों में उपलब्धि (performance) के स्तर का मूल्यांकन, योगात्मक मूल्यांकन-Summative Evaluation है।
   (द) 'व्यापक' (Comprehensive) अवयव बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के मूल्यांकन पर ध्यान देता है।
2. **आकलन/मूल्यांकन उपकरण** : अवलोकन अभिलेखन, चैकलिस्ट, मौखिक प्रश्न, प्रश्नपत्र, कार्यपत्रक, प्रदत्त कार्य, गतिविधि, पोर्टफोलियो, प्रोजेक्ट-कार्य एवं निदानात्मक परीक्षण आदि।
   (अ) **सतत अवलोकन अभिलेखन** : विविध गतिविधियों एवं अवसरों पर (यथा, सामूहिक कार्यों, व्यक्तिगत कार्यों, कक्षा शिक्षण, खेल आदि) किए गए अवलोकन के आधार पर, बच्चे की कार्य स्थिति, शैली एवं स्तर के सम्बन्ध में शिक्षक द्वारा समय-समय पर आवश्यकतानुसार टिप्पणी/सुझाव दर्ज करना।
   (ब) **चैकलिस्ट** : चैकलिस्ट एक ऐसा दस्तावेज है जो कि शिक्षकों को यह बताता है कि कक्षावार पाठ्यक्रम क्या है, उसे किस प्रकार वर्गीकृत किया गया है, कक्षा वार एवं विषयवार अधिगम क्षेत्र क्या हैं। अधिगम क्षेत्र के सूचन कौनसे हैं। साथ ही यह दस्तावेज यह भी सुविधा देता है कि बच्चों का प्रारम्भिक स्तर आकलन कर उनकी पाठ्यक्रम के अनुरूप नियमित प्रगति को दर्ज किया जा सके तथा बच्चों के स्तरानुसार शिक्षण/समूह शिक्षण योजना भी दर्ज की जा सके।
   (स) **पोर्टफोलियो** : समय की एक निश्चित अवधि में विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्यों में से उसके सीखने की प्रकृति,

स्थिति/स्तर, उपलब्धि तथा प्रगति पक्ष के चरणों को प्रदर्शित करने वाले नमूनों का संग्रह है। ये सामग्री रोजमर्रा के काम से भी हो सकती है या फिर विशेष तौर पर किए गए कार्यों या जाँचों/अवलोकनों से ली जा सकती है।

पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन प्रक्रिया

कक्षा 1 से 5 तक के पाठ्यक्रम को कक्षावार दो भागों में विभाजित करते हुए कुल 10 मॉड्यूल्स की एक शृंखला में अधिगम उद्देश्यों को व्यवस्थित किया गया है। जिनमें कक्षावार क्रमशः मॉड्यूल क्रमांक 1 व 2 रखे गए हैं।

शिक्षण-सत्र को पाँच-पाँच माह के दो टर्म में विभाजित किया गया है। प्रथम-टर्म, जुलाई से नवम्बर तक तथा द्वितीय-टर्म, दिसम्बर से अप्रैल तक। प्रत्येक मॉड्यूल पर कार्य करने के लिए एक टर्म का समय निर्धारित किया गया है।

प्रत्येक मॉड्यूल के अधिगम लक्ष्य आगे दो भागों/खण्डों में विभाजित हैं, भाग-एक तथा भाग-दो। प्रत्येक भाग पर कार्य करने के लिए लगभग 2 माह व 15 दिन का समय निर्धारित किया गया है। अपेक्षा यह है कि ढ़ाई माह की अवधि में एक भाग को पूरा करने के लिए लगभग 55-60 कार्य-दिवस उपलब्ध हो सकेंगे। दिए गए चार्ट से सम्पूर्ण योजना की संरचना को समझा जा सकता है-

रचनात्मक आकलन की सतत प्रक्रिया : शिक्षक योजनानुसार निर्धारित मॉड्यूल के भाग/खण्ड-एक पर शिक्षण करते हुए : अवलोकन-अभिलेखन, चैकलिस्ट, पोर्टफोलियो, होमवर्क, कार्यपत्रक, बातचीत एवं प्रोजेक्ट गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण एवं अधिगम का सतत आकलन करते रहेंगे। इस आकलन प्रक्रिया से बच्चों के सीखने की प्रक्रिया एवं परिणामों के बारे में निरंतर प्राप्त हो रही सूचनाओं के आधार पर बच्चों के समूहों/उपसमूहों के शिक्षण हेतु पाक्षिक योजना बनाते हुए कार्य किया जाना अपेक्षित है। कार्य के दौरान किए गए आकलन के आधार पर समीक्षा, करते हुए योजना में आवश्यकतानुसार मध्यवर्ती परिवर्तन करेंगे। जिसे समीक्षा के साथ दर्ज किया जाएगा। इसी प्रकार आगामी पक्ष की योजना के निर्माण करते हुए निरन्तर कार्य किया जाना अपेक्षित है। **कार्ययोजना, शिक्षण, आकलन, समीक्षा, योजना में आवश्यकतानुसार मध्यवर्ती परिवर्तन (उपयुक्त शिक्षण) एवं आगामी योजना'** की एक अन्तर्गुथित (एक-दूसरे के अन्दर बुनी हुई) तथा सतत प्रक्रिया शिक्षण-अधिगम के सुधार का आधार होगी।

इस प्रक्रिया से कार्य करते हुए मॉड्यूल-पाठ्यक्रम के भाग/खण्ड-एक का कार्य दो माह में सम्पन्न किया जाएगा। साथ ही 15 दिन मॉड्यूल के भाग/खण्ड प्रथम से सम्बन्धित कार्य का समेकन एवं आवश्यकतानुसार उपचारात्मक शिक्षण के लिए निर्धारित है। इस अवधि में किए गए सतत-आकलन के आधार पर प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम के संबंध में प्रथम योगात्मक मूल्यांकन किया जाना अपेक्षित है। सभी विद्यार्थियों के योगात्मक मूल्यांकन को दर्ज करने का कार्य 10 से 20 सितम्बर के मध्य सुनिश्चित किया जाना अपेक्षित है।

इसी प्रकार आगामी 2 माह में मॉड्यूल के भाग/खण्ड-दो पर कार्य करते हुए निर्धारित अवधि (20 से 30 नवम्बर) में प्रत्येक विद्यार्थी का द्वितीय योगात्मक मूल्यांकन दर्ज किया जाना अपेक्षित है। टर्म के अन्त में दिए गए विषय विशेष के संदर्भ में उच्च स्तरीय कौशल/सूचकों को उसी अवधि के दौरान चैकलिस्ट में बच्चों की निरन्तर हो रही प्रगति के आधार पर दर्शाया जाएगा।

मॉड्यूल के दोनों भागों/खण्डों पर किए गए कार्य एवं उनके संबंध में दोनों योगात्मक मूल्यांकनों से प्राप्त सूचनाओं की समीक्षा की जाएगी। अधिगम स्थिति, प्रगति एवं आवश्यकता को पहचानते हुए आगामी टर्म के मॉड्यूल की योजनाओं का निर्धारण किया जाना अपेक्षित है।

इस प्रक्रिया से पाँच माह की अवधि में एक मॉड्यूल के दोनों भागों/खण्डों पर कार्य सम्पन्न करते हुए दो योगात्मक मूल्यांकन सम्पन्न होंगे। इसी तरह आगामी पाँच माह में (दिसम्बर से अप्रैल तक) अगले-मॉड्यूल पर शिक्षण कार्य एवं सतत मूल्यांकन किया जाना अपेक्षित है। जिसका समयचक्र निम्नवत् रहेगा :- **तृतीय योगात्मक मूल्यांकन 10 से 20 फरवरी एवं चतुर्थ योगात्मक मूल्यांकन 15 से 25 अप्रैल के मध्य।**

बच्चों की प्रगति को फार्मेटिव एवं समेटिव फार्मेट में दर्ज करने के लिए ग्रेड दिया जाना तय किया गया है। इसका आधार इस प्रकार है:-

A-स्वतंत्र रूप से कर लेता है।

B-शिक्षक की मदद से कर पाता है।

C-विशेष मदद की आवश्यकता है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय का स्वरूप

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन दरअसल सीखने सिखाने या दूसरे अर्थ में शिक्षक व्यवस्था में आमूलचूल बदलाव की बात है। यह सिर्फ मूल्यांकन प्रक्रिया की बात नहीं करता बल्कि यह विद्यालय को उस उत्तरदायित्व को पूरा करने का अवसर देता है जिसके लिए विद्यालय नामक संस्था की संकल्पना की गई है। अतः सतत एवं व्यापक मूल्यांकन लागू करना एक समग्र दृष्टि की अपेक्षा करता है। एक विद्यालय को इस व्यवस्था को समग्रता में अपनाना होगा और विद्यालय की सभी प्रक्रियाएं इसकी पूरक के रूप में होंगी।

- शिक्षकों को अपनी शिक्षण योजना में बदलाव करना होगा।
- पाठ्यक्रम का प्रबंधन इस प्रकार करना होगा कि दक्षताओं पर समग्रता के साथ काम किया जाए।
- बच्चों का नियमित मूल्यांकन करना होगा।

- कक्षा प्रबंधन एवं समय प्रबंधन को बच्चों के मूल्यांकन के आधार पर लचीला बनाना होगा।
- विद्यालय में मूल्यांकन के उपकरणों और तरीकों में बदलाव करना होगा।
- बच्चों की प्रगति को दर्ज करने के ऐसे तरीके अपनाने होंगे जो बच्चों के बारे में शिक्षा के उद्देश्यों के परिपेक्ष्य में जानने आवश्यक हों।
- शिक्षण अधिगम सामग्री इस तरह तैयार करनी होगी जो कि अंततः बच्चों को ज्ञान के सृजन के अवसर देती हो।
- प्रधानाध्यापक को नियमित रूप से शिक्षकों के साथ सी सी ई के क्रियान्वयन की प्रगति की समीक्षा करनी होगी और आवश्यकता पड़ने पर शिक्षकों को सहयोग देना होगा। यदि आवश्यक हो तो बाहर से भी सहयोग लेना होगा।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में तीन काम किए जाते हैं। पहला यह देखना कि बच्चों ने क्या वो सीखा है जो कि उन्हें सीखना चाहिए? दूसरा उनके सीखने की प्रगति क्या है? और तीसरे उनकी सतत उपलब्धि क्या है? इन तीनों कार्यों में शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह :-

- देखे कि बच्चों का शैक्षिक स्तर क्या है? कक्षा में बच्चों के समूह किस प्रकार बन सकते हैं? किस बच्चे को किस समूह में रखा जाना है? बच्चों के स्तर के अनुसार शिक्षण योजना किस तरह की हो कि प्रत्येक बच्चे को सीखने के समान अवसर उपलब्ध हो और वो अपनी योग्यता के अनुरूप सीख सके और अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर सके। इसके लिए आवश्यक है शिक्षक स्तर पहचान के लिए इस प्रकारके प्रश्न पत्र बनाए कि बच्चों के सही स्तर की पहचान हो सके। यह ध्यान रहे कि बच्चों का सही स्तर पहचान किया जाना अतिआवश्यक है।
- देखे कि बच्चे किस तरह से सीख रहे हैं। यानि बच्चों के सीखने के तरीके क्या है? उनमें क्या किसी बदलाव की गुंजाईश है? शिक्षक इन बातों को अपनी डायरी में अपने अनुसार लिख ले ताकि बाद में उस बच्चे के बारे में लिखते समय यह टिप्पणी काम आ सके। क्यों कि एक शिक्षक के लिए सभी बातों को याद रखना संभव नहीं है। अतः शिक्षक को स्वयं की मदद के लिए यह दर्ज करते रहना चाहिए।
- शिक्षक यह देखे की जो विषय वस्तु बच्चे को सीखनी थी वो सीखी या नहीं। इसे दर्ज किया जा सकता है। कुछ समय बाद पाठ्यक्रम के आधार पर बच्चे की प्रगति का मूल्यांकन किया जा सकता है। यह काम बच्चे के द्वारा किए गए विभिन्न तरह के कार्यों के अवलोकन के माध्यम से किया जा सकता है। यह काम है :-

  बच्चों का कक्षा कार्य या गृह कार्य, बच्चों द्वारा अभ्यास पत्रक पर किया गया कार्य, बच्चों द्वारा समूह पत्र पर किया गया कार्य, बच्चों के द्वारा गतिविधियों के दौरान की गई टिप्पणियां।
- एक विषय के शिक्षक को दूसरे विषय के शिक्षक से नियमित रूप से चर्चा करनी है और बच्चों की अन्य विषयों में प्रगति को भी देखनी है। ऐसा इसलिए आवश्यक है क्यों कि हमें यह जानना आवश्यक है कि बच्चों का रूझान क्या है और उनके साथ किस प्रकार का काम किया जाने की आवश्यकता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के विस्तार में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री

1. **स्रोत पुस्तिका :** सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया पर बेहतर समझ बनाने एवं शिक्षक को कक्षा कक्ष में कार्य करने के दौरान आने वाली चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक शिक्षक के लिए कक्षा 1 से 5 की विषयवार स्रोत पुस्तिका दी जा रही है। पुराने सीसीई विद्यालयों में हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, पर्यावरण अध्ययन, कला शिक्षा एवं कक्षा 1 व 2 के लिए एक स्रोत पुस्तिका पूर्व से ही उपलब्ध है किन्तु नवीन पाठ्य पुस्तकों (1, 3, 5) के आधार पर परिवर्तन आधारित पूरक स्रोत पुस्तिका भी सभी विद्यालयों को दी जा रही हैं। यह पुस्तिका राज्य स्तर से ही प्रत्येक विद्यालय के लिए दी जाएगी। इसका निर्माण, मुद्रण एवं वितरण राज्य स्तर से ही किया जाएगा। ब्लॉक एप्रोच के अंतर्गत शामिल स्कूलों में प्रत्येक विषय की एक समेकित स्रोत पुस्तिका दी जा रही है। इस प्रकार ब्लॉक एप्रोच के अंतर्गत शामिल स्कूलों में कुल 6 ही स्रोत पुस्तिकाएं होंगी। जो विद्यालय पूर्व में सी सी ई विद्यालय थे और ब्लॉक एप्रोच वाले स्कूलों में शामिल हो गए हैं वहां इन्ही 6 स्रोत पुस्तिकाओं का प्रयोग किया जाएगा पूर्व में दी गई 6 स्रोत पुस्तिकाएं और इस वर्ष दी जा रही पूरक स्रोत पुस्तिका का प्रयोग नहीं किया जाएगा।
2. **व्यापक शिक्षण एवं सतत आकलन पंजिका :** सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में प्रत्येक बच्चे का मूल्यांकन दर्ज किया जाना है। इस पंजिका में कक्षा एवं विषय से संबंधित पाठ्यक्रम कार्य योजना, समीक्षा एवं सतत आकलन चैकलिस्ट शामिल है। एक पंजिका में 60 बच्चों के लिए स्थान उपलब्ध है। एक कक्षा के पाठ्यक्रम को दो टर्म में बांटने के कारण प्रत्येक कक्षा के लिये दो पंजिकायें (टर्म 1, टर्म 2) दी जा रही है। योगात्मक मूल्यांकन से पूर्व कक्षाकक्षीय प्रक्रिया के दौरान रचनात्मक आकलन की सतत प्रक्रिया (अवधि दो माह) एवं समेकित/उपचारात्मक शिक्षण की अवधि 15 दिन प्रत्येक टर्म में दो बार रखी गई है। इस फॉर्मेट का निर्माण, मुद्रण एवं वितरण राज्य स्तर से ही किया जाएगा। इसे गत वर्ष मॉडयूल और चैकलिस्ट कहा गया था।
3. **विद्यार्थी मूल्यांकन प्रगति प्रतिवेदन :** इसमें विद्यार्थियों के अधिगम, प्रगति का अंकन विषयवार योगात्मक मूल्यांकन के द्वारा किया जायेगा। योगात्मक मूल्यांकन का आधार प्रति दो माह में किये गये सतत आकलन के आधार पर प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम के संबंध में उपलब्धि होगी।
4. **कार्यपत्रक :** बच्चों को सीखने सिखाने की गतिविधि में पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता होती है। एक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वो समय-समय पर बच्चों को सिखाई गई अवधारणा पर अभ्यास कार्य देते रहें। इसे ध्यान में रखते हुए प्रत्येक कक्षा एवं प्रत्येक अवधारणा पर अभ्यास के लिए कार्य पत्रकों का निर्माण शिक्षकों के द्वारा किया जायेगा तथा इन कार्य पत्रकों पर बच्चों द्वारा

काम करने के बाद इन्हें उनके पोर्टफोलियों में एवीडेन्स के तौर पर शिक्षकों द्वारा सकारात्मक टिप्पणी देकर लगाया जाना चाहिये। इन कार्यपत्रकों को तैयार करने के लिए मासिक कार्यशालाओं में कार्य किया जाना चाहिए।

5. **पोर्टफोलियो फाईल** : सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षक के पास पर्याप्त साक्ष्य होने चाहिऐं। इसके लिए बच्चों के द्वारा किए गए कामों को संकलित किया जाना चाहिए। बच्चों के बेहतरीन कार्यों को रखने के लिए एक फाईल बनाई जा सकती है। इस फाईल को ही पोर्टफोलियों फाईल कहते हैं। प्रत्येक बच्चे के लिए एक फाईल रखी जानी है जिसकी खरीद लगभग 5-6 रुपये की दर से स्कूल फैसेलिटी ग्रांट में से विद्यालय की एस एम सी के द्वारा की जानी है।

6. **आर्टकिट** : मूल्यांकन की व्यापकता के लिए आवश्यक है कि बच्चों को कला पर काम करने के अवसर मिलें। इसके लिए जरुरी है कि विद्यालय में सामग्री उपलब्ध हो। कलर पेपर, ग्लेज पेपर, क्रेयोन्स, स्केच पैन, ड्राईंग शीट, फेविकोल, पेन्सिल, रबर एवं धागे की एक रील बच्चों को उपलब्ध करवाना है। वर्ष 2013-14 में जयपुर, अलवर, डूंगरपुर व उदयपुर के चयनित ब्लॉक्स के विद्यालयों को प्रति विद्यालय 1000 रुपये स्वीकृत किये जा रहे हैं। इसी राशि से यह सामग्री विद्यालय की एस.एम.सी. के द्वारा क्रय की जानी है। पुराने सीसीई विद्यालयों में गत सत्र की उपलब्ध पर्याप्त सामग्री से ही कार्य किया जाना है। ● राप्राशिप, जयपुर

14. गाँधी जयन्ती से विद्यालयों में नैतिक शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/समाज शिक्षा/नैतिक शिक्षा/2013 दिनांक : 27.09.13 ● विषय : नैतिक शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ गाँधी जयन्ती, 2013 से करने के संबंध में आवश्यक निर्देश। ● शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक व उत्तम संस्कारों के बीजारोपण के उद्देश्य से नैतिक शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ दिनांक 02.10.2013 गाँधी जयन्ती के दिन से राज्य के सभी विद्यालयों में विशेष प्रार्थना सभाओं के साथ करने का निर्णय लिया गया है। इस कार्यक्रम के शुभारम्भ एवं भविष्य में निरन्तरता के लिए निम्नलिखित निर्देश दिय जाते हैं-

(अ) जिलास्तरीय आयोजन (एक बड़े विद्यालय में)

1. गाँधी जयन्ती, 2 अक्टूबर 2013 को प्रत्येक जिले में किसी बड़े विद्यालय में प्रार्थना सभा के आयोजन के साथ इस कार्यक्रम का श्री गणेश किया जावे। इस आयोजन में स्थानीय स्काउट एवं गाइड संगठन का सहयोग लिया जाए। प्रार्थना सभा में विद्यालय स्टाफ एवं विद्यर्थियों के अलावा अभिभावकों/गणमान्य नागरिकों, दानदाताओं, अधिकारियों एवं मीडिया कर्मियों को आमंत्रित किया जाए। **2.** प्रार्थना सभा का यथासंभव जिला मुख्यालय पर स्थित किसी बड़े विद्यालय में आयोजन किया जाये। यदि तहसील स्तर पर किसी विद्यालय में प्रभावी आयोजन हो सकता है तो वहाँ भी यह जिलास्तरीय आयोजन किया जा सकता है।

(अ) विद्यालय स्तरीय आयोजन (प्रत्येक विद्यालय में)

3. विद्यालय स्तर पर गाँधी जयन्ती के दिन भी विद्यालयों में उत्सव मनाया जाता है। अतः आगामी गाँधी जयन्ती 2 अक्टूबर, 2013 के दिन गाँधी जयन्ती उत्सव में अनिवार्य रूप से प्रार्थना सभा का आयोजन कर नैतिक शिक्षा कार्यक्रम का आगाज किया जावे। विद्यालय स्तर पर भी अभिभावकों, दानदाताओं एवं स्थानीय गणमान्य नागरिकों आदि को आमंत्रित किया जावे। अब यह कार्यक्रम विद्यालय का दैनन्दिनी कार्यक्रम होगा जिसके लिए निम्नांकित बिन्दुओं की पालना सुनिश्चित करवाएं।

1. नैतिक शिक्षा एवं उत्तम संस्कारों से संबंधित कार्यक्रम सामान्य शिक्षण अधिगम की भांति विद्यालय का एक अंक होगा। **2.** प्रतिदिन होने वाली प्रार्थना सभा में अध्यापकों द्वारा किसी न किसी नैतिक विषय पर छात्र-छात्राओं को सम्बोधित किया जाएगा। सम्भावित विषयों की एक सूची नीचे रही है। **3.** शनिवार को आयोजित होने वाली बाल सभा में भी नैतिक शिक्षा से संबंधित कहानी, नाटक, कविता, भाषण जैसे गतिविधियों को प्राथमिकता के साथ सम्मिलित किया जाए। **4.** विद्यालय में कार्यरत हिन्दी/संस्कृत भाषा के शिक्षक नैतिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रभारी होंगे। वे अन्य शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं को भी इस संबंध में लिखने, पढ़ने और बोलने के लिए प्रेरित करेंगे। **5.** प्रतिदिन प्रार्थना सभा तथा शनिवारीय बालसभा में प्रस्तुत किए जाने वाले विचारों एवं कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण एक रजिस्टर में संधारित किया जाएगा जिसका निरीक्षण अधिकारियों द्वारा अवलोकन किया जाएगा।

प्रार्थना सभा एवं शनिवारीय बालसभा में नैतिक शिक्षा एवं उत्तम संस्कारों के लिए उद्बोधन के लिए कतिपय महत्वपूर्ण विषयों की सूची इस प्रकार है-

1. बालिका संरक्षण : हमारा दायित्व बालिका पढ़े, राष्ट्र आगे बढ़े। **2.** कन्या भ्रूण हत्या है अभिशाप लड़का-लड़की एक समान, करें हम बेटी का सम्मान। **3.** बालिकाओं के कानूनी अधिकार। **4.** पर्यावरण की सुरक्षा कर विश्व का कल्याण करें। **5.** पशु पक्षियों का जीवन बचाएं। **6.** माता-पिता की सेवा करना हमारा धर्म है। **7.** बड़े-बुजुर्ग परिवार व समाज के अनमोल रत्न है। **8.** मातृशक्ति-राष्ट्र शक्ति, आओ महिलाओं का सम्मान करें। **9.** मातृ देवो भवः आइऐ माँ के कार्यों में हाथ बटाएं। **10.** अनाथ बालक-बालिकाओं के प्रति सुरक्षा के हाथ। **11.** विशेष आवश्यकता वाले विकलांग बालकों के प्रति हमारा फर्ज। **12.** परिवार के प्रति उत्तम भाव हो हमारे मन में। **13.** संयुक्त परिवार, सुरक्षा का आगार। **14.** एक भलाई का काम रोजाना करें। **15.** विद्यालय परिसर के प्रति संरक्षण का भाव का हो विकास। **16.** राष्ट्रीय सम्पत्ति की सुरक्षा, हमारा दायित्व। **17.** स्वच्छता है स्वास्थ्य का आधार-स्वच्छ रहें, स्वस्थ रहें, सुखी रहें। **18.** परिश्रम में निहित है सफलता। **19.** सामुदायिक जीवन सुरक्षित जीवन। **20.** एक सप्ताह में एक दिन का उपवास, उपवास की महिमा।

उपर्युक्त विषयों पर आलेख तैयार करवा कर विभागीय पत्रिका नया शिक्षक के जुलाई-सितम्बर 2013 अंक को नैतिक शिक्षा विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। जिसकी प्रति शीघ्र ही आपको प्राप्त हो जाएगी। इसे प्राथमिकता प्रदान करें। ● (डॉ. वीना प्रधान) ● नदेशक ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर)

15. निदेशालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों के ई-मेल पते

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● अधोहस्ताक्षरकर्ता के ध्यान में आया है कि कतिपय मामलों में निदेशालय से अधीनस्थ कार्यालयों एवं अधीनस्थ कार्यालयों से निदेशालय के मध्य आदेश/निर्देश/परिपत्र/सूचना एवं विधानसभा प्रश्नों का आदान-प्रदान डाक द्वारा करने पर समय पर मिल नहीं पाते जिस कारण राजकीय कार्य प्रभावित होता है।

अतः समस्त कार्यालयाध्यक्ष एवं ग्रुप अधिकारी/समस्त अनुभाग अधिकारी निदेशालय को निर्देशित किया जाता है कि कार्य में गतिशीलता हेतु वर्तमान विज्ञान एवं तकनीकी संचार साधनों का समुचित उपयोग करते हुए सभी प्रकार के आदेश/निर्देश/परिपत्र/सूचना एवं विधान सभा प्रश्नों आदि का सर्वप्रथम ई-मेल से सम्बन्धित अधीनस्थ कार्यालयों/निदेशालय के अनुभागों को भिजवाना सुनिश्चित करें। निदेशालय के अनुभागों व अधीनस्थ कार्यालयों के ई-मेल पते संलग्न है। सभी अधिकारी अपने कार्यालय/अनुभाग के ई-मेल आईडी से पत्र व्यवहार करेंगे। ● (डॉ. वीना प्रधान) ● निदेशक ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक शिविरा-माध्य/कम्प्यूटर/50609/10-11/दिनांक : 23.8.13

E-mail IDs of Sections of the Secondary Education, Rajasthan, Directorate, Bikaner

S.No.	Section	Mail ID
1	DIRECTOR	commsecedu@yahoo.com
2	Director Personal Section	chaudharyac49@gmail.com, vermahr59@gmail.com, pbhatnagarkmsb22@gmail.com, navratansainibkn@gmail.com
3	GAD	dir.sec.gad@gmail.com
4	TT Cell	dir.sc.ttcell@gmail.com
5	C Section	educ-sec@yahoo.com
6	Secondary Section	secondarydd@gmail.com
7	Sports Section	sec.sportsbkn@yahoo.com
8	Monitoring	secedumonit@yahoo.in
9	Statistics	ddstatesec@gmail.com
10	AB Sec	absecsecedu@gmail.com
11	Planning	secyojana@gmail.com
12	Legal	sec.legalbkn@yahoo.com
13	Scholarship	seceduschol@gmail.com
14	I.C.T.	commseceduict@gmail.com
15	Vidhan Sabha	vspbikaner2011@gmail.com
16	Shivira	teacher.today@yahoo.com
17	Viggilance	vigilancesecedu@gmail.com
18	Cash	dseddadm@gmail.com
19	Budget	caosecedu@gmail.com
20	RMSA	successbik@yahoo.com
21	Seniority	sec.seniority@yahoo.com
22	Grant in Aid	giabkn@gmail.com
23	Computer	compsecedu@gmail.com
24	Est. F	dirssecedu.estf.raj@gmail.com

E-mail IDs of DD and Deo Offices of Secondary Education Rajasthan

मण्डल का नाम	जिले का नाम	Mail ID
Kota	DD Kota	kotadd@yahoo.in
	DEO SEC. Kota	deoskota@gmail.com
	DEO SEC Bundi	dsebundi@gmail.com
	DEO SEC Baran	deobaran@gmail.com
	DEO SEC Jhalawar	dsejhalawar@gmail.com
Udaipur	DD Udaipur	udaipurdd@yahoo.in
	DEO SEC-I. Udaipur	deosecfirstudaipur@gmail.com
	DEO SEC-II. Udaipur	udrdeosec@gmail.com
	DEO SEC Rajsamand	adpcrmsarajsamand@gmail.com
	DEO SEC Banswara	deobsw@gmail.com
	DEO SEC Chhitor GR.	adpcrmsachittorgarh@gmail.com
	DEO SEC Pratap Garh	deo_pghsec@yahoo.in
	DEO SEC Dungarpur	deosecdpr@gmail.com
Ajmer	DD Ajmer	ajmerdd@yahoo.in
	DEO SEC-I, Ajmer	deosiajmer@gmail.com
	DEO SEC-II, Ajmer	deosecondajmer@gmail.com
	DEO SEC-I, Nagaur	deongr1@gmail.com
	DEO SEC-II, Nagaur	deosecondnagore@gmail.com
	DEO SEC-I, Bhilwara	deo1bhilwara@gmail.com
	DEO SEC-II, Bhilwara	deosec2_bhilwara@yahoo.in
	DEO SEC-Tonk	ictcelltonk@gmail.com adpcrmsatonk@gmail.com
Jodhpur	DD Jodhpur	ddsecedujodbpur@gmail.com
	DEO SEC. Jaisalmer	deo.sec.jaisal@gmail.com
	DEO SEC. Jodhpur	deosecedu@yahoo.in
	DEO SEC. Sirohi	deosecsirohi@gmail.com
	DEO SEC. Pali	deosecpali@gmail.com
	DEO SEC. Jalore	deo.sec.jalore@gmail.com
	DEO SEC. Barmer	deobarmer.rmsa@gmail.com
	ADEO SEC LEGAL Jodhpur	adeoseclegal@gmail.com
Bharatpur	DD Bharatpur	ddsecbpr@yahoo.in
	DEO SEC-I, Bharatpur	deo1bpr@gmail.com
	DEO SEC-II. Bharatpur	deosec2_bpr@rediffmail.com
	DEO SEC-Dholpur	deo.sec.dholpur@gmail.com
	DEO SEC-Karauli	deoseckarauli38@gmail.com
	DEO SEC-S.Madhopur	deosecswm@gmail.com
Jaipur	DD Jaipur	jaipurdd@yahoo.in ddsecjaipur1@gmail.com
	DEO SEC-I, Jaipur	deosec.jaipur1@yahoo.com
	DEO SEC-II, Jaipur	deojaipurtwo@gmail.com
	DEO SEC-I, Alwar	deo.alwar@yahoo.com
	DEO SEC-II, Alwar	deo2alwar@gmail.com
	DEO SEC-I, Sikar	deosecsikar@rediffmail.com
	DEO SEC-II, Sikar	deosec2@gmail.com
	DEO SEC. Dausa	deodausa.rmsa@gmail.com
	DEO SEC Legal Jaipur	deolegal@gmail.com
Churu	DD Churu	ddchuru1@gmail.com
	DEO SEC-Churu	deo.secchuru123@gmail.com
	DEO SEC-Bikaner	akhtardeo@gmail.com
	DEO SEC-Ganganagar	deo.secsgnr99@gmail.com
	DEO SEC-Jhunjhunu	deosecondaryjjn@gmail.com
	DEO SEC-Hanumangrh	deohg.rmsa@gmail.com

माह : अक्टूबर, 2013	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठक्रमांक	पाठ का नाम
1.10.2013	मंगलवार	जयपुर	11	हिन्दी	3	अपू के साथ ढाई साल
2.10.2013	बुधवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		गांधी जयंती व शास्त्री जयंती (उत्सव)
3.10.2013	गुरुवार	उदयपुर	8	हमारा राजस्थान (सामा. विज्ञान)	6	उद्योग एवं पर्यटन
4.10.2013	शुक्रवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		घर पहली पाठशाला, माँ पहली शिक्षक
7.10.2013	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		शिक्षा का अधिकार
8.10.2013	मंगलवार	जोधपुर	4	विज्ञान	8	ऊर्जा तेरे रूप अनेक
9.10.2013	बुधवार	उदयपुर	7	सामाजिक विज्ञान	9	राज्य सरकार का गठन
10.10.2013	गुरुवार	बीकानेर	8	हिन्दी	5	चिट्ठियों की अनूठी दुनिया (निबंध)
11.10.2013	शुक्रवार	जयपुर	6	हिन्दी	5	अक्षरों का महत्व (निबन्ध)
14.10.2013	सोमवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		सूचना का अधिकार
15.10.2013	मंगलवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		राजस्थान के मुख्य पर्यटन स्थल
17.10.2013	गुरुवार	बीकानेर	5	पर्यावरण अध्ययन	7	अपने रिश्ते अपनी खुशियाँ
18.10.2013	शुक्रवार	जयपुर	4	विज्ञान	5	रख-रखाव वस्त्रों का
19.10.2013	शनिवार	जोधपुर	6	सामाजिक विज्ञान	8	विविधता और एकता
21.10.2013	सोमवार	उदयपुर	9	विज्ञान	8	गति
22.10.2013	मंगलवार	बीकानेर	12	हिन्दी	4	डायरी के पन्ने
23.10.2013	बुधवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		संयुक्त राष्ट्र संघ-एक जानकारी

पंचांग : माह अक्टूबर, 2013

अक्टूबर, 2013					
रवि		6	13	20	27
सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरु	3	10	17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	

● **कार्य दिवस 20, रविवार 04, अवकाश 07, उत्सव 02** ● **1 अक्टूबर**–समय परिवर्तन, एक पारी विद्यालय 10.30 से 4.30 तक एवं दो पारी विद्यालय प्रातः 7.30 से सायं 5.30 तक (प्रत्येक पारी 5 घन्टे) **1–15 अक्टूबर**– यू डाइस के प्रपत्रों का भरा जाना (प्रारम्भिक) **2 अक्टूबर**–गांधी जयंती व शास्त्री जयंती (उत्सव), मण्डल स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, अप्रैल से सितम्बर तक की छात्रवृति का वितरण। **3–4 अक्टूबर**–माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तर पर आयोजन। **5 अक्टूबर**–नवरात्रि स्थापना (अवकाश) **8 अक्टूबर**–बालिका शिक्षा (नवाचारी) प्रारम्भिक शिक्षा के अन्तर्गत ''अध्यापिका मंच'' की द्वितीय बैठक का आयोजन। **12 अक्टूबर**–दुर्गाष्टमी (अवकाश) **13 अक्टूबर**–विजया दशमी (अवकाश) **15 अक्टूबर**–विश्व हाथ धुलाई दिवस का विद्यालयों में आयोजन एवं डी-वर्मिंग दवा का वितरण। **15–20 अक्टूबर**–तृतीय समूह राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (माध्यमिक/प्रारम्भिक), केजीबीवी संभागस्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता। **16 अक्टूबर**–ईदुल जुहा (अवकाश चन्द्रदर्शनानुसार) **17–18 अक्टूबर**–जिला स्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेले के आयोजन। **19 अक्टूबर**–बालिका शिक्षा (नवाचारी) के अंतर्गत मीना मंच में ''मुझे स्कूल अच्छा लगता है'' कहानी का वाचन एवं समूह चर्चा। **21–26 अक्टूबर**–जिला स्तरीय मीना सम्मेलन। **24 अक्टूबर**–संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस (उत्सव) **24–26 अक्टूबर**–द्वितीय परख (सभी कक्षाओं के लिए) **26 अक्टूबर**–बालिका शिक्षा नवाचारी के अंतर्गत मीना मंच में ''अंधेरे में देखना'' कहानी का वाचन एवं चर्चा समूह। **28 अक्टूबर से 7 नवम्बर**–मध्यावधि अवकाश। **31 अक्टूबर**–इन्दिरा गांधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस), समस्त प्रकार की छात्रवृत्तियों के लिए अतिरिक्त बजट की मांग के प्रस्ताव संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक/माध्यमिक) द्वारा निदेशक, प्रारम्भिक/ माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को प्रेषित करना एवं संस्था प्रधान द्वारा स्टाफ की बैठक लेकर विद्यालय के शैक्षिक एवं सहशैक्षिक भौतिक उन्नयन पर विचार-विमर्श कर निर्णय लेना। शिक्षक-अभिभावक संघ की बैठक आयोजित करना एवं विद्यालय विकास योजना का निर्माण करना। **नोट :–** 1. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को प्रदत्त पूर्व मैट्रिक विशेष छात्रवृत्ति के लिए जिला मुख्यालय पर चयन। चयन परीक्षा हेतु आवेदन पत्र संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) से प्राप्त करना, कक्षाध्यापकों द्वारा योजना का प्रचार-प्रसार करना, विद्यार्थियों के आवेदन पत्र संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्य.) को 30 नवम्बर तक प्रस्तुत करना। 2. सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण का आयोजन। (प्रारम्भिक) 3. कम्प्यूटर प्रशिक्षण। 4. रमसा द्वारा छात्रों के लिये शैक्षिक भ्रमण (रमसा)

शिक्षक प्रशिक्षण

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में डाइट की भूमिका

❒ भँवर सिंह सान्दू

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2005 एवं शिक्षा का अधिकार कानून-2009 के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी शिक्षा अन्तर्गत गुणवत्ता सुधार के लिए राज्य सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों की शृंखला में एस.आई.ई.आर.टी. द्वारा नई पाठ्यपुस्तकों के लेखन का कार्य किया गया है। जिनमें कक्षा 1 से 5 तक की समस्त पाठ्यपुस्तकें यथा- कक्षा 1 व 2 के लिए हिन्दी, अंग्रेजी व गणित तथा कक्षा 3 से 5 के लिए हिन्दी, अंग्रेजी, गणित व पर्यावरण अध्ययन एवं कक्षा 6 से 8 के लिए सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया है। इनमें आकलन को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के हिस्से के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक लेखन के साथ ही राज्य में चरणबद्ध रूप से सतत एवं व्यापक मूल्यांकन व्यवस्था लागू कर दी गई है। इसके अन्तर्गत शिक्षकों के सहयोगार्थ विषयवार स्रोत पुस्तिकाएँ एवं आवश्यक विभिन्न सामग्री के आधार पर प्रशिक्षणों के माध्यम से सी.सी.ई. की समझ विकसित की जा रही है। प्रथम चरण के आशातीत परिणामों ने शिक्षकों में ऊर्जा व उत्साह का संचार किया है। यह उत्साह बना रहे इस हेतु निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं।

इसी शृंखला में राज्य स्तर से लेकर विद्यालय स्तर तक जुड़ी सभी संस्थाओं का दायित्व निर्धारित किया गया है। जिला स्तर पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान एक शैक्षिक नोडल संस्थान के रूप में स्थापित है। जिले पर संचालित समस्त शैक्षिक गतिविधियों, कार्यक्रमों, प्रशिक्षणों, नवाचारों, शैक्षिक उन्नयन आदि प्रयासों में डाईट की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का ही एक हिस्सा है। इस बात की सही समझ जिले के सभी शिक्षकों को होनी आवश्यक है ताकि मूल्यांकन व्यवस्था तनाव या भय को जन्म ना देकर बच्चों के सीखने को सुनिश्चित करे। इस क्रम में आवश्यक है कि जिला स्तर पर डाईट अपनी भूमिका को प्रभावी एवं सार्थक बनाए। एस.आई.ई.आर.टी. द्वारा डाईट के लिए प्रतिवर्ष सुझावात्मक वार्षिक कलेण्डर बनाया जाता है। इस वर्ष वार्षिक कलेण्डर में सी.सी.ई. से सम्बन्धित कार्यक्रमों का भी नियोजन किया गया है। डाईट के सी.एम.डी.ई. प्रभाग द्वारा इन कार्यक्रमों का प्रभावी आयोजन शिक्षकों में सी.सी.ई. की समझ को पुख्ता करेगा। डाईट अधिकारियों का सी.सी.ई. विधा आधारित क्षमता संवर्धन समय-समय पर एस.आई.ई.आर.टी. एवं राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद् द्वारा किया जाता है।

जिले के जिन विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विधा आधारित कार्य किया जा रहा है, वहाँ के शिक्षकों को अकादमिक सम्बलन एवं सहयोग देने का दायित्व डाईट के ना केवल सी.एम.डी. प्रभारी वरन् समस्त शैक्षिक अधिकारियों का है, अत: सी.सी.ई. संबंधित कार्यों के प्रभावी एवं सार्थक क्रियान्वयन में डाईट को अपनी कार्य प्रक्रिया में निम्न नवीनीकरण के साथ कार्य सम्पादित करना होगा-

- डाईट को जिला स्तर, ब्लॉक स्तर एवं विद्यालय स्तर पर शिक्षकों के लिए सी.सी.ई. आधारित कार्यक्रमों का प्रभावी नियोजन करना होगा।
- जिला स्तर पर सी.सी.ई. के आर.पी. एवं एम.टी. का समूह चिह्नित कर प्रशिक्षित करना होगा।
- जिले के समस्त शिक्षकों का सी.सी.ई. प्रशिक्षण आधारित प्रोफाईल बनाकर अद्यतन रखना होगा।
- सी.सी.ई. आधारित शिक्षण योजना के विषयवार प्लान,कार्यपत्रक, गतिविधियों का नियोजन, निर्माण सीएमडीई प्रभाग द्वारा किया जाएगा। अपने स्तर पर सुलझाई जा सकने वाली समस्याओं एवं चुनौतियों को लम्बित नहीं रख तुरन्त समाधान करना होगा।
- जिला स्तर एवं ब्लॉक स्तर के सभी संबंधित अधिकारियों एवं अभिकरणों में समन्वयन कर कार्य की गुणवत्ता बढ़ाते हुए प्रगति की रिपोर्ट एसआईईआरटी एवं राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद् को त्रैमासिक उपलब्ध करानी होगी।
- सी.सी.ई. की अद्यतन जानकारी हेतु एस.आई.ई.आर.टी. एवं परिषद् के निरन्तर सम्पर्क में रहकर जिले के शिक्षकों को भी अद्यतन रखना होगा।
- स्कूल एवं कक्षा-कक्ष की स्थिति के मद्देनजर शिक्षकों द्वारा सी.सी.ई. के क्रियान्वयन की चुनौतियों एवं अनुभवों को केन्द्र में रखकर उनके समाधान हेतु अकादमिक समर्थन करने वाली विषयगत कार्यशालाओं का प्रभावी आयोजन करने में सक्रिय भूमिका निभानी होगी।
- डाईट के प्रत्येक शैक्षिक अधिकारी को सी.सी.ई. पर प्रशिक्षित कर जिले के विद्यालयों की सम्बलन योजना बना क्रियान्वित करनी होगी। सम्बलन के दौरान सी.सी.ई. विद्यालयों के शिक्षकों से प्राप्त सुझावों एवं चुनौतियों पर विषयगत कार्यशालाओं में चर्चा करें तथा गुणवत्ता बढ़ाने हेतु प्रयास करें।

उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर डाईट अपनी भूमिका एवं उत्तरदायित्व को समझते हुए सी.सी.ई. कार्यक्रम विस्तार एवं क्रियान्वयन में भरपूर ऊर्जा के साथ सक्रिय सहयोग करें ताकि विद्यालयों में बच्चों के सीखने को सुनिश्चित करते हुए शैक्षिक गुणवत्ता प्राप्त की जा सके।

-निदेशक
एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
फोन 0294-2415202

जिज्ञासा

सी.सी.ई. के तहत पूछे जाने वाले प्रश्न

❒ कुसुम बिष्ट

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के स्केल-अप के प्रथम चरण में सत्र 2012-13 में 3059 राजकीय विद्यालयों एवं स्केल-अप के द्वितीय चरण में सत्र 2013-14 से लगभग 2010 और राजकीय विद्यालयों में लागू करने का निर्णय सम्पूर्ण राज्य में सी.सी.ई. लागू करने की दिशा में उठाया गया ठोस एवं सार्थक कदम है।

सी.सी.ई. की मूलभावना का शिक्षकों तक पूर्ण रूप से सम्प्रेषण न हो सकने के कारण बहुत से अध्यापकों के मन में अनेक प्रश्नों एवं भ्रान्तियों ने जन्म लिया है जिनके कारण उन्हें सी.सी.ई. के क्रियान्वयन में कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ रहा है। इसका सही प्रकार से क्रियान्वयन हो सके, इस कारण से अधिकांशत: पूछे जाने वाले प्रश्नों का संकलन कर स्पष्ट एवं बोधगम्य भाषा के साथ वैधतायुक्त उत्तरों के साथ दिशा प्रदान करने का यह संक्षिप्त प्रयास है, जिससे शिक्षकों को सी.सी.ई. की समझ एवं इसके क्रियान्वयन में सुविधा मिल पाएगी, इसी आशा के साथ...

1. सीसीई क्या है ?

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चों के सीखने की स्थितियों का एक ऐसा नियमित संकलन है, जो कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया के अंतर्गत बदलाव के साथ बच्चों के सीखने की स्थिति एवं गति में परिवर्तन को सहजता से व सम्पूर्णता के साथ समय-समय पर देखते रहने की माँग करता है।

2. सीसीई से संबंधित सामग्री के बारे में जानकारी दीजिए

सीसीई से संबंधित सामग्री कक्षा 1 से 5 तक-कक्षावार एवं विषयवार 2-2 मॉड्यूल, सतत एवं व्यापक विद्यार्थी मूल्यांकन प्रतिवेदन बुकलेट-प्रति बालक 1 जिसके अंदर प्रत्येक विषय से संबंधित प्रपत्रों का संग्रह है, संचयी आलेख प्रपत्र एवं प्रत्येक विषय की एक-एक स्रोत पुस्तिका जो शिक्षक के लिए विषयवार सीसीई से संबंधित एवं विषय से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी देती है।

3. मॉड्यूल 1 व मॉड्यूल 2 क्या है ?

किसी भी कक्षा के एक वर्ष के पाठ्यक्रम को दो भागों में विभाजित किया गया है। पहले पाँच माह और दूसरे पाँच माह। प्रत्येक मॉड्यूल को पुन: दो भागों में रचनात्मक आकलन हेतु विभाजित किया गया है। मॉड्यूल एक सम्पूर्ण पैकेज़ के रूप में है जिसके अंतर्गत पाठ्यक्रम, पाक्षिक योजना, साप्ताहिक समीक्षा एवं अनुभव लेखन, संबंधित चैकलिस्ट हैं। पहले पाँच माह का यह सम्पूर्ण पैकेज़ मॉड्यूल 1 व दूसरे पाँच का सम्पूर्ण पैकेज़ मॉड्यूल 2 कहलाता है।

4. आधार निर्धारण किस प्रकार करना है व उसके बाद किस प्रकार बच्चे को मॉड्यूल में बाँटना है ?

बच्चों के साथ 10-15 दिन कार्य करने के पश्चात बच्चा जिस भी कक्षा में है उस कक्षा से पूर्व की कक्षा से संबंधित योग्यताओं के लिए 'आधार रेखा परीक्षण' प्रपत्र बनाकर बच्चे से करवाया जाएगा यदि वह नहीं कर पाता है तो उससे पूर्व की कक्षा का प्रपत्र देते हुए उसकी शैक्षिक स्थिति को देखा जाएगा। जैसे यदि बच्चा कक्षा 5 में है तो कक्षा 4 से संबंधित प्रपत्र दें यदि उसे भी नहीं कर पाता है तो कक्षा 3 का प्रपत्र दें।ऋ बच्चे का वास्तविक शैक्षिक स्तर की जाँच करते हुए उसे संबंधित मॉड्यूल के अनुसार रखना है और वहीं से उसके साथ कार्य प्रारंभ करना है।

5. पोर्टफोलियो क्या है ? इस में क्या-क्या सामग्री रखी जा सकती है ? बच्चों की पोर्टफोलियो फाइलें विषयवार बनानी हैं या कक्षावार ?

बच्चों के द्वारा किए जाने वाले शैक्षिक कार्यों के संकलन को पोर्टफोलियो कहा जाता है, जिसमें बच्चों की हस्तलिखित सामग्री जैसे-कहानी, कविता, लेख, विषय आधारित विभिन्न अवधारणाओं से संबंधित कार्यपत्रक जिनमें बच्चे द्वारा कार्य किया गया हो, योगात्मक मूल्यांकन के प्रपत्र, तैयार किए गए विज्ञापन, परियोजना कार्य आदि सम्मिलित हैं। इन पत्रकों में शिक्षक के द्वारा टिप्पणियाँ लिखकर लगाई जाती हैं।

प्रत्येक बच्चे की विषयवार पोर्टफोलियो बनाई जा सकती है या प्रत्येक बच्चे की सभी विषयों की एक फाईल भी बनाई जा सकती है जो कि ठीक से व्यवस्थित हो।

6. चैकलिस्ट से क्या-क्या पता चलता है? चैकलिस्ट का उपयोग कहाँ-कहाँ और कैसे किया जा सकता है चैकलिस्ट को अवलोकन करके भरने का आधार क्या है ?

चैकलिस्ट का उपयोग लोग काफी लम्बे समय से अलग-अलग संदर्भों में करते रहे हैं। राजस्थान में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में शिक्षक द्वारा बच्चों के सीखे गए का परिणाम, सीखने की उपलब्धि को आकलित करने के लिए निश्चित लक्ष्य को आधार मानकर अपेक्षित विवरण प्राप्त करने के लिए सीखने-सिखाने के महत्वपूर्ण घटकों को आकलित करने के लिए चैकलिस्ट का इस्तेमाल किया जाता है। इसे भरने के लिए तीन संकेत लिए गए हैं। ए,बी व सी। इनमें क्रमश: अग्रिम स्थिति हेतु-ए, मध्यम स्थिति हेतु-बी और आरंभिक स्थिति हेतु-सी का संकेत चैकलिस्ट में दर्ज़ किया जाता है।

7. रचनात्मक आकलन से क्या तात्पर्य है, इसे किस प्रकार से दर्ज़ किया जाता है ?

शिक्षक योजनानुसार निर्धारित मॉड्यूल के भाग/खण्ड-एक पर शिक्षण करते हुए अवलोकन-अभिलेखन, चैकलिस्ट, पोर्टफोलियो, होमवर्क, कार्यपत्रक, बातचीत एवं प्रोजेक्ट गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण एवं अधिगम का सतत आकलन करते रहेंगे यही आकलन रचनात्मक आकलन कहलाता है, इसे अलग से कहीं और दर्ज़ नहीं किया जाता है।

8. योगात्मक मूल्यांकन क्या है ? इसको किस प्रकार से अंकों में विभाजित किया जाता है? क्या इसके लिए पेपर पेंसिल टैस्ट

आवश्यक है? सालभर में कितनी बार योगात्मक मूल्यांकन किया जाता है?

एक निश्चित अवधि के लिए निर्धारित लक्ष्यों का समेकित लेखा-जोखा योगात्मक मूल्यांकन है। इसमें किसी प्रकार के अंकों का विभाजन नहीं है, यानि कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अंतर्गत अंक प्रणाली का समावेश नहीं है वरन् बच्चों की प्रगति पर टिप्पणी लिखने के पश्चात ग्रेड निर्धारित किया जाता है। सालभर में कुल चार योगात्मक मूल्यांकन लिखे जाने का प्रावधान स्कीम के तहत निर्धारित है।

एक मॉड्यूल के एक भाग पर कार्य हो जाने पर विषय से संबंधित योगात्मक मूल्यांकन पत्र तैयार करके बच्चों के सीखे हुए कार्यों का मूल्यांकन किया जाएगा।

प्रत्येक भाग से संबंधित रचनात्मक आकलन चैकलिस्ट, बच्चों की निरंतर हो रही प्रगति, गृह कार्य, दैनिक कार्य, अभ्यास एवं योगात्मक मूल्यांकन पत्र को आधार बनाते हुए समेकित रूप से योगात्मक मूल्यांकन प्रपत्र में बच्चे के सीखने की स्थिति की टिप्पणी एवं ग्रेड दर्ज की जाती है।

योगात्मक मूल्यांकन में बच्चों को उनके कार्य के अनुसार ग्रेड दिए जाने की व्यवस्था की गई है। तीन स्तरों पर ग्रेड का विभाजन किया गया है :

ए – स्वतंत्र रूप से कर लेता/लेती है।

बी – शिक्षक की मदद से कर पाता/पाती है।

सी – विशेष मदद की आवश्यकता है।

9. पाँचवी/चौथी कक्षा का बच्चा यदि कमज़ोर है तो उसके लिए क्या तीसरी का मॉड्यूल चलेगा। यदि तीसरी स्तर का बच्चा है तो उसे किस मॉड्यूल से पढ़ाया जाए?

पाँचवी/तीसरी...। बच्चे के आधार रेखा मूल्यांकन के आधार पर निर्धारित शैक्षिक स्तर के अनुसार जिस मॉड्यूल के अंतर्गत वह आता है उसी मॉड्यूल के अनुसार उसे पढ़ाया जाएगा।

10. यदि किसी कक्षा पाक्षिक शिक्षण योजना का कार्य निर्धारित समय में पूरी न हो सके तो क्या करें?

ऐसी स्थिति में उस योजना को अगली पाक्षिक योजना के साथ सम्मिलित करते हुए कार्य करवाया जाए।

–चरित्र मनोज, हिन्दी,
बोध शिक्षा समिति, कूकस, जयपुर

इस माह का गीत

लोकराज आया है मेरे देश में

❑ वेद व्यास

लोकराज आया है मेरे देश में
भारत की परिभाषा लिखने जा रहे।
नूतन और पुरातन के संघर्ष में
अधुनातन का अर्थ बताने जा रहे।।

इतिहासों में अमिट नहीं जो हो सके
दो पल को जो सुख की नींद न सो सके
ऐसे पीड़ित ज़नमानों के वास्ते
नये देश का सपना लाने जा रहे

लोकराज आया है मेरे देश में
भारत की परिभाषा लिखने जा रहे।

सदियों से जो भटक रहे हैं भीड़ में
कुंठा से जो गले जा रहे नीड़ में
ऐसे भूखे भगवानों के वास्ते
शस्य श्यामला धरा बनाने जा रहे

लोकराज आया है मेरे देश में
भारत की परिभाषा लिखने जा रहे।

चिन्तन के बोझे से जो लाचार हैं
मानवता के लिये सदा जो भार हैं
ऐसे बोझिल विद्वानों के वास्ते
परिवर्तन के शंख बजाने जा रहे

लोकराज आया है मेरे देश में
भारत की परिभाषा लिखने जा रहे।

तोड़ रहे जो फूलों के आकाश को
मोड़ रहे जीवित रहने की प्यास को
ऐसे बौने दिनमानों के वास्ते
किरणों का परिधान बनाने जा रहे।

लोकराज आया है मेरे देश में
भारत की परिभाषा लिखने जा रहे।

देख नहीं पाते जो नये प्रभात को
डरते हैं जो अंधकार में रात को
ऐसे लाखों इन्सानों के वास्ते
आज़ादी का मंत्र सुनाने जा रहे

लोकराज आया है मेरे देश में
भारत की परिभाषा लिखने जा रहे।

पत्थर पर अंकित करवाते नाम को
खोज रहे जो वन-वन चारों धाम को
ऐसे भोले परवानों के वास्ते
लोकायन का परिचय देने जा रहे

लोकराज आया है मेरे देश में
भारत की परिभाषा लिखने जा रहे।
नूतन और पुरातन के संघर्ष में
अधुनातन का अर्थ बताने जा रहे।।

(इस गीत के रचयिता राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष एवं नामचीन साहित्यकार हैं)
-7/122, मालवीय नगर, जयपुर
मो. 9414054400

शिक्षक सम्बलन

यों करें मासिक कार्यशाला का आयोजन

❒ उषा बापना

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को लागू करने के तहत राज्य में वर्ष 2010 में 60 विद्यालयों में सीसीई का पायलेट प्रोजेक्ट प्रारम्भ किया गया। इसके स्केलअप कार्यक्रम के तहत 33 जिलों के 178 ब्लॉक्स में लगभग 3000 राजकीय विद्यालयों में वर्ष 2012-13 में इसका विस्तार किया गया। इस कार्यक्रम में शामिल राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की समझ बनाने हेतु इसके सैद्धान्तिक पक्ष एवं पायलेट परियोजना के व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित अभिमुखीकरण कार्यशाला मई-जून 2012 में आयोजित की गई किन्तु यह अनुभव किया गया कि मात्र आठ दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने से शिक्षकों में इतनी समझ नहीं बन पाती कि वह इसके अनुसार अपने कार्य को सहजता से सम्पादित कर सके। व्यावहारिक स्तर पर कार्य को करके देखने पर उभरने वाली समस्याएं, चुनौतियों एवं आवश्यकताओं के समाधान हेतु शिक्षकों को नियमित सम्बलन की आवश्यकता रहती है। पायलेट प्रोजेक्ट की सफलता का बहुत बड़ा श्रेय नियमित एवं प्रभावी विषयवार मासिक कार्यशालाओं के आयोजन को जाता है। इस दृष्टि से नियमित कार्यशालाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। यहाँ तक कि शिक्षकों के साथ कार्य करते हुए यह बात स्पष्ट तौर से उनकी ओर से रखी गई कि उन्हें कार्यशालाओं की जरूरत शिक्षक सम्बलन के तौर पर सर्वाधिक है। नियमित कार्यशालाओं से मिलने वाले फीडबैक एवं दस्तावेजीकरण की प्रक्रिया से ही कार्यक्रम के सम्पूर्ण स्वरूप को प्रभावी बनाया जा सकता है।

कार्यशाला आयोजन के उद्देश्य :-

नियमित कार्यशालाओं के आयोजन के सामान्य उद्देश्य निम्नानुसार है :-

- नियमित शिक्षण कार्य के दौरान बच्चों के साथ हुए शिक्षण कार्यों के अनुभवों की शेयरिंग एवं समीक्षा करना। इस के साथ ही शिक्षण कार्य के दौरान उभरने वाली आवश्यकताओं/चुनौतियों के लिये तैयारी करना।
- शिक्षकों का नियमित अकादमिक क्षमताओं का संवर्धन करने हेतु अवसर प्रदान करना तथा शिक्षकों को परस्पर सीखने का अवसर प्रदान करना।
- सामूहिक रूप से शालाओं में किए जा रहे शिक्षण कार्य की मॉनिटरिंग एवं प्रबंधन करना।
- शाला में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान उभरने वाली आवश्यक शिक्षण सामग्री, गतिविधियों और टूल्स की पूर्ति हेतु आपसी विचार विमर्श करके उनका निर्माण करना।
- नवीन संदर्भ सामग्री, जानकारियों, सूचनाओं आदि के बारे में शिक्षक साथियों को अपडेट करना एवं यथा संभव संदर्भ सामग्री उपलब्ध करवाना।

कार्यशाला की तैयारी के प्रमुख पक्ष :-

1. पूर्व तैयारी

- क्लस्टर विद्यालय का चयन एवं उसके अन्तर्गत शामिल होने वाले विद्यालयों की सूची एवं रोडमैप तैयार करना।
- कार्यशाला का समय कार्यशाला का स्थान एवं कार्यशाला समूह का निर्णय कर समय से पूर्व सभी को सूचित करना।
- सामान्यत: किसी भी नियमित शैक्षिक कार्यशाला की योजना नियमित शिक्षण कार्य के दौरान उभरने वाली आवश्यकताओं पर ही निर्मित की जाती है। समस्त संबंधित शालाओं एवं व्यक्तियों से आवश्यकताएं संकलित करके उनका विश्लेषण करते हुए योजना में मुद्दों को वरीयताक्रम में शामिल करना होता है। विषयवार शिक्षकों से शैक्षिक समस्याएं/आवश्यकताएं जानना जैसे विषयवार काम के दौरान आ रही समस्याएं विषयगत अवधारणाएं, आकलन के सूचकों को समझाने एवं उसको शामिल कर योजना तैयार करने में आ रही समस्याएं, उप समूहवार योजना तैयार करने एवं लागू करने में आ रही समस्याएं आदि।
- कार्यशाला संचालन समूह ब्लॉक का आर.पी., विषय विशेषज्ञ-केआरपी, एम.टी., डाईट की फैकल्टी, बोध के विषय विशेषज्ञ मिलकर कार्यशाला की योजना निर्धारित करें। जिसमें इन बातों को सुनिश्चित कर लें जैसे कुछ मुद्दे ऐसे हो सकते हैं जिन पर सामूहिक बातचीत की आवश्यकता है जबकि कुछ मुद्दे ऐसे हो सकते हैं जो विषय विशेष से संदर्भित हैं। सत्रों का विभाजन, सामूहिक सत्र एवं उप समूह में किए जाने वाले कार्य को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।

2. कार्यशाला के दौरान तैयारी के पक्ष

- कार्यशाला के दौरान भी कुछ पक्षों पर संदर्भ व्यक्ति को तैयारी करने की आवश्यकता होगी जैसे कार्यशाला की मिनिट्स नोट करना, सत्रानुसार समस्त सामग्री की उपलब्धि को सुनिश्चित करना।
- यदि संभव हो तो फोटो डॉक्यूमेंन्टेशन करते रहें जिससे कि बाद में प्रतिवेदन लेखन एवं प्रस्तुतीकरण तैयार करने में सुविधा हो।
- कार्यशाला की समाप्ति पर संभागियों से फीडबैक अवश्य लें जिससे कार्यशाला दर कार्यशाला उद्देश्यों की पूर्ति को सुनिश्चित किया जा सके।
- सतत एवं समग्र मूल्यांकन से संबंधित साहित्य के उपयोग एवं उनसे प्राप्त होने वाले सहयोग पर चर्चा करना जिससे उनमें आने वाले समय में सुधार किया जा सके।

3. कार्यशाला के पश्चात

- कार्यशाला का संदर्भ व्यक्तियों द्वारा एक विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन तैयार किया जाना चाहिए।

- साथ ही संदर्भ व्यक्तियों द्वारा कार्यशाला की फोलोअप योजना तैयार करके उसे कार्यान्वित किया जाना चाहिए।
- यदि कार्यशाला उपरान्त शालाओं में वितरण हेतु कोई सामग्री तय हुई है तो समय पर सामग्री पहुँचाना सुनिश्चित करें जिससे कि कार्यशालाओं में निर्मित की गई शिक्षण योजना का निर्धारित समय सीमा में क्रियान्वयन किया जा सके।
- फॉलोअप के दौरान शालाओं में किए गए गतिविधियों के अवलोकनों को इस दृष्टि से व्यवस्थित करते रहें जिससे कि आगामी कार्यशालाओं की योजना निर्माण में इसका उपयोग किया जा सके।

कुछ महत्वपूर्ण बातें

● कार्यशालाओं में भागीदारी को प्रभावी बनाने के लिए शाला समय सारणी को कुछ इस प्रकार व्यवस्थित करना उचित रहेगा जिसमें कि प्रत्येक शिक्षक अधिक से अधिक दो विषय पढ़ाने की जिम्मेदारी लेवें। ● संबंधित ब्लॉक के संदर्भ व्यक्ति एवं विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक मिलकर शाला की समय सारणी को व्यवस्थित कर प्रत्येक शिक्षक को दो विषय से अधिक विषय को पढ़ाने का कार्य नहीं दें। ● कार्यशालाएं केवल अकादमिक तैयारी के लिए हैं। अतः इसमें गैर शैक्षणिक मुद्दों को हतोत्साहित किया जाना चाहिए। ● प्रत्येक शिक्षक कार्यशाला में संक्षिप्त प्रतिवेदन, योजना डायरी या सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पंजिका, पोर्टफोलियो के नमूने, प्रगति पत्रक के नमूने के साथ उपस्थित हो ताकि सत्रों के दौरान अपनी बात को सटीक ढंग से न्यूनतम समय में रख पाए। जरूरत के अनुसार दस्तावेजों की शेयरिंग भी करें। ● कार्यशालाओं का वार्षिक कैलेण्डर पूर्व में ही प्रसारित कर देना चाहिए। यदि कोई परिवर्तन करना आवश्यक हो समय रहते समस्त संभागियों को सूचित किया जाए। ● कार्यशाला से पूर्व विषयवार संभागियों की सूची तय हो जानी चाहिए जिससे कि प्रबन्धन में असुविधा नहीं हो। ● पूर्व निर्धारित योजना को बदल कर आकस्मिक मुद्दों/भाषण आदि से यथा संभव बचें।

-परामर्शक, सीसीई, यूनिसेफ
सर्व शिक्षा अभियान, राजस्थान जयपुर
मो. 9828448743

रीडिंग कैम्पेन-प्राथमिक शिक्षा का स्वागतपूर्ण व कारगर कदम

❒ कमल शर्मा

राज्य सरकार द्वारा सरकारी विद्यालयों में बच्चों को उनके वास्तविक कक्षा स्तर तक लाने के लिए जुलाई माह में शुरू किया गया रिडिंग कैम्पन एक कारगर कदम साबित हो रहा है। जो बच्चे कक्षा 3, 4 व 5 में पढ़ रहे हैं मगर उनका वास्तविक अध्ययन स्तर उस कक्षा के लायक नहीं है। उन बच्चों का स्तर कक्षानुरूप लाने के उद्देश्य से शुरू किया गया यह अभियान अपने सुखद व सकारात्मक परिणाम देने लगा है।

राज्य में विद्यालयों की वस्तु स्थिति को समझने की दृष्टि से हाल में संबलन अभियान के दौरान राज्य में लगभग 18 हजार सरकारी स्कूलों का अवलोकन और आंकलन किया गया और पाया गया कि अधिकांश बालक अपनी कक्षा के अनुरूप उस दक्षता पर नहीं है जो कि शिक्षाक्रम के लिए अपेक्षित है, जहाँ निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के प्रावधानों के अनुसार 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बालक-बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा दी जानी अपेक्षित है इस अधिनियम में बालकों के सर्वांगीण विकास, ज्ञान, अन्तशक्ति व योग्यता के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाना अपेक्षित है साथ ही N.C.F. 2005 भी प्रत्येक बालक को उसके स्तर एवं उसकी गति के अनुरूप शिक्षा देने पर बल दिया गया है, राज्य सरकार इसके लिए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन गतिविधि आधारित शिक्षण लहर शिक्षण आदि कई प्रयासों के माध्यम से सरकारी स्कूलों को बालकों का स्तर उन्नयन हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। उसी शृंखला में रिडिंग कैम्पन का उद्देश्य सरकारी स्कूलों के बालक-बालिकाओं में पढ़ने के तौर तरीकों में हमेशा के लिए ऐसा बदलाव लाना जिससे आगे भविष्य में बच्चे अपनी कक्षा के शैक्षिक स्तर के अनुरूप ही प्रगति करते हुए, नजर आये। रिडिंग कैम्पन इसी दिशा में किया गया प्रयास है, इसका मूल उद्देश्य कक्षा 3, 4 व 5 के जो बालक-बालिकाएँ भाषा और गणित की मूल दक्षमताओं, अवधारणाओं पर समझ नहीं बना पाए हैं उनकी इन पर समझ बना, उन्हें सक्षम बनाना ताकि बालक कक्षानुरूप काम कर सके।

रिडिंग कैम्पन का पहला चरण 1 जुलाई से 31 अगस्त तक रखा गया है कैम्पन के अनुभवों तथा सितम्बर माह में संवलन से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर इसका द्वितीय चरण यदि आवश्यक हुआ तो चलाया जायेगा। इस कैम्पन के दौरान प्रत्येक शिक्षक व प्रधानाध्यापक की जिम्मेदारी तय की गयी है। शिक्षकों को बालकों का स्तर निर्धारण कर स्तरानुसार योजना बनाकर शिक्षण कार्य करके साप्ताहिक मूल्यांकन एवं प्रगति से प्रधानाध्यापक को, माहपरान्त नोडल के माध्यम से ब्लाक कार्यालय व ब्लाक कार्यालय व ब्लाक कार्यालय के माध्यम से जिला कार्यालय व जिला कार्यालय माध्यम से सूचना संकलित कर राज्य की राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद को प्रेषित कर अवगत कराना है।

इस कैम्पन का सबसे मजबूत पक्ष यह है कि इसमें प्रत्येक शिक्षक जो कक्षा 3, 4, 5 को भाषा (अंग्रेजी, हिन्दी, गणित) पढ़ा रहा है उसकी जिम्मेदारी सुनिश्चित की गई है तथा उसको प्रत्येक बालक को कक्षा स्तरानुसार सक्षम बनाना है। प्रधानाध्यापक की भूमिका लीडर की है। यह आवश्यक है कि सुनिश्चित करे कि वह अपनी स्कूल के शिक्षकों व बालक-बालिकाओं की विषयानुसार पुख्ता जानकारी से अवगत रहे तथा प्रगति की सूचना आगे सही-सही भेजे, इससे बालकों के शैक्षिक स्तर में निरन्तर प्रगति होगी, बालकों का हौसला बढ़ेगा, बालकों की पढ़ने व लिखने में आत्म निर्भरता आयेगी, साथ ही साथ शिक्षक का स्वयं पर विश्वास बढ़ेगा।

दुनिया में असंभव कार्य मनुष्य के लिये कुछ भी नहीं है। आवश्यकता है हौसला बुलंद रखने की। दुष्यन्त कुमार की ये पक्तियां सही सिद्ध होती है कि-

ये शाहत्तीर है कि पलको पे उठालो यारो,
अब कोई नया रास्ता तो निकालों यारो।
कौन कहता है आसमा में सुराग नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालों यारो।।

-रॉय कॉलोनी, बाड़मेर
मो. 9413989720

सतत और व्यापक मूल्यांकन

सफलता की कहानी शिक्षकों की जुबानी

1. कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में बच्चों के सीखने की गति एक अनुभव...

अभी रात्रि के 10.30 बजे हैं मेरे विद्यालय के छात्र अब्बास के सीखने सम्बन्धित चिन्ता तथा विद्यालय की आज की प्रक्रिया ने मुझे लिखने को विवश कर दिया। आज विद्यालय के प्रार्थना स्थलिय कार्यक्रम में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य पखवाड़ा कार्यक्रम मनाया जिसके तहत बच्चों ने हाथ धोने के महत्व पर चर्चा की इस चर्चा में अधिकतर बच्चों जैसे साहिल खान, इलियास, रितिक, ने खुलकर चर्चा में भाग लिया मुझे लगता था कि बच्चे इस सम्बन्ध में इतना नही जानते होंगे लेकिन मैं उनकी चर्चा सुनकर हतप्रभ रह गई। इन बच्चों ने इस विषय पर बहुत तार्किक बातचीत की कि हाथ किस तरह किसके द्वारा व क्यों धोने चाहिए? हाथ धोने से अथवा नही धोने से हम पर क्या प्रभाव पड़ेंगे? आज अधिकतर विद्यार्थी आये थे कुछ बालक जो बाजरे की लावणी के कारण अनुपस्थित चल रहे थे वे भी आज विद्यालय में मौजूद थे। एस एम सी सदस्या श्रीमती हसन बसरी स्वयं विद्यालय में अपने बच्चों को छोड़ने आई थी। उनका कहना था कि मैडम अब हमारा काम हो गया है अब बच्चे नहीं रुकेंगे यदि ये रुकते हैं तो मैं इन्हें लेकर स्वयं छोड़ने आउंगी। समुदाय का बढ़ता जुड़ाव और विद्यालय के प्रति रुझान हमें भी काम करने को उत्साहित कर रहा है। हमारे लगातार सम्पर्क के कारण अभिभावक विद्यालय आकर कक्षा-कक्ष प्रक्रिया व उनके बच्चों के सीखने को समझने की कोशिश करने लगे है। यह हमें बहुत अच्छा लग रहा है।

ड्राइंग अध्यापक भी आज विद्यालय में उपस्थित थे बच्चों ने बड़ी तन्मयता से ड्राइंग कार्य को किया ड्राइंग के बाद कक्षा 1 व 2 में बच्चों ने Standup-Sitdown की गतिविधि करवायी इस गतिविधि को बच्चे आसानी से समझ कर एक दूसरे को निर्देश देकर करवा लेते है, इससे बच्चों में अंग्रेजी शिक्षण में रुचि बढ़ती दिखाई दे रही है। खैरूना, एकता, जितेन्द्र अंग्रेजी के मौखिक निर्देशों को बड़ी तत्परता से कर लेते हैं। सन्नी भी इसमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेता है लेकिन निर्देश स्वयं बोल नही पाता है। शाहिद, रघुवीर, अंग्रेजी के लिखित कार्य को सुन्दर व साफ ढंग से करते हैं लेकिन मौखिक गतिविधि के समय काफी सुस्त रहते हैं। मैंने इनसे इस सम्बन्ध में बात भी की है जिससे इसका आज मुझे कुछ असर दिखाई दिया है। संजू ने पूर्व की भांति आज भी सभी गतिविधियों को मुस्कुराकर किया, लेकिन अब्बास की चिन्ता मुझे लगी रहती है क्योंकि उसकी सीखने की गति कुछ धीमी लग रही है। मैंने उसे समझने का काफी प्रयास किया है और उसका उत्साहवर्धन भी किया है। इससे आजकल कुछ समय से उसमें सीखने व लिखने के कार्य के प्रति रुचि बढ़ी है। आज वह ड्राइंग का काम छोड़कर मुझे बुलाने गया। यह सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा कि उसकी सीखने में रुचि बढ़ने लगी है। कुछ समय पश्चात अब्बास ने अपने छोटे भाई असिमुद्दीन को अंग्रेजी की कॉपी देकर काम देखने व लेने के लिए भेजा यह देखकर मुझे खुशी भी हुई और दुख भी हुआ कि वह मेरे सामने आने से हिचक रहा है लेकिन वह सीखने के प्रति रुचि रखता है। एक चिन्ता इस बात की है कि अब्बास के साथ प्रयास के बाद भी कम सीख पा रहा है लेकिन कई बार सीखने के आनन्द की मुस्कुराहट उसके चेहरे पर देखकर मुझे काफी प्रसन्नता होती है। कम से कम बच्चा विद्यालय में भयभीत तो नहीं और विद्यालय आने में रुचि भी लेने लगा है। आजकल उसकी जबान से माई नेम इज अब्बास, मे आई गो टू टॉयलेट, मे आई गो टू ड्रिंक वाटर...जैसे वाक्य सुनकर अच्छा लगता है लेकिन पता नही क्यों जल्दी भूल जाता है।

–मुक्ता यादव

शिक्षिका राप्रावि नगली मुंशी, अलवर

2. विद्यालय में नियमितता, शिक्षण में बढ़ता आत्मविश्वास

हमारे विद्यालय में सी सी ई की प्रक्रिया के तहत काम करने से हमारा समुदाय/अभिभावक के साथ सम्पर्क बढ़ गया है जो बच्चे को समझने में बहुत मददगार साबित हुआ है। जो बच्चे विद्यालय आने में झिझकते थे, वे बच्चे हमारे द्वारा उनके अभिभावकों से की गई बातचीत व घर पर सम्पर्क करने से स्कूल आने में रुचि लेने लगे हैं। मेरे विद्यालय की कक्षा 5 की छात्रा सीमा व मनीषा सैनी जो तीन साल से बहुत अनियमित थी, दोनों अब नियमित विद्यालय आने लगी हैं। उन्हें कक्षा के अन्य बच्चों जैसा समझने में नहीं आने पर वे कुण्ठित महसूस करती थी इसलिए उनका विद्यालय में अधिक मन नहीं लगता था। लेकिन सीसीई के कारण स्तरानुसार शिक्षण से ऐसे बच्चों को सीखने में बहुत फायदा हुआ है। अब ये दोनों छात्रायें सीखने की जिज्ञासा के साथ प्रत्येक कार्य में अपनी भागीदारी निभाती हैं।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के अन्तर्गत पढ़ाते हुए हम बच्चे के विवेक, अकादमिक स्तर, क्षमता, रुचि आदि को ध्यान में रखते हुए बच्चे की समझ के अनुसार वह किस पायदान पर खड़ा है, उसे उसी स्तर से शिक्षण कार्य कराया जाता है जिससे बच्चों का शैक्षणिक विकास के अन्तर्गत भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, व्यावहारिक, सामाजिक गुणों का विकास होता हैं। बच्चे भी निर्भीक तथा मुखर बनते हैं, इस मुखरता का एक अनुभव मुझे याद है। मैं कक्षा तीन में गणित विषय पढ़ाती हूं। दो-तीन दिन से ज्यामितिय आकृतियों के बारे में बातचीत हो रही थी। इसी दौरान मैंने बच्चों को बेलन की आकृति तथा नाम के बारे में बताया। बेलन में हमें कौन-कौन सी ज्यामितिय आकृतियां दिखती है। बेलन की जैसी आकृति वाली कौन-कौन सी चीजें होती हैं। इसी प्रश्नोतरी के दौरान एक बच्चे ने रोटी बेलने वाले बेलन की बात भी कही। बात को आगे बढ़ाते हुए मैने बताया कि इस आकृति को खोलने पर आयत वर्ग व काटने पर वृत की आकृतियां निकलती हैं। अर्थात बेलन कैसे बना यह बात बताई। बच्चों के साथ बेलन के बारे में काफी चर्चा हो चुकी थी, कुछ समय पश्चात यूनीसेफ की तरफ से एक विजिट हमारे स्कूल में आई। इसमें जितेन्द्र जी ने बच्चों की नोट बुक में काम हुआ देख बेलन के बारे में पूछा कि बेलन

को काटने पर कौनसी आकृति निकलेगी। तभी एक बच्चे ने तपाक् से उत्तर दिया– सर लकड़ी। यह सुनकर मुझे भी हँसी आ गई और जितेन्द्र जी भी हँसने लगे और कहा कि यह अपने हिसाब से सही कह रहा है क्योंकि इसने हमारा बताया उत्तर नहीं बताया इसमें अच्छी बात यह है कि इसने अपने अनुभव के आधार पर और अपनी समझ से जवाब दिया है और बड़े सहज तरीके से। बच्चों में इतनी मुखरता सीसीई की प्रक्रिया के द्वारा पढ़ाने से ही आई है। हर दिन का सफल संवाद इस सहज व स्वाभाविक सहभागिता की रीढ़ रहा है। बच्चे के साथ किसी समस्या के समाधान हेतु उसके स्तर व सरल भाषा में विचारणीय मुद्दे पर क्रमशः छोटे-छोटे प्रश्नों के द्वारा चर्चा की जाती है। सीसीई के कारण हम इस बात को समझ पाये हैं कि किसी समस्या अथवा प्रश्न का समाधान/सुलझाने का तरीका एक ही नहीं होता है। प्रत्येक बच्चे की अपनी अपनी क्षमता, अनुभव व तार्किक विश्लेषण के आधार पर समाधान के कई तरीके खोजे जा सकते हैं। ऐसा कक्षा-कक्ष शिक्षण के दौरान कई बार सम्भव हुआ है। –फूलम यादव

शिक्षिका, राबाप्रावि, उमरैण

3. सतत व व्यापक मूल्यांकन आशा से अधिक

सतत एवं व्यापक आकलन के संदर्भ में विभिन्न प्रशिक्षणों के बाद विचार विमर्श करने से पुरानी सोच में बदलाव आया है तथा सीसीई की विधा में काम करते हुए विषय विशेषज्ञों का साथ समय-समय पर सुझाव व समस्या समाधान के रूप में मिला, जिससे यह प्रक्रिया शुरूआत में लड़खड़ाती स्थिति में होने के बावजूद अब काफी सुदृढ़ स्थिति में दिखाई देने लगी है। शुरूआत में यह विधा काफी मुश्किल लग रही थी, लेकिन अब इस विधा से काम करते हुए शाला व बालकों में जो शैक्षिक व व्यावहारिक जीवन जो बदलाव आये उन्हें मैं बताना चाहूंगा–

1. बालकों का शिक्षक से सीधा जुड़ाव हुआ है। बालक परीक्षा के भय से मुक्त हुए है।
2. बालकों के स्तरानुसार शिक्षण से बालकों में शिक्षा के प्रति लगाव व ठहराव में वृद्धि हुई है।
3. टीएलएम में बच्चों की भागीदारी अधिक होने से टीएलएम बालकों द्वारा विद्यालय में ही निर्मित किया जाने लगा है।
4. शिक्षक व विद्यार्थी को मित्रवत रिश्तों के कारण बालकों के व्यवहार व उनकी सीखने की आदतों को समझने में मदद मिली है, जिससे शिक्षक नई नई गतिविधियों से कार्य कर पा रहा है।
5. बालकों में सृजनात्मकता का विकास हुआ है जैसे-आर्ट में विभिन्न प्रकार के मॉडल व चित्र बनाना, संगीत में बालगीत, बाल कविता, बाल पहेली बे-झिझक सुनाना व हाव-भाव से तुक बन्दी करते हुए अभिनय कर पाना।
6. समूह शिक्षण में कार्य करते हुए बालकों में शैक्षिक उन्नयन में आपसी सहयोग की भावना का विकास प्रमुखतः रहा है।
7. बच्चों में स्व-मूल्यांकन की क्षमता का विकास हो पाया है जिससे उनमें सीखने की जिज्ञासा बढ़ी है। शिक्षण के दौरान बालकों में जिज्ञासु व खोजपूर्ण प्रवृति का विकास हो पाया है। बालकों में अपना पक्ष रखने के प्रति खुलेपन की भावना का विकास हुआ है।

इस प्रकार सभी शिक्षकों द्वारा बाल केन्द्रित शिक्षण व्यवस्था में कार्य करते हुए आनन्द का अनुभव किया जा रहा है। इससे बच्चे व शिक्षकों के व्यवहार व रिश्तों में काफी नजदीकी आई हैं। अतः कहा जा सकता है कि सीसीई के कारण बच्चों का सीखना सुनिश्चित हो सका है। –कल्याण सहाय वर्मा

प्रधानाध्यापक,
राउप्रावि दूदी की ढाणी, पानागाची, अलवर

नई कलम

हौंसले टूटे नहीं...

कह दो आसमां की अवमाल
अभी कटे नहीं,
पंख जो टूटे तो क्या
हौंसले टूटे नहीं।
आजमा कर देखो की
हिम्मत हमारी आज,
मंजिलें पाकर रहेंगे लक्ष्य
को चूकें नहीं।
मुश्किलों से चूर-चूर
चाहे राह में हमको किया।
क्या बतायें रास्ता कैसे ये
हमने तय किया।
हम लाख गिरे, हर बार,
उठे हर बार ही।
उठ कर ये कहा-
रास्ते बता दो चाहे कितने भी
दुर्गम, और कठिन,
पाकर रहेंगे।
हम तुम्हें, देखना,
तुम एक दिन।
एक पल भी कम्पन्न
नहीं होगी इन हाथों में
हर कर मुश्किलों से।
आजमा कर देखो की
हिम्मत हमारी आज,
मुश्किलें नहीं तोड़ सकती हौंसले,
जो बुलन्दी पर है हमारे आज।
हम कठिनाई के पलों
में भी प्रेम राग गाएंगे,
बता देंगे जमाने को आज।
रास्ते बता दो चाहे कितने भी
दुर्गम, और कठिन,
पाकर रहेंगे हम।
देखना, तुम एक दिन।

–किशन गोपाल व्यास, क.लि.
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414147499

पथ और प्रक्रिया

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में सीसीई

❒ चेतन कुमार पालीवाल

सतत और व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) का उद्देश्य है कि बच्चे का पाठ्यपुस्तक आधारित उपलब्धियों (संज्ञानात्मक) और पाठ्यपुस्तक से इतर ज्ञानार्जन (गैर संज्ञानात्मक) में उसकी उपलधियों में सुधार लाना। किसी स्कूल के संदर्भ में यह शिक्षक को बच्चे के संप्राप्ति के बारे में लगातार जोडे. रखता है। सी.सी.ई. सभी बच्चों को अपनी-अपनी गति से सीखने के लिये और अपने व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास का पूरा अवसर प्रदान करता है। कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय (के.जी.बी.वी.) जो कि आवासीय है, जहाँ शिक्षक और बालिकाएं पूरा समय साथ-साथ बिताते हैं, सी.सी.ई. को इसके सही स्वरूप में लागू करना और अपेक्षित परिणामों को पाना अपेक्षाकृत आसान हो जाता है। जहाँ अन्य स्कूल जिनमें सी.सी.ई. संचालित हैं बच्चे की पाठ्यपुस्तक आधारित उपलब्धियों का मूल्यांकन पर स्पष्ट प्रगति दिखा पा रही हैं, वहीं के.जी.बी.वी. बालिकाओं के दोनों पहलूओं का मूल्यांकन (शैक्षणिक व सह-शैक्षणिक) प्रभावी ढंग से कर रही हैं।

के.जी.बी.वी. योजना से परिचय

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय (के.जी.बी.वी.) भारत सरकार की योजना है जिसे अगस्त 2004 में लागू किया गया जिसका उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर पर वंचित/कमजोर वर्ग की अनामांकित और ड्रॉप-आउट बालिकाओं को आवासीय सुविधाओं सहित गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराना है। राजस्थान में के.जी.बी.वी. को राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों के समकक्ष घोषित किया गया है। इस योजना में निम्नलिखित घटक सम्मिलिति हैं-

(1) लक्ष्य समूह- 10+आयुवर्ग की बालिकाओं पर विशेष ध्यान दिया जाये जो अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी नहीं कर पायी है। यघपि कठिन क्षेत्रों में कम उम्र की बालिकाओं को प्रवेश भी दिया जा सकता है जैसे प्रवासीय आबादी, छितरी हुई आबादी जहाँ उ.प्रा. विद्यालय खोले नहीं जा सकते हों।

(2) नामांकन संबंधी- 75 प्रतिशत संख्या में बालिकाएं अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग की बालिकाएं अथवा अल्पसंख्यक वर्ग की हों तथा 25 प्रतिशत संख्या में बालिकाएं गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले किसी भी वर्ग की हो सकती हैं। अल्पसंख्यक बाहुल्य क्षेत्रों के के.जी.बी.वी. में अल्पसंख्यक समुदाय की बालिकाओं को प्राथमिकता।

(3) मॉडल- राजस्थान में दो प्रकार के मॉडल चुने गये हैं-पहला, मॉडल-I जो कि 100/150 बालिकाओं के लिये आवासीय विद्यालय है जिसमें आवास और शिक्षा का प्रबंध विद्यालय परिसर में ही है (दूसरा, मॉडल-II जो 50/100 बालिकाओं के लिये छात्रावास है जिसमें आवास के लिये हॉस्टल है और शिक्षा के लिये बालिकाएं निकटतम सम्बन्द्ध उ.प्रा. विद्यालय में पढती हैं।

(4) अकादमिक- इस स्कूलों में आवश्यक शिक्षण-अधिगम सामग्री और उपस्कर उपलब्ध होंगे और यथोचित अकादमिक सहयोग, मूल्यांकन, मानीटरिंग की सुनिश्चितता।

वर्तमान में ये विद्यालय 186 शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े विकास खण्डों में तथा 14 अल्पसंख्यक बाहुल्य शहरी क्षेत्रों में संचालित हैं। राजस्थान में वर्तमान में मॉडल प्रथम के 163 तथा मॉडल तृतीय के 37 कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय संचालित हैं।

के.जी.बी.वी. में संचालित गतिविधियाँ : चूंकि केजीबीवी अन्य राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के समकक्ष मान्यता प्राप्त बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय है, अत: इन विद्यालयों में राज्यादेशों के अनुसार शैक्षिक कार्य करवाया जाता है। पाठ्य-पुस्तकें, समय विभाग चक्र, परीक्षा प्रक्रिया तथा विद्यालय के समय आदि सामान्य उच्च प्राथमिक विद्यालयों के समान ही होते हैं।

आवासीय प्रकृति के कारण के.जी.बी.वी. की दैनिक समय सारणी में कक्षाकक्षीय अध्ययन के अतिरिक्त, गृहकार्य, खेलकूद, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, शैक्षिक मेलों, शैक्षिक भ्रमण, सहशैक्षिक गतिविधियां और व्यावसायिक प्रशिक्षण शामिल है। इस प्रकार बालिकाओं को पाठ्यपुस्तक आधारित संज्ञानात्मक और पाठ्यपुस्तक से इतर ज्ञानार्जन गैर संज्ञानात्मक के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये जाते हैं जिससे कि उनका सर्वांगीण विकास हो।

सी.सी.ई. से परिचय

सतत और व्यापक मूल्यांकन उस व्यवस्था को प्रदर्शित करता है जहाँ विद्यार्थी के समस्त विकास क्षेत्रों का मूल्याकंन किया जाता है। इस प्रकार का मूल्याकंन विद्यार्थी के सम्पूर्ण विकास में-संज्ञानात्मक और गैर संज्ञानात्मक, सहायक होता है। मौजूदा परीक्षा प्रणाली के मुकाबले सी.सी.ई. बेहतर तरीके से सुनिश्चित करती है कि बच्चे को सीखने के दौरान उसकी ज़रूरत के अनुसार मदद मिल सके और उसके सभी पक्षों का विकास हो।

सतत मूल्यांकन का मतलब यह है कि बच्चों ने क्या सीखा ये जानने के लिए हम साल खत्म होने का इंतजार नहीं करते। शिक्षकों को इसका रोज़ाना आकलन करना चाहिए कि बच्चे क्या सीख रहे हैं- इसके लिए वे अवलोकन करें, प्रश्न पूछें, गतिविधियाँ करवायें, छोटे-छोटे काम या प्रोजेक्ट दें। इस तरह से शिक्षक समय रहते इसकी पहचान कर सकता है कि किन बच्चों को सीखने में कहाँ दिक्कत आ रही है और जिनको जरूरत है उनकी अलग से मदद कर सकता है। इससे शिक्षक भी सही वक्त पर यह समझ जाते हैं कि किस चीज में सुधार या पढ़ाने के तरीके में कैसे बदलाव की जरूरत है।

समग्र मूल्यांकन का मतलब है कि हम

केवल यह ध्यान ना रखें कि बच्चों ने पाठ्य पुस्तक को रटा तो नहीं। इसके तहत न केवल यह जाँचा जाता है कि बच्चों ने पाठ्यचर्या के मुताबिक सीखा या नहीं बल्कि इस पर भी ज़ोर दिया जाता है कि वे उसे अच्छी तरह समझें और उस समझ का इस्तेमाल रोज़मर्रा की जिंदगी में करें। इसके अलावा इसमें बच्चे के सम्पूर्ण विकास के अन्य पहलुओं का भी आकलन किया जाता है: जैसे कि खेल, संगीत, नृत्य, अभिनय और कला में उनकी प्रतिभा, स्कूल की गतिविधियों और कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी और उनके मूल्य, विश्वास और नेतृत्व के कौशल इत्यादि। हर बच्चा अलग-अलग क्षेत्रों में बेहतर होता है और मूल्यांकन का यह तरीका बच्चे की उसके ख़ास प्रतिभा को निखारने में मदद करता है।

के.जी.बी.वी. में बालिकाओं का प्रथम वर्ष में, जिसमें कण्डेन्स कोर्स पढ़ाया जाता है, का सतत मूल्यांकन किया जाता है ताकि जैसे-जैसे बालिकाएं सीखती जायें, वैसे-वैसे उन्हें अगले स्तर पर भेजा जा सके। के.जी.बी.वी., जहाँ अध्यापिकाएं और बालिकाएं पूरे समय एक साथ रहती हैं सी.सी.ई. के अच्छे परिणामों को राज्य में प्रदर्शित करना एक अच्छी शुरूआत होगी।

के.जी.बी.वी. में सी.सी.ई.

आवश्यकता : के.जी.बी.वी. में नामांकित बालिकाएं उच्च आयु वर्ग, उच्च क्षमताओं को पूर्व में ग्राह्य किए हुए होती हैं। उनका मानसिक स्तर, परिवेश से जुड़े हुए अनुभव, उनके सीखने की गति को उन्नत करती हैं। अत: यह आवश्यक हो जाता है कि उनके साथ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की शुरूआत इन सब बातों को ध्यान में रखकर आरंभ की जाये। साथ ही उनके पूर्व ज्ञान/पूर्वग्रहित अनुभवों को भी दर्ज करने के लिए स्थान उपलब्ध हो।

सत्र 2012-13 में 23 के.जी.बी.वी. में सी.सी.ई. को शुरू किया गया। प्रथम वर्ष 4 जिलों के 23 के.जी.बी.वी. में सी.सी.ई. को लागू किया गया। इस सत्र में इन 23 के.जी.बी.वी. से 92 अध्यापिकाओं को बोध शिक्षा समिति के संकाय सदस्यों द्वारा प्रशिक्षित किया गया। हालांकि 2012-13 में सी.सी.ई. का संचालन शुरू होते-होते आधा शैक्षणिक सत्र गुजर गया अतएव उसके कोई ठोस परिणाम प्राप्त नहीं हो पाये। सत्र 2013-14 उक्त 4 जिलों के अतिरिक्त 8 अन्य जिलों के कुल 27 के.जी.बी.वी. में लागू कर दिया गया है। वर्तमान में 12 जिलों के 50 के.जी.बी.वी. में सी.सी.ई. लागू है। इन 12 जिलों के 50 के.जी.बी.वी. से 161 शिक्षिकाओं को प्रशिक्षण दिया गया है।

के.जी.बी.वी. में सी.सी.ई. का शुरूआती दौर है। अतएव प्राप्त अनुभवों के विश्लेषण और आवश्यकतानुसार तकनीकी एवं मानीटरिंग सहयोग के लिये राज्य संदर्भ समूह और एस.आई.ई.आर.टी. उदयपुर के साथ पार्टनरशिप की गयी है।

प्रक्रियाएं और प्रगति : सी.सी.ई. के सफल संचालन में कई चरण शामिल हैं जो कि बच्चों के आधार रेखा मूल्यांकन एवं उस पर आधारित कार्ययोजना से शुरू होता है। शिक्षण-योजना के आधार पर किये गये शिक्षण प्रक्रिया में समय-समय पर बालिकाओं का रचनात्मक/योगात्मक आकलन किया जाता है। इन बिन्दुओं को जानने से पूर्व के.जी.बी.वी. की शिक्षण व्यवस्था को समझना आवश्यक है।

शिक्षण व्यवस्था : के.जी.बी.वी. में विभिन्न शैक्षणिक स्तरों की बालिकाएं आती हैं। उनकी आवश्यकता को देखते हुए चार वर्षीय शिक्षण अवधि की व्यवस्था है। 0 वर्ष या प्रथम शैक्षणिक सत्र कक्षा 1 से 5 तक के अधिगम क्षेत्रों पर कार्य करने हेतु तथा शेष 3 वर्ष पृथक-पृथक कक्षा 6 से 8 के लिये उपलब्ध हैं।

0 वर्ष की संकल्पना इस रूप में की गयी है कि इस अवधि में कक्षा 5 के समतुल्य कौशलों का विकास कर लिया जाये। क्योंकि उच्च प्राथमिक स्तर पर जिन संख्यात्मक और गुणात्मक कौशलों की अपेक्षा की गयी हैं उनके साथ तभी न्याय किया जा सकता जब प्राथमिक स्तर का विकास सुनिश्चित करा जाये। साथ ही शिक्षक को भी यह जानकारी हो कि बालिका में किस कौशल का अपेक्षित विकास हो पाया है और कहाँ पर कार्य किया जाना शेष है।

आधार रेखा मूल्यांकन : प्रत्येक बालिका अपने साथ पाठ्यक्रम आधारित एवं व्यावहारिक ज्ञान साथ में लेकर आती है। इन बालिकाओं के साथ आगे बढ़ने से पूर्व अनेक अनुभवों का दस्तावेजीकरण किया जाता है जिसमें तीन प्रमुख क्षेत्रों को शामिल किया जाता है-संज्ञानात्मक क्षेत्र, व्यक्तित्व विकास के आयाम, उच्च शिक्षाक्रमणीय उद्देश्य का अवलोकन। उक्त आधार रेखा मूल्यांकन के आधार पर बालिकाओं के स्तर का निर्धारण कर समूह बनाया जायेगा।

शिक्षण नियोजन एवं समीक्षा : बालिकाओं स्तर निर्धारण एवं समूहीकरण के पश्चात् अध्यापिका शैक्षिक साप्ताहिक नियोजन करती है। इस में गत नियोजन और उसके अनुसार बालिकाओं की उपलब्धियां, चुनौतियों को मध्यनजर रखते हुए अधिगम क्षेत्र, उपलब्धि, दी जाने वाली विषयवस्तु, उद्देश्य, निर्धारित कार्य एवं गतिविधियां तथा सामग्री का स्पष्ट उल्लेख किया जाता है। यद्यपि प्रतिदिन किये गये कार्यो के आधार पर शिक्षक अपनी योजना को पुनर्नियोजित भी कर सकता है।

किये गये नियोजन के अनुरूप साप्ताहिक समीक्षा की जाती है जिसमें कार्य की समीक्षा, शिक्षक के अनुभव, किसी विशेष उपसमूह पर शिक्षक का अभिमत और आगामी नियोजन का आधार परिलक्षित होता है।

कन्डेन्स कोर्स और आकलन : 0 वर्ष के लिये चिन्हांकित बालिकाओं के साथ कन्डेन्स कोर्स पर कार्य किया जायेगा। कन्डेन्स कोर्स के लिये पृथक से मॉड्यूल तैयार किये गये हैं। कन्डेन्स कोर्स पर कार्य करते समय और कक्षाकक्ष प्रक्रिया के तहत रचनात्मक आकलन किया जाता है। इस हेतु रचनात्मक/योगात्मक आकलन के लिये प्रपत्र का उपयोग किया जाता है, जिसे बालिकाओं के पोर्टफोलियो में लगाया जाता है। कक्षा 4 और 5 के स्तर पर आ चुकी बालिकाओं के लिये उच्च स्तरीय कौशलों का ध्यान रखते हुए संघनित पाठ्यक्रम में दिए गए सूचकों के अन्तर्गत भी मूल्यांकन किया जायेगा। 0 वर्ष में कक्षा 1 से 5 तक की दक्षताओं पर अच्छी समझ बालिकाओं की बन जाने पर यहाँ पर एक योगात्मक मूल्यांकन लिया जायेगा। यह मूल्यांकन कक्षा 6 से 8 के शिक्षण हेतु बेसलाइन का काम करता है।

कक्षा 6 से 8 हेतु : कक्षा 6 से 8 के लिये प्रत्येक के.जी.बी.वी. को मॉड्यूल, चेकलिस्ट, सोर्सबुक उपलब्ध करायी गयी है। इस स्तर पर पाठ्यक्रम विभाजन, समूहीकरण, समीक्षा,

चेकलिस्ट, योगात्मक मूल्यांकन आदि पर कार्य सी.सी.ई. अन्तर्गत प्राप्त सामग्री मॉड्यूल, सोर्सबुक आदि के अनुरूप सम्पादित किया जाता है। यहाँ नियोजन और आकलन की निम्नलिखित प्रक्रिया अपनायी जा रही है : (1) प्रत्येक कक्षा का दो टर्म के अनुसार पाठ्यक्रम का विभाजन (2) बच्चों का समूहीकरण (3) समूहवार 15 दिवसीय शिक्षण योजना एवं समीक्षा (4) कक्षाकक्षीय प्रक्रियाओं के दौरान विविध गतिविधियों द्वारा सतत रचनात्मक आकलन और चेकलिस्ट में चिन्हिकरण (5) प्रत्येक टर्म में दो योगात्मक मूल्यांकन-प्रथम दो माह पश्चात समस्त कार्य को योगात्मक मूल्यांकन और अगले 2½ माह बाद दूसरा योगात्मक मूल्यांकन। इस प्रकार दो टर्म में चार योगात्मक मूल्यांकन सम्पादित किये जाते हैं।

उक्त के अतिरिक्त बालिकाओं के विभिन्न सहशैक्षणिक गतिविधियों द्वारा सर्वांगीण विकास के विभिन्न आयामों का आकलन करने हेतु भी निर्धारित प्रारूप तैयार किये गये हैं जिसमें वर्ष में दो बार टिप्पणी दर्ज की जानी है।

के.जी.बी.वी.में सी.सी.ई. : आगामी योजना : सीसीई राज्य में निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। केजीबीवी में सीसीई अभी प्रारंभिक चरण में है। वर्तमान में सीसीई के तहत लिए गए 50 केजीबीवी के परिणामों के आधार पर राज्य की समस्त केजीबीवी में उक्त मूल्यांकन पद्धति को अपनाया जायेगा। -सहायक निदेशक

बालिका शिक्षा, राप्राशिप, जयपुर

नया स्तम्भ : 'शाला प्रांगण से'

विद्यालयों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों से सम्बन्धित समाचार शिविरा पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं। कृपया कार्यक्रम/समारोह की संक्षिप्त रपट एवं एक या दो रंगीन फोटो हमें भिजवाएं। इन्हें **शाला प्रांगण से** स्तम्भ में प्रति माह प्रकाशित किया जाएगा। कृपया ये समाचार आयोजन सम्पन्न होते ही अविलम्ब हमें भिजवाएं अन्यथा पुराने हो जाने पर उन्हें प्रकाशित करना सम्भव नहीं होगा। **-वरिष्ठ संपादक**

शैक्षिक समाचार

सेवानिवृत शिक्षा अधिकारियों का स्नेह मिलन

महान दार्शनिक, शिक्षाविद् एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस 05 सितम्बर को सम्पूर्ण राष्ट्र में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। शिक्षक, शिक्षाधिकारी पद से भले ही निवृत हो जाएं लेकिन शिक्षा से निवृत्ति कभी नहीं हो सकती। सेवानिवृत्ति को सार्थक करने की प्रामाणिकता सिद्ध करती है। सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी समिति बीकानेर के तत्वावधान में 05 सितम्बर 2013 को शिक्षक दिवस जयनारायण व्यास नगर के शिव मन्दिर में मनाया। धन्य हैं वह शिक्षक जिनका जन्म दिवस सम्पूर्ण राष्ट्र मनाता हो। संसार के अन्य किसी भी देश में शिक्षकों का यह सम्मान गौरव आज तक नहीं देखा गया। कार्यक्रम का आरंभ डॉ. राधाकृष्णन की प्रतिमा पर पुष्पाजंलि तथा सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन, पुष्प अर्पण व स्तुति के साथ हुआ। इस शुभ अवसर के साक्षी बने मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जीवन बीमा निगम बीकानेर के मण्डल प्रबन्धक हरिशचन्द्र, अतिथि के रूप में उत्तर पश्चिम रेलवे बीकानेर की डी.आर.एम. मंजू गुप्ता व अध्यक्ष के रूप में मालती शर्मा से.नि. उपनिदेशक मा.शि.राज. बीकानेर।

बीकानेर के वरिष्ठ साहित्यकार भवानी शंकर व्यास 'विनोद' ने सभा को संबोधित करते हुए कहा 'राधा कृष्णन के अनुसार हम सारे संसार को जीत लें पर अपनी आत्मा को हार जाये तो वह जीत बेमानी होगी। हमारा जीवन निरन्तरता व परिवर्तन का एक उदाहरण है यदि निरन्तरता रहे परिवर्तन न हो तो वह निष्क्रिय व निस्तेज होगी। इसी तरह यदि परिवर्तन हो निरन्तरता नहीं रहे तो उसमें अराजकता आ जाएगी। हमारी शिक्षा में व्यापकता है पर गहराई नहीं हमें अपने ज्ञान को दिव्यता से जोड़ना होगा ताकि एक मूल्य निष्ठ पीढ़ी तैयार हो।' समिति के सचिव सुरेश कुमार मित्तल द्वारा गत वर्ष की गतिविधियों के साथ वित्तीय विवरण व लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया। समिति के अध्यक्ष शिवनाम सिंह ने कहा 'मैं सभी के स्वस्थ एवं दीर्घायु की कामना करता हूँ। समिति के क्रियाकलापों में नए विचारों और सुझावों को आमंत्रित करता हूँ जिससे कार्यक्रम को और अधिक रूचि पूर्ण बनाया जा सके। पत्रिका की सम्पादक रतन सारस्वत ने सभी से अपनी रचनाएँ समय पर प्रेषित करने का आग्रह किया इस अवसर पर अतिथिगण व समिति के पदाधिकारियों द्वारा वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' के विमोचन पर सभागार तालियों से गुंजायमान हो गया।

सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारियों के जोश, उमंग, उत्साह को लक्षित करते हुए मुख्य अतिथि हरिश्चन्द्र ने अपने उद्बोधन में कहा की 'शिक्षक ही समाज को जीवित रखता है। शिक्षण कार्य द्वारा वह सच्चे विद्यार्थी को तराशता है उसे सद्गुणों के आभूषण पहनाता है और सेवा के लिए समाज में भेज देता है। इस समिति में 93 वर्ष के वृद्ध सेवानिवृत्त अधिकारियों से 60 वर्ष के सद्य सेवानिवृत्त अधिकारी नजर आ रहे हैं। यह समिति अनूठी व अनोखी इस मायने में है कि सबको एक माला में पिरोये हुए है। आप सभी शिक्षा अधिकारियों का मैं हृदय से सम्मान व जज्बे को सलाम करता हूँ।' अतिथि पद से सभा को संबोधित करते हुए मंजू गुप्ता ने कहा 'मैं शिक्षकों का बहुत आदर व सम्मान करती हूँ क्योंकि उन्होंने ही मुझे शिक्षित कर इस पद पर पहुँचाया कि मैं आपके बीच उपस्थित हो सकी। मैं आपके स्वस्थ व सुखी जीवन की कामना करती हूँ।' इस अवसर पर मालती शर्मा ने कहा कि 'शिक्षक व शिक्षा दोनों ही अनश्वर हैं। आदर्श शिक्षा अधिकारी वही है जो अपना शिक्षक सदा जीवित रखे। इन अर्थों में समिति समाज से आज भी संवाद रखती है।' तत्पश्चात इस सम्मेलन में 70 वर्ष पूर्ण करने पर शिक्षक ऋषि के सम्मान से 6 शिक्षा अधिकारियों तथा अमृत महोत्सव 2013 में 7 पदाधिकारियों को शॉल, श्रीफल, स्मृति चिह्न व पुरस्कार तथा वैवाहिक जीवन के 50 वर्ष पूर्ण करने पर एक दम्पत्ति का अभिनन्दन समिति द्वारा किया गया। आभार व्यक्त किया संरक्षक मण्डल के सदस्य सरदार अली परिहार द्वारा तथा कार्यक्रम का संचालन कृष्णा गोस्वामी ने किया। **-सुमन सिंह**

से.नि. उपनिदेशक

ई-53, खतूरिया कॉलोनी, बीकानेर

मूल्यांकन का मूल्यांकन

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन : भयमुक्त मूल्यांकन

❒ उषा टेलर

जीवन के विभिन्न आयामों में मूल्यांकन का महत्त्व सर्वोपरि है। व्यक्ति कितने पानी में है? तैर कर सागर को पार करने की कितनी सामर्थ्य है? किस व्यक्ति के प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है? कौन अपनी सूझ-बूझ से प्राप्त ज्ञान से उपस्थित समस्या का समाधान खोज लेने में सक्षम है? मूल्यांकन ही वह प्रक्रिया है जो निश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ते कदमों द्वारा तय किए गए फासलों का बोध कराता है। मूल्यांकन का शिक्षा के साथ प्रगाढ़ संबंध है।

वर्तमान मूल्यांकन प्रक्रिया नकारात्मक है जिसमें यह देखा जाता है कि बच्चा क्या नहीं जानता है बजाय यह देखने की बच्चा क्या जानता है सामान्यतया परीक्षा तनाव और चिन्ता को जन्म देती है।

परम्परागत मूल्यांकन पद्धति जो पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई गई विषयवस्तु को रटकर अर्जित जानकारी के आकलन तक सीमित है। शिक्षा पर बने दस्तावेजों में समय-समय पर परम्परागत मूल्यांकन पद्धति की खामियों की ओर इंगित किया जाता रहा है एवं श्रेष्ठता के लिए मूल्यांकन की सतत एवं व्यापकता की ओर ध्यान दिलाया गया। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन अधिगम का ही एक हिस्सा है एवं अधिगम को प्रभावी बनाता है।

यूनिवर्सिटी एज्यूकेशन कमीशन रिपोर्ट (1948) में कहा गया है कि पाठ्यक्रम में कक्षागत गतिविधियों को भी सम्मिलित किया जाए। कुल अंकों में से एक-तिहाई अंक कक्षा में पढ़ाते समय किए गए कार्य के लिए सुरक्षित रखे जाए। मुदालिया कमीशन रिपोर्ट (1953) में कहा गया है कि वार्षिक आकलन के नम्बर देते समय शिक्षक द्वारा संधारित किए गए रिकॉर्ड को भी ध्यान में रखा जाए। कोठारी कमीशन रिपोर्ट (1966) में कहा गया है कि विद्यार्थियों को उपलब्धि प्रमाण-पत्र देते समय उनके आंतरिक एवं बाह्य दोनों मूल्यांकन के अंकों में शामिल किया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में आन्तरिक मूल्यांकन प्रवृत्ति को शामिल किया।

अतः हमारा यह दायित्व है कि परीक्षा के इन दुष्प्रभावों को दूर करते हुए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बालकों के सार्थक और आनन्ददायी अनुभवों के सन्दर्भों को जोड़ते हुए भयमुक्त मूल्यांकन के प्रयास किए जाएँ।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 में मूल्यांकन के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए यह भी कहा गया है कि शिक्षा का सरोकार एक सार्थक जीवन की तैयारी से होता है और मूल्यांकन फीडबैक देने का एकमात्र सकारात्मक माध्यम होना चाहिए। उसी अवधारणा को स्थापित करने के लिए अंक दिए बिना भी बालकों का आकलन किया जा सकता है। बच्चे होशियार या मन्द बुद्धि नहीं होते हैं बल्कि पृथक-पृथक क्षेत्रों में विशिष्टता लिए होते हैं। मूल्यांकन अधिगम का ही हिस्सा है और अधिगम को प्रभावी बनाता है। अतः इसे शिक्षण प्रक्रिया से अलग करके न देखा जाएं। इसलिए मूल्यांकन को बच्चों के संज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोवैज्ञानिक विकास में सहायक होना चाहिए। मूल्यांकन का आशय बालकों का नियमित परीक्षण करना नहीं है बल्कि उसकी दैनिक गतिविधियों तथा उनके ज्ञानों प्रयोग का अवलोकन करना है।

मूल्यांकन की प्रक्रिया सतत प्रवाहमान है। यह कदाचित समय सापेक्ष नहीं। समय सापेक्ष मूल्यांकन में 'परीक्षा' है जो छोटे से छोटे तथा बड़े से बड़े 'परीक्षार्थी' की धड़कन बढ़ा देती है। चिंताग्रस्त कर देने का कार्य परीक्षा का है, मूल्यांकन का नहीं। परीक्षा में दो ही विकल्प है पहला पास दूसरा फेल। मूल्यांकन में पास फेल का काम नहीं। शिक्षार्थी को मूल्यांकन के प्रति सचेत किए जाने की जरूरत नहीं है। मूल्यांकन की प्रक्रिया सहज घटित होती है पाठान्तर्गत अथवा पाठोपरान्त तथा पूर्णाभ्यास के दौरान मूल्यांकन निर्वाह किया जा सकता है।

सतत मूल्यांकन द्वारा उपलब्धियों का ग्राफ ऊपर की ओर बढ़ता है तथा स्वयं प्रेरणा स्वरूप बनकर शिक्षार्थी के समक्ष असाधारण सम्भावनाओं के द्वारा खोल देता है। कहना न होगा कि सतत मूल्यांकन की प्रक्रिया हमारी प्राचीन शैक्षणिक प्रक्रिया में ऋषियों व आदर्श गुरुओं द्वारा बीजारोपित होती रही है। वहाँ परीक्षा का यह सहज एवं सतत स्वरूप विद्यमान था। जहाँ शिक्षार्थियों के समक्ष नितान्त अनौपचारिक, निर्भीकता पूर्ण एवं असंदिग्धता सफलता का वातावरण प्रतिक्षण सृजित होता था।

सतत मूल्यांकन की अन्तःक्रिया अनौपचारिक तो है परन्तु अप्रासंगिक एवं असंबद्ध नहीं। इसे सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए पाठान्तर्गत कठिन बिन्दुओं अथवा क्लिष्ट प्रत्ययों का पूर्व निर्धारण कर लेना आवश्यक होता है। पाठ की ऊपरी सतह पर विचरण करना तथा तद्विषयक सामान्य प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर सन्तुष्ट हो जाना पर्याप्त नहीं।

पाठ की रग-रग से पाठकों का अनुराग हो जाए, उसका प्रत्येक अंश (सरल व कठोर) पूर्वा रूप से तरलित हो शिक्षार्थी के दिल-दिमाग में एक लय हो जाए, यह प्रयास शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका में शामिल है। उससे विषयवस्तु की रटन्त भी पूर्ण निवृत्ति की आकांक्षी हो जाती है। ज्ञान अधिगम के क्षेत्र में पहुंचकर व्यवहारगत परिवर्तनों के सूचकों को पारदर्शिता के धरातल पर पुष्ट करता चलता है। और तब समस्त सीखने-सिखाने की प्रक्रिया आनन्दपूर्ण हो जाती है। मूल्यांकन का सातत्य स्वरूप ही वर्तमान युग के विकासमान भारत के लिये सर्वथा समीचीन है।

खिलने लगेगा यह चेहरा उदास
किसी कली को गुल, बनाकर तो देख।

यही वह सकारात्मक चिन्तन है जो हमें सचेष्ट बनाने के लिये प्रेरणा देता है।

-प्रधानाध्यापिका
रा.बा.मा.वि., कुरज (राजसमंद)
मो. 9414623619

विदेशी माध्यम से वास्तविक शिक्षा दिया जाना संभव नहीं है। **-महात्मा गांधी**

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है, बड़ी मुश्किल से होता है चमन में कोई दीदावर पैदा।

ऐसे ही एक शिक्षाविद् डॉ. दूलसिंह का जन्म राजस्थान में शेखावाटी के एक छोटे से गाँव दिसनाऊ में 23 सितम्बर, 1924 को एक किसान परिवार में हुआ। लक्ष्मणगढ़ कस्बे से कोई 10 किमी. उत्तर-पूर्व में अवस्थित उस गाँव में न बिजली थी और न ही पीने का पानी। वह वो दौर था कि जब इलाके में तालीम एक अजूबा थी और आम आदमी की पहुँच से कोसों दूर थी। मातुश्री बीरां देवी और पिताश्री हुकुमसिंह ने स्वाधीनता सेनानी मास्टर कन्हैयालाल की प्रेरणा दूलसिंह को स्वरूपसर पढ़ने को भेजा। पंडित जी पेड़ों की बदलती छाँव तले कक्षा लगाया करते। निश्चय ही सवेरे कक्षा पश्चिम में लगती, दुपहर को पेड़ की छाया के बीचों-बीच तो सायंकाल यह खुला कक्षा-कक्ष पूरब में चला जाता।

वक्त जब करवट लेता है तो हर एक लम्हे के अन्दाज बदल जाते हैं, सुबह बेगाना हो तो रात के भी मंजर बदल जाया करते हैं। ऐसा ही दूलसिंह के जीवन में भी हुआ। स्वरूपसर की पढ़ाई पूरी हो चुकी थी। देश की सोई हुई प्रजा आजादी की लालसा में अँधेरी रात भर सोकर अब तो अंगड़ाई ले रही थी। लक्ष्मणगढ़ में स्वर्गीय लादूराम जी जोशी भी शिक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित किये थे। अपने भ्राता के साथ दूलसिंह, जोशी जी के सान्निध्य में गए और यहाँ भी अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी की। फिर तो मुकुन्दगढ़ के उच्च प्राथमिक विद्यालय और नगड़ के विद्यामंदिर होते हुए दोनों भाइयों की शिक्षा यात्रा को पिलानी में एक शानदार पड़ाव मिला। बिरला एज्यूकेशन ट्रस्ट ने प्रतिभा को शीघ्र ही पहचान लिया था और प्रारंभ कर दिये थे दोनों के लिए वजीफे। कक्षा-कक्ष, रंगमंच और खेल के मैदान तक सभी ने दोनों भाइयों की प्रतिभा का लोहा माना। अब तो बारी आई राजपूताना स्टेट बोर्ड द्वारा आयोजित आठवीं कक्षा परीक्षा की। परीक्षा परिणाम जब आया तो खुशियों का तोहफा लाया। आप राज्य भर में सर्वोच्च अंक प्राप्तकर्ता रहे। यह सिलसिला बी.कॉम. से लेकर एम.कॉम. और पीएच.डी. तक चला। आप हर परीक्षा में टॉपर रहे। एम.कॉम. आगरा विश्वविद्यालय तथा पीएच.डी. राजस्थान विश्वविद्यालय से की।

अब तक शिक्षा के क्षेत्र में आपने कई

हमारे पुरोधा

महान् शिक्षाविद् डॉ. दूलसिंह

❒ शिवजी राम चौधरी

मील के पत्थर और बाटर मार्क तय कर दिये थे और बन गई थी देश-विदेश में आपकी अलग पहचान। पूरे विद्यार्थी जीवनभर आप मेरिट स्कॉलरशिप होल्डर रहे तथा 1962-63 में आपको डेनफोर्थ फैलोशिप भी प्रदान की गई। आप अनेक पुस्तकों के लेखक रहे हैं। सन् 1956 में आपने शोध के लिए भी उसी क्षेत्र को चुना जिसमें गाँव, गरीब और किसान के दर्द छुपे थे। शोध के लिए आपका विषय था 'वैल्थ एंड वेलफेयर ऑफ शेखावाटी'। इतना ही नहीं आपने अपने सम्पूर्ण कैरियर में लगभग तीन दर्जन प्रतिभावान स्कॉलर्स को अपने मार्गदर्शन में कॉमर्स एवं मैनेजमेंट के क्षेत्र में पीएच.डी. करवाया। आपके तीन प्रमुख रिसर्च प्रोजेक्ट्स योजना आयोग, नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग द्वारा सम्पन्न हुए थे। 'लैण्ड रिफॉर्म्स इन राजस्थान' 1964 में, 'इन्डस्ट्रीयल रिलेशनशिप इन राजस्थान' 1966 में तथा 'ए स्टडी ऑफ इन्वेस्टमेंट मैनेजमेंट ऑफ प्रोविडेन्ट फण्ड्स इन इंडिया' 1969 में सम्पन्न हुए तो आपकी शोहरत आसमानों में थी।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके अपने उसूल रहे हैं और रहा है कठोर अनुशासन। उस तालीम में न थी आपकी आस्था, जिस तालीम का न रहा आम आदमी के दर्द से कोई वास्ता। बतौर शिक्षक सदैव ही आपका मानना रहा कि एक विद्यार्थी को पढ़ाई के वक्त या तो कक्षा-कक्ष में होना चाहिए नहीं तो फिर अस्पताल में। अन्यत्र कहीं नहीं। शिक्षक के रूप में आपका 53 वर्ष का शानदार इतिहास रहा जिसमें एसोसिएट प्रोफैसर, प्रोफैसर, डीन ऑफ फैकल्टी से लेकर प्रोफैसर ऑफ एमीनेन्स तक के लम्बे सफर में पिलानी, राजस्थान विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हिसार विश्वविद्यालय तथा अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय तक विभिन्न रूप-स्वरूपों में आप शिक्षक बने रहे।

सन् 1969 में अमेरिका के डार्ट माउथ कॉलेज में अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में आपने भाग लिया। 1975-76 में आपने विश्वविद्यालयों में आयोग के नेशनल लेक्चरशिप अवार्डी के रूप में अनेक विश्वविद्यालयों में व्याख्यान दिए। दो से चार सप्ताह के लिए कॉमर्स एवं मैनेजमेंट के क्षेत्र में लेक्चर्स के लिए अनेक भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा आपको आमंत्रित किया गया।

आपने अपने सेवा जीवन की शुरूआत बिट्स पिलानी से की। 'बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नॉलोजी एण्ड साइन्स' में रहते आप वार्डन, चीफ वार्डन, मैनेजिंग डायरेक्टर, बिरला सहकारी भण्डार एवं असिस्टेन्ट डायरेक्टर के रूप में विभिन्न पदों पर रहे और अपनी ईमानदारी एवं प्रशासनिक कौशल के लिए अमिट पहचान बनाई। पिलानी के बाद आपने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र में प्रोफैसर, डीन ऑफ फैकल्टी, चीफ वार्डन एवं रजिस्ट्रार सहित अनेक पदों पर कार्य किया। हरियाणा में आपको कॉमर्स एवं मैनेजमेंट का जनक माना जाता है।

आपने पोद्दार इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, जयपुर के डायरेक्टर की हैसियत से राजस्थान विश्वविद्यालय को भी एक अर्से तक अपनी सेवाएं दीं। बतौर प्रोफेसर सेवानिवृत्ति के बाद एक बार पुनः आप हरियाणा राज्य में आते हैं। हिसार कृषि विश्वविद्यालय में 'सर छोटूराम चेयर इन रूरल डवलपमेंट' के प्रोफेसर ऑफ एमिनेन्स की हैसियत से कृषि एवं ग्राम विकास के क्षेत्र में सर छोटूराम द्वारा किए गये कार्यों, लेखन एवं वक्तृत्व पर जो विस्तृत शोध कार्य अपनी टीम को साथ लेकर करवाया, उस पर आने वाले अनेक वर्षों तक योजनाओं एवं उनकी क्रियान्विति का काम कर ग्राम विकास की तस्वीर बदली जा सकती है।

राजस्थान सरकार ने आपकी योग्यता की पहचान कर सन् 1984 में आपको राजस्थान राज्य लोक सेवा आयोग, अजमेर में सदस्य मनोनीत किया। आपने सितम्बर, 1986 तक आयोग में रहते बड़े पैमाने पर राज्य सरकार के विभिन्न विभागों हेतु विभिन्न पदों के लिए अधिकारियों का चयन किया। आयोग में आप

परीक्षा के प्रभारी रहे तथा आप ही के समय में आर.ए.एस. परीक्षा के लिए दो स्तर की परीक्षा एवं सामान्य ज्ञान पाठ्यक्रम के पुनर्निर्धारण का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया।

आप विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं आयोगों में बतौर विशेषज्ञ अनेक चयन समितियों में रहे। आपने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट जानकारियां हासिल करने एवं अपने अनुभव बाँटने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, सोवियत रूस, जापान तथा यूरोपीय एवं दक्षिणी एशियाई देशों की यात्राएँ कीं।

शिक्षा एवं अनुसंधान के साथ-साथ आपकी प्रतिभा का लाभ एन.सी.सी., पत्रकारिता, प्रबन्धन एवं सहकारिता क्षेत्र को भी मिला। लगभग 10 वर्षों तक आप एन.सी.सी. के ऑनरेरी कैप्टन तथा तीन वर्ष तक प्रशासनिक अधिकारी रहे। 1969 में पिलानी में बतौर मानद सचिव आपने एक नये वाणिज्य महाविद्यालय की स्थापना में अपना योगदान दिया। 1966 से 1971 तक आप प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के ऑनरेरी कोरस्पॉन्डन्ट रहे। भारत सरकार के अध्याधीन 'गार्डन रिसर्च वर्क शॉप्स' एवं 'प्रेज टूल्स' के नॉन ऑफिशियल डायरेक्टर के रूप में भी आपका स्मरण समीचीन होगा।

राजस्थान सरकार द्वारा भूमि सुधारों पर आपके शोध एवं अनुभव का लाभ राज्य की जनता को प्रदान करने के लिए आपको राज्य योजना मण्डल में सहयोग के लिए आमंत्रित किया तथा राज्य विधान सभा में एक हफ्ते भर के लिए भूमि सुधारों को लेकर आपके शोध पर बहस चली। आप 'इंडियन अकाउन्टिंग एसोशिएशन' के अध्यक्ष भी रहे।

लेखन और शोध के क्षेत्र में आपके कठोर परिश्रम, तथ्यपरक अनुसंधान एवं प्रामाणिकता को युगों तक याद किया जायेगा। आप असाधारण स्मरण शक्ति, तीव्र और प्रशासनिक कौशल के धनी थे। मूल्यों के साथ आपने कभी समझौता नहीं किया और सार्वजनिक कार्यों में निजी स्वार्थ को कभी आड़े आने नहीं दिया। आप अल्पाहारी, मितव्ययी, मितभाषी एवं मृदुभाषी थे। आप अक्सर कहा करते कि 'सच्चाई, ईमानदारी, न्याय एवं कर्तव्यनिष्ठा के सशक्त पायदानों पर आधारित प्लेटफार्म पर खड़े इन्सान को दुनिया की कोई शक्ति नाकाम नहीं कर सकती।' दया और करुणा के भाव इस बात के परिचायक थे कि ग्राम्य आंचल में अभावों की जिन्दगी के सुलगते दर्द उन्होंने अपनी आँखों से देखे थे। अक्सर किसी प्रतिभावान विद्यार्थी के पास पैसा नहीं होता तो तत्काल आप उसकी मदद कर दिया करते। अपने पैतृक गाँव के ग्रामोत्थान विद्यापीठ को अपने प्रयासों से राज्य सरकार को सुपुर्द किया और वर्ष 1989 में उसी संस्थान को माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत करवाया जो अब उ.मा.विद्यालय है।

सेवा में आपका गहरा विश्वास था। वर्ष 1992 में अपने पैतृक गाँव में अपनी स्वर्गीया मातुश्री वीरा देवी की स्मृति में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के भवन का निर्माण करवाया।

आजादी से पूर्व अध्ययन के आंग्ल भाषा माध्यम के बावजूद आप हमेशा मातृ भाषा को तवज्जो देते रहे। पिलानी के अपने सेवाकाल के दौरान जब किसी बड़े विदेशी विशेषज्ञ का सम्बोधन होता तो आप ही उसका हिन्दी अनुवाद कर उपस्थित जन को सुनाते तथा साथ-साथ यहाँ की बात आंग्ल भाषा में रूपांतरित कर अतिथि को समझाते। शिक्षा के सार्वजनिक एवं सामाजिक सरोकारों से आप सदैव सीधा सरोकार रखते रहे। शिक्षा में व्यावहारिकता, विज्ञान के अभिनव प्रयोगों के साथ-साथ नैतिक-सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों में आपका विश्वास रहा। आप फुर्सत के समय में श्रीमद्भगवत्गीता का अध्ययन किया करते।

बतौर शिक्षक अक्सर यह कहते कि किसी भी परीक्षा के नतीजे में विद्यार्थी नहीं शिक्षक फेल होता है। वे आत्मविश्वास से कहा करते कि 'मेरी कक्षा में नियमित अध्ययन करने वाले विद्यार्थी का फेल होना कदाचित नामुमकिन है।' शिक्षकों से कहते, 'उस शिक्षक को कक्षा कक्ष में जाने का कोई अधिकार नहीं जो स्वयं अध्ययन करके नहीं आता।' अंग्रेजियत से आप कोसों दूर थे। आखिरी दम तक आप काम करते रहे और मेहनत करके खाने में अपने विश्वास से सभी को अवगत कराते रहे। उनका मानना था कि बोलचाल, पहनावे, पद और पैसे से नहीं बल्कि सद्कर्मों और सद्विचारों से कोई व्यक्ति बड़ा होता है। 4 अक्टूबर, 2012 को उन्होंने अंतिम स्वास ली। शिक्षाविद के रूप में डॉ. दूलसिंह का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

-संयुक्त निदेशक (कार्मिक)
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
मो. 9982008386

गांधीजी की सबसे ऊँची प्रतिमा

अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी की प्रतिमाएं विश्व के प्रायः सभी देशों में स्थापित हैं। भारत में गांधी मैदान, गांधी भवन, गांधी संस्थान, गांधी मार्ग और उनकी प्रतिमाएं जैसे हमारे दैनन्दिन जीवन में रची बसी हैं। गांधी बाबा की खड़ी एवं ध्यानावस्था की मूर्तियाँ प्रायः देखने को मिलती है। महात्मा गांधी की देश-विदेश में स्थित प्रतिमाओं में सबसे ऊँची प्रतिमा होने का श्रेय बिहार को जाता है जहाँ इस वर्ष 15 फरवरी 2013 (बसन्त पंचमी) के दिन पटना के जगत प्रसिद्ध गांधी मैदान में पूज्य बापू की प्रतिमा स्थापित की गई जो 74 फीट ऊँची है।

राष्ट्रपिता की यह प्रतिमा कांस्य की बनी है जिस पर दस करोड़ रुपये की लागत आई है। इसका निर्माण दिल्ली के प्रसिद्ध मूर्तिकार रामसूरत ने किया है। वस्तुतः यह प्रतिमा 40 फीट की है जो 34 फीट ऊँचे प्लेटफॉर्म पर टिकी है। इस प्रकार कुल ऊँचाई 74 फीट है। इस प्रतिमा में बापू को दो बच्चों के साथ खड़ा दिखाया गया है।

यह उल्लेखनीय है कि अब तक बापू की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा का रिकार्ड नई दिल्ली संसद स्थित ध्यानमग्न प्रतिमा का था जो 16 फीट ऊँची है। अब यह पूज्य बापू की विश्व की दूसरी सबसे ऊँची प्रतिमा बन गई है।

-सुनील पंचारिया, कक्षा 12
राजकीय चौपड़ा उच्च माध्यमिक विद्यालय,
गंगाशहर (बीकानेर)

दिवस

अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध-दिवस

❑ डॉ. जमनालाल बायती

संयुक्त राष्ट्र संघ की घोषणानुसार प्रतिवर्ष 1 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस मनाया जाता है। भारतवर्ष में वृद्ध या वरिष्ठ नागरिक 60 वर्ष से अधिक आयु का माना जाता है। यहाँ ऐसे नागरिकों की संख्या 8 करोड़ से अधिक मानी जा रही है। इस दिन 75 वर्ष की आयु पूरी करने वालों तथा विवाहित जीवन के 50 वर्ष पूरे करने वालों का सम्मान किया जाता है। सम्मान के इस कार्यक्रम में संगीत, प्रहसन, नाट्याभिनय, खेलकूद, अन्त्याक्षरी आदि मनोरंजन के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इन वृद्ध लोगों के पास अनुभवों का विशाल भण्डार होता है। पाठकों के लाभार्थ वृद्ध लोगों की सूझबूझ, प्रेरणास्पद तथा उपयोगिता को लेकर एक दो लघु कथाएँ इस रचना के अन्त में प्रस्तुत की जा रही है। ऐसे आयोजनों में उनके अपने सफल जीवन के अनुभव सुने जाते हैं, उनके स्वास्थ्य की, नेत्र, मलमूत्र, श्रवणेन्द्रियों, रक्तदाब, हृदय, रक्त, मधुमेह आदि की जाँच करवाई जाती है एवं तदनुसार परामर्श दिया जाता है। कई संस्थान ऐसे वृद्ध लोगों की समस्याएँ जानकर उनके समाधान का रास्ता निकालते हैं।

भारत में वृद्ध नागरिकों की संख्या 2001 में 7.20 करोड़ थी जो जीवन-स्तर में सुधार से 2011 में 8 करोड़ हो गई। वर्ष 2021 में यह संख्या लगभग 12 करोड़ हो सकती है। आज शहर तथा गाँवों में रहने वाले वृद्ध नागरिकों का अनुपात 22:78 है तथा पुरुष तथा महिला का अनुपात 1000:912 है। भारत में वर्ष 2010-2011 तक वृद्धजनों की देखभाल, उनकी सेवा सुश्रुषा करने वाले लगभग 800 वृद्धाश्रम हैं, इनमें से 325 संस्थान तो ऐसे हैं जहाँ कोई शुल्क या फीस या व्यय राशि नहीं ली जाती है। इन संस्थानों की सर्वाधिक संख्या केरल में लगभग 125 है। भारत में प्राप्त ऐसे 1000 वृद्ध नागरिकों का (शहरी-ग्रामीण क्षेत्रानुसार) विभाजन इस प्रकार बताया जाता है-

भोजन एवं निवास की व्यवस्था
(पिछली जनगणनानुसार)

प्रकार	ग्रामीण		शहरी	
	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला
1. अकेले	25	61	30	60
2. पति-पत्नी साथ-साथ	137	77	103	57
3. पति-पत्नी तथा अन्य पर सन्तान नहीं	613	313	648	297
4. अविवाहित पुत्रों के साथ	179	481	178	512
5. बहू के सम्बन्धी के साथ	38	59	35	65
6. सूचना देने के अनिच्छुक	8	9	6	9

इस तालिका से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि समस्या कितनी गम्भीर है? इस दशक में स्थिति में सुधार हुआ हो ऐसी कोई जानकारी या प्रयास लेखक के ज्ञान में नहीं आये, बल्कि दशक के आरम्भ में स्थिति और विकट सुनी गई। तालिका से स्पष्ट है कि इन विकट स्थितियों में आज भी कई लोग अकेले या एकाकी ही रहते हैं। कई वृद्ध नागरिक ऐसे भी हैं जो यह जानकारी देना नहीं चाहते-कारण कुछ भी हो सकता है। परिवार के प्रमुख का अपयश या बदनामी होना या जानकारी देने के बाद स्थिति और अधिक दयनीय या कष्टप्रद हो जाना आदि। एकाकी रहने की स्थिति में कठिनाई में या बीमार होने पर किन-किन विषम स्थितियों का सामना करना होगा, इसकी कल्पना करके ही मन सिहर उठता है।

लगभग 11% ऐसे निराश्रित बुजुर्ग हैं, जिनकी सार-सम्हाल करने वाला कोई नहीं है, पर साथ ही अधिकतम पुरुष बुजुर्ग आत्मनिर्भर भी हैं, पर वे भी साथ ही असुरक्षा का जीवन ही जी रहे हैं। कारण शहरों में एकाकी रहना कतई सुरक्षित नहीं है। आये दिन समाचार-पत्रों में ऐसी घटनायें छपती रही है। 60 वर्ष से अधिक आयु वाले कुछ बुजुर्गों के एक तिहाई गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बिता रहे हैं। 80 वर्ष की आयु होते हुए भी आधे से अधिक बुजुर्ग आत्मनिर्भर जी रहे हैं।

भारत में विभिन्न राज्यों में इन वृद्ध लोगों के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएँ आरम्भ की है। जैसे-दिल्ली में हेल्पेज इण्डिया, महाराष्ट्र में-सिल्वर लाइफ, अन्य कई राज्यों में वृद्धाश्रम, रियायती दरों पर हवाई-यात्रा तथा रेल-यात्रा, मुफ्त दवाइयाँ, चिकित्सा-सहायता, मनोरंजन गृह, वित्तीय सहायता या पेंशन, आयकर में छूट, बैंक तथा पोस्ट-ऑफिस में जमा पर आयकर में छूट तथा सामान्य से अधिक ब्याज दर आदि।

अभी-अभी मध्य प्रदेश सरकार ने बुजुर्गों के लिए तीर्थ-स्थानों की मुफ्त यात्रा की व्यवस्था की है। वे अपने साथ एक सहायक भी ले जा सकते हैं। यहाँ पर यह बताया जाना समीचीन लगता है कि सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया ने एक अभिनव योजना वृद्धजनों के लिये आरम्भ की है। इस योजना के अनुसार वृद्ध व्यक्ति अपने निजी निवास-गृह को बैंक के पास गिरवी रख देता है तथा नियमों व शर्तों के अनुसार बैंक मकान गिरवी रखने वाले व्यक्ति को दैनिक गुजारे-खर्च के लिए राशि उपलब्ध करवाता है तथा व्यक्ति सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। ऋण लेने वाले व्यक्ति के देहावसान पर मकान बैंक की सम्पत्ति हो जाता है।

अब एक दृष्टि वर्ष 2011 की जनगणना पर डालिये बुजुर्गों में पायी जाने वाली व्याधियाँ-

व्याधि का नाम	प्रतिशत	व्याधि का नाम	प्रतिशत
अवसाद (डिप्रेशन)	25	पेट की बीमारियाँ	33
आर्थराइटिस	23	उच्च रक्तचाप (शहरी)	50
बहरे/श्रवणदोष	30	उच्च रक्तचाप (ग्रामीण)	33
नेत्ररोग/दृष्टिदोष	50	मधुमेह (श.)	40
हड्डी टूटना/अपाहिज	10	मधुमेह (ग्रा.)	10
खून की कमी	10	****	**

हेल्पेज इण्डिया की 2011-12 के एक प्रतिवेदन के अनुसार 53% मामलों में पुत्रों ने वृद्धजनों को प्रताड़ित किया है, लगभग 20% बुजुर्गों ने बताया की बेटों पर आश्रित होने के कारण उनकी यह स्थिति हुई है। समाज में परिवार की लोक-लाज या प्रतिष्ठा के कारण 79% बुजुर्ग चुप रहना पसन्द करते हैं। एक अन्य सर्वेक्षण जो जयपुर तथा मुम्बई सहित अन्य 20 स्थानों पर किया गया था, के अनुसार 80% बुजुर्ग बेटों पर निर्भर हैं, 82% बुजुर्ग शारीरिक प्रताड़ना के शिकार हैं, 52% बुजुर्ग दीनहीन गरीब हैं। मात्र 12% बुजुर्गों को सरकार द्वारा प्रदत्त बुजुर्गों की सुविधाओं की जानकारी है, स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ मात्र 5% बुजुर्ग ही उठा पा रहे हैं।

यहाँ यह उल्लेख किया जाना लाभदायक रहेगा कि कुछ राज्यों में वृद्ध नागरिक 60 वर्ष की आयु वाले माने जाते हैं तो कुछ अन्य राज्यों में 65 वर्ष की आयु वाले और कुछ अन्य शेष राज्यों में 58 वर्ष की आयु वाले, इसी भाँति कुछ राज्यों में सभी श्रेणियों की बसों में यात्रा के लिए रियायती टिकिट नहीं दिये जाते हैं एवं कई जगह 50% छूट मिलती है तो कई राज्यों में 30% ही इन प्रावधानों में एकरूपता लायी जाना भी वरिष्ठ नागरिकों की न्यायसंगत माँग है। वृद्ध लोग अशक्त हैं, नेत्र-ज्योति कम हो गई हैं, उन्हें दूसरों के सहारे की, सुविधाजनक सहायता की आवश्यकता है, ऐसी स्थिति में एक सहायक सहित आरामदायक बसों या रेलों में भी सुविधा मिलनी चाहिए। इन वरिष्ठ नागरिकों में अपने जीवन का सुनहरा-प्रेरणादायी समय समाज या सरकार को दिया है तो उन्हें वृद्धावस्था में वांछित सुविधाएँ मिलनी ही चाहिए। इस भाँति ये इन सुविधाओं या रियायतों के सही पात्र हैं।

लेखक को अपनी यू.के. की शैक्षिक विदेश यात्रा में एक भारतीय मूल के सरदास साहब से भेंट हुई थी। उस भेंट की जानकारी पाठकों को देने का लेखक लोभ संवरण नहीं कर पा रहा है। वे सरदार साहब वहाँ की रक्षा सेवा में थे। उन्होंने बताया कि बीमार होने की फोन से सूचना देते ही एम्बुलेंस उन्हें चिकित्सालय पहुँचाता है, चिकित्सक जाँच करता है, दवा देता है तथा पुनः अपने निवास पर पहुँचाता है। यदि आवश्यकता हुई तो वहाँ भर्ती भी कर लिये जाते हैं। यह सभी व्यवस्था राजकीय-व्यय पर होती है। यदि कभी गुरुद्वारा जाना चाहे तो फोन करते ही सभी सुविधाएँ उपलब्ध करवा दी जाती हैं। वे वहाँ की इन राजकीय व्यवस्था से पूर्णतया सन्तुष्ट लगे। इस दृष्टि से देखा जाय तो भारत में अभी कितना कुछ किये जाने का क्षेत्र है।

वरिष्ठ नागरिकों को आनन्दप्रद जीवन यापन के लिये नीचे लिखी कतिपय बातों का अवश्य ही सजग रहकर अवश्य पालन करना चाहिए-

सक्रिय रहिए, धूम्रपान को तत्काल त्यागिये, उठते-बैठते समय उचित आसन का ध्यान रखिये, साहसी बनिये, मित्रों-सम्बन्धियों से मिलिये-जुलिए, पर्याप्त 6 से 8 घण्टे नींद लीजिए, खूब पानी पीजिए, तनाव को पास न आने दीजिए, प्रसन्नता से सराबोर रहिए, खूब हँसिये, विनोद कीजिए, प्रसन्नचित्त रहिए, अपने स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रखिये।

सफल वृद्धावस्था के सूत्र :-

भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में रुचियाँ विकसित कीजिए, सामाजिकता बढ़ाइये, आर्थिक आत्म-निर्भरता का ध्यान रखिये, मित्रों सम्बन्धियों से मिलिये, सामाजिक कार्यों-गतिविधियों में भाग लीजिए, विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागिता की मात्रा बढ़ाइये, परिवार के कार्यों-गतिविधियों में भाग लीजिए, दैनिक कार्य-व्यवहार में आनन्द लीजिए, चिन्ताएँ पास न फटकने दीजिए, मित्रों की-दूसरों की आलोचना न कीजिए और न उनकी गलतियाँ ही निकालिये। बुजुर्गों को परिवार में ही इज्जत, सुरक्षा, प्रतिष्ठा, सुकुन आदि मिल सकते हैं। इसलिये परिवार को इस दृष्टि से सुदृढ़ करने की प्रथम स्थान पर आवश्यकता है। बदली हुई स्थितियों में आज परिवार की भूमिका में परिवर्तन आया है, अतः सरकार को भी परिवार के साथ कन्धे-से-कन्धा मिलाकर सकारात्मक योगदान करना चाहिए।

लघुकथा :

पुराने समय की बात है। एक राजा ने यह घोषणा करवाई कि राज्य में जितने भी वृद्ध लोग हैं, उन सबको जंगल में छोड़ दिया जाय तथा जो व्यक्ति इस आज्ञा का पालन नहीं करेगा, वह दण्ड का भागी होगा। राज्य के सभी नागरिकों ने इस आज्ञा के पालनस्वरूप अपने-अपने वृद्धमाता-पिताओं को जंगल में छोड़ आये। परन्तु एक नवयुवक ने ऐसा न कर अपने ही निवास में अपने माता-पिता को तलघर में छिपा दिया तथा समय-समय पर उनके लिये वहीं भोजन-पानी की व्यवस्था कर दी।

कुछ समय बाद राजा ने दूसरी घोषणा यह करवाई कि सभी व्यक्ति सात दिन में धूप और छाया में एक साथ चलकर राज-दरबार में उपस्थित हों। सभी नागरिक असमंजस में थे कि इस आज्ञा का पालन कैसे हो? उस युवक ने राजा की इस घोषणा पर अपने वृद्ध माता-पिता से परामर्श किया। वृद्ध माता-पिता ने सुझाया कि-बेटे! तुम अपने सिर पर मूंज से छितरी बुनी हुई चारपाई रखकर दरबार में चले जाओ। ऐसा करने पर दरबारियों सहित राजा ने इस प्रकार आने का नवयुवक से कारण जानना चाहा तो उसने कहा की-'शर्त के अनुसार दोनों धूप तथा छाया चारपाई के नीचे थी, इस भाँति मैंने राजाज्ञा का पालन किया है। अब राजा ने पूछा कि यह विधि उसने किससे पूछी तो नवयुवक ने उत्तर देने के पूर्व राजा से यह आश्वासन माँगा कि वे सलाह देने वाले को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचायेंगे। राजा के आश्वासन पर नवयुवक ने बताया कि उसने यह सलाह अपने वृद्ध पिता से ली है, जिनका वह बहुत आदर करता है। जिसको राजाज्ञा के बावजूद अपने निवास के तलघर में छिपा रखा है। नवयुवक के उत्तर से प्रभावित होकर राजा ने अपनी आज्ञा वापस ले ली, रद्द कर दी, नवयुवक को पुरस्कृत किया तथा वृद्धजनों को आदर सहित बुलाकर अपने परिवारजनों के साथ रहना स्वीकार कर लिया। राजा ने माना कि वृद्ध नागरिकों के पास अनुभवों का विशाल भण्डार होता है, जिससे वे नवयुवकों का मार्गदर्शन कर, जीवन को लाभान्वित कर खुशियों से भर सकते हैं, उनके अनुभवों का राज्य के चहुमूखी विकास में योगदान लिया जाना चाहिए, लाभ उठाना चाहिए।

-बी-186, आर.के. कॉलोनी,
भीलवाड़ा-311001
मो. 01482-238540

**अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।।**

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

सूर्यनगरी : जोधपुर

□ डॉ. गोपाल सिंह कच्छावाह

जोधपुर राजस्थान का सबसे बड़ा रेगिस्तानी संभाग है। अपनी अनूठी विशेषताओं के कारण इस शहर को दो उपनाम 'सन सिटी' और 'ब्लू सिटी' मिले हैं। 'सन सिटी' नाम जोधपुर के चमकीले धूप के मौसम के कारण दिया गया है, जबकि 'ब्लू सिटी' नाम शहर के मेहरानगढ़ किले के आस-पास स्थित नीले रंग के घरों के कारण दिया गया है। जोधपुर शहर थार रेगिस्तान की सीमा पर स्थित होने के कारण इसे 'थार के प्रवेश द्वार' के रूप में भी जाना जाता है। यह शहर 1459 ई. में राठौड़ परिवार के नेता राव जोधा द्वारा स्थापित किया गया था। इससे पहले, शहर को 'मारवाड़' नाम से जाना जाता था किन्तु वर्तमान नाम शहर के संस्थापक, एक राजपूत मुखिया राव जोधा के नाम पर दिया गया है।

जोधपुर मारवाड़ों का मुख्य वित्तीय राजधानी था, जहाँ राठौड़ वंश ने शासन किया था। जोधपुर थार मरुस्थल के दाहिने छोर पर स्थित है। 15 वीं सदी में निर्मित किला और महल यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहे हैं। पहाड़ी के शिखर और शहर के अंतिम छोर पर अवस्थित मेहरानगढ़ का किला मध्यकालीन राजशाही का मानो प्रतिबिम्ब है। थार रेगिस्तान के किनारे बसा, जोधपुर का शानदार शाही शहर, रेगिस्तान की शून्यता में प्राचीन कथाओं से गूंजता है। किसी समय में यह मारवाड़ राज्य की राजधानी था।

शहर परिचय : ब्लू सिटी के नाम से प्रसिद्ध जोधपुर शहर की पहचान यहाँ के महलों और पुराने घरों में लगे छितर के पत्थरों से होती है। पन्द्रहवीं शताब्दी का विशालकाय मेहरानगढ़ किला, पथरीली चट्टान वाली पहाड़ी पर, मैदान से 125 मीटर ऊँचाई पर विद्यमान है। आठ द्वारों व अनगिनत बुर्जों से युक्त यह शहर दस किलोमीटर लंबी ऊँची दीवार से घिरा है।

सोलहवीं शताब्दी का मुख्य व्यापार केन्द्र, किलों का शहर जोधपुर, अब राजस्थान का दूसरा विशालतम शहर है। पूरे शहर में बिखरे वैभवशाली महल, किले और मंदिर, एक तरफ जहाँ ऐतिहासिक गौरव को जीवंत करते हैं, वहीं दूसरी ओर उत्कृष्ट हस्तकलाएँ, लोक नृत्य, संगीत और प्रफुल्ल लोग शहर में रंगीन समां बाँध देते हैं। मथानिया लाल मिर्च के लिए विख्यात है।

जनसंख्या (2011) : जोधपुर की कुल जनसंख्या 3685681 है जिनमें 1924326 पुरुष तथा 1761355 महिलाएं हैं। दशकीय वृद्धि दर 27.69 प्रतिशत तथा लिंगानुपात 915 है। यहाँ का घनत्व 161 तथा साक्षरता दर 67.09 प्रतिशत है। इसमें पुरुष साक्षरता 80.46 प्रतिशत तथा स्त्री साक्षरता 52.57 प्रतिशत है।

जीवनशैली : जोधपुर शहर के लोग बहुत मिलनसार होते हैं। ये सदैव दूसरों की मदद के लिए तत्पर रहते हैं। उलझी हुई घुमावदार गलियाँ पटरियों पर लगी दुकानों से घिरी हैं। कलात्मक रूप से बनी हुई रंग-बिरंगी पोशाकें पहने हुए लोगों को देखकर प्रतीत होता है कि जोधपुर की जीवनशैली असाधारण रूप से सम्मोहित करने वाली है।

औरतें घेरदार लहंगा और आगे व पीछे के हिस्सों को ढकने वाली तीन चौथाई लंबाई की बांहों वाली जैकेट पहनती है। पुरुषों द्वारा पहनी हुई रंगीन पगड़ियाँ शहर में अलग ही रंग बिखेर देती है। आमतौर से पहने जाने वाली ढीली ढाली और कसी, घुड़सवारी की पैंट 'जोधपुरी' ने यहीं से अपना नाम पाया। जोधपुर के कपड़ों में जोधपुरी कोट पूरे भारत में प्रसिद्ध हैं जिसे यहाँ के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने एक अलग ही पहचान दिलाई है। यह उल्लेखनीय है कि जोधपुर ने राजस्थान को स्वनाम धन्य जयनारायण व्यास, बरकतुल्ला खाँ एवं वर्तमान मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत सहित तीन मुख्यमंत्री दिए हैं।

शिक्षा क्षेत्र : राजस्थान में जोधपुर शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे है। दूर-दूर से विद्यार्थी यहाँ पढ़ने के लिये आते है। जोधपुर को सी.ए. की खान कहा जाता है। पूरे भारत में सबसे ज्यादा सी.ए. यहीं से निकलते हैं। शिक्षा के लिए यहाँ पर कई विकल्प मौजूद हैं। यहाँ विश्व प्रसिद्ध आई.आई.टी., नेशनल लॉ युनिवर्सिटी, एम्स, काजरी, आफरी, आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय स्थित है। देश का सबसे बड़ा पाण्डुलिपि भण्डार राजस्थान प्राच्य शिक्षा संस्थान जोधपुर में ही है।

हस्तशिल्प : उत्कृष्ट हस्तशिल्पों के समृद्ध संग्रह का रंगीन प्रदर्शन देख कर जोधपुर के बाजारों में खरीददारी करना एक उत्साहपूर्ण अनुभव है। बंधेज का कपड़ा, कशीदाकारी की हुई चमड़े, ऊँट की खाल, मखमल आदि की जूतियाँ, आकर्षक रेशम की दरियाँ, मकराना के संगमरमर से बने स्मृतिचिह्न, उपयोगी व सजावटी वस्तुओं की विस्तृत किस्में आदि इन बाजारों में उपलब्ध हो जाती हैं। अनगिनत त्योहार, समृद्ध अतीत और शाही राज्य की संस्कृति का उत्सव मनाते हैं। वर्षों में एक बार विशाल पैमाने पर मारवाड़ समारोह मनाया जाता है। गुरुओं के तालाब में हनुमान सिंह राजपुरोहित द्वारा सुन्दर 'राजपूति अंग्रेला' बेश बनाये जाते है जो सब से बढ़िया और फेशनेबल होते हैं।

उपलब्धियाँ : जोधपुर को राजस्थान की न्यायिक राजधानी कहा जाता है। राजस्थान का उच्च न्यायालय यहीं स्थित है। आज यह शहर किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है क्योंकि यहाँ सभी केन्द्रीय एवं राज्य विभाग उपलब्ध है, यहाँ पूरे विश्व से जुड़ने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा भी मौजूद है। चर्चा में रहने वाली थार एक्सप्रेस रेलगाड़ी और पैलेस ऑन व्हील जैसी शाही रेल गाड़ियाँ यहीं से शुरू होती है। पूरे राजस्थान के प्रसिद्ध विभाग जैसे-मौसम विभाग, सीबीआई, कस्टम, वस्त्र मन्त्रालय आदि मौजूद है।

मुख्य आकर्षण

मेहरानगढ़ का किला : मेहरानगढ़ का किला पहाड़ी के बिल्कुल ऊपर बसे होने के

कारण राजस्थान के सबसे खूबसूरत किलों में से एक है। शृंखलाबद्ध रूप से बने द्वार इस किले के सौंदर्य में श्रीवृद्धि करते हैं। इन्हीं द्वारों में से एक है-जयपोल। इसका निर्माण राजा मानसिंह ने 1806 ई. में किया था। दूसरे द्वार का नाम है-विजयद्वार। इसका निर्माण राजा अजीत सिंह ने मुगलों पर विजय के उपलक्ष्य में किया था। किले के अंदर भी पर्यटकों को देखने हेतु कई महत्त्वपूर्ण इमारतें हैं। जैसे-मोती महल, सुख महल, फूलमहल आदि।

125 मीटर ऊँची पहाड़ी पर स्थित पाँच किलोमीटर लंबा भव्य किला बहुत ही प्रभावशाली और विकट इमारतों में से एक है। बाहर से अदृश्य, घुमावदार सड़कों से जुड़े इस किले के चार द्वार हैं। किले के अंदर कई भव्य महल, अद्भुत नक्काशीदार किवाड़, जालीदार खिड़कियाँ और प्रेरित करने वाले नाम हैं। इनमें से उल्लेखनीय हैं मोती महल, फूल महल, शीश महल, सिलेह खाना, दौलत खाना। इन महलों में भारतीय राजवेशों के साज समान का विस्मयकारी संग्रह निहित है। इसके अतिरिक्त पालकियाँ, हाथियों के हौदे, विभिन्न शैलियों के लघु चित्रों, संगीत वाद्य, पोशाकों व फर्नीचर का आश्चर्यजनक संग्रह भी है।

जसवंत थड़ा : यह पूर्ण रूप से मार्बल निर्मित है। इसका निर्माण ई. सन् 1899 में राजा जसवंत सिंह द्वितीय और उनके सैनिकों की याद में किया गया था। इसकी कलाकृति आज भी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की याद में सफेद संगमरमर से ई. सन् 1899 में निर्मित यह शाही स्मारकों का समूह है। मुख्य स्मारक के अंदर जोधपुर के विभिन्न शासकों के चित्र हैं।

उम्मेद महल : उम्मेद भवन छीतर झील के पास एक पहाड़ी पर स्थित है। महाराजा उम्मेद सिंह ने इस महल का निर्माण सन् 1943 में किया था। मार्बल और बालूका पत्थर से बने इस महल का दृश्य पर्यटकों को खासतौर पर लुभाता है। इस महल के संग्रहालय में पुरातन युग की घड़ियाँ और पेटिंग्स भी संरक्षित है। यही एक ऐसा बीसवीं सदी का महल है जो बाढ़ राहत परियोजना के अंतर्गत निर्मित हुआ जिसके कारण बाढ़ से पीड़ित जनता को रोजगार प्राप्त हुआ। यह महल सोलह वर्ष में बनकर तैयार हुआ। बलुआ पत्थर से बना यह अति समृद्ध भवन अभी पूर्व शासकों का निवास स्थान है जिसके एक हिस्से में होटल चलता है और बाकी के हिस्से में संग्रहालय निर्मित है।

गिरदीकोट और सरदार मार्केट : छोटी-छोटी दुकानों वाली, संकरी गलियों में छितरा रंगीन बाजार शहर के बीचों बीच है। यह हस्तशिल्प की विस्तृत किस्मों की वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है तथा खरीददारों का मनपसंद स्थल है।

राजकीय संग्रहालय : इस संग्रहालय में चित्रों, मूर्तियों व प्राचीन हथियारों का उत्कृष्ट समावेश है। अरना-झरना मरु संग्रहालय, संग्रहालय का जलघर

उत्सव व मेले : जोधपुर में सभी पर्वो को धूमधाम से मनाया जाता है, यहाँ का बेंतमार मेला और कागा का शीतला माता मेला बहुत प्रसिद्ध है। लोग दूर-दूर से इन मेलों को देखने आते हैं। राजस्थान के लोक देवता बाबा रामदेव का मसूरिया मेला भी प्रसिद्ध है। यहाँ पर सावन माह की बड़ी तीज का मेला विश्व प्रसिद्ध है। जोधपुर में गणगौर पूजन का भी विशेष महत्त्व है, और इसी उत्सव पर पुराने शहर में गणगौर की झांकिया भी निकाली जाती है। धिंगा-गंवर इसके बाद आने वाला एक आयोजन है-इस दिन महिलाएँ शहर के परकोटे में तरह-तरह के स्वांग रच कर रात को बाहर निकलती हैं और पुरुषों को बैंत मारती है। इसके अतिरिक्त जोधपुर का नागौर मेला राजस्थान में दूसरा सबसे बड़ा मवेशियों का त्योहार है। यह हर साल जनवरी और फरवरी के महीनों के दौरान आयोजित किया जाता है। लोकप्रिय रूप से 'नागौर का मवेशी मेला' नाम से जाना जाता है। इस मेले में लगभग 70,000 बैलों, ऊंटों और घोड़ों का कारोबार होता है। जानवरों को इस अवसर पर भव्यता से सजाया जाता है। ऊंट दौड़, बैल दौड़, बाजीगर, कठपुतली वाले और कहानी सुनाने वाले इस त्योहार के लोकप्रिय आकर्षण है।

निकटवर्ती स्थल

बालसमंद झील : यह जोधपुर से 5 कि.मी. दूर है। इस सुंदर झील का निर्माण ई. सन् 1159 में हुआ था। झील के किनारे खड़ा भव्य ग्रीष्मकालीन महल ख़ूबसूरत बगीचों से घिरा हुआ है। भ्रमण करने के लिए यह एक रमणीय स्थल है। पर्यटक बालसमंद लेक पैलेस से झील को देख सकते हैं। यह महल अब एक प्रसिद्ध हेरिटेज होटल में बदल दिया गया है जो पारम्परिक राजपूताना शैली को दर्शाता है।

मण्डोर गार्डन : यह शहर से 8 किलोमीटर की दूरी पर है। मारवाड़ की प्राचीन राजधानी में जोधपुर के शासकों के स्मारक हैं। ये छत्र के आकार के आम स्मारकों से अलग है। पास के दो हॉल, तीन लाख का तीर्थ और नायकों का हॉल, गार्डन के आकर्षण बढ़ाते हैं। 'हॉल ऑफ हीरों' में चट्टान से दीवार के रूप में तराशी हुई पन्द्रह आकृतियाँ हैं जो हिन्दू देवी-देवताओं का प्रतिनिधित्व करती है। अपने ऊँचे चट्टानी चबूतरों तथा आकर्षक बगीचों के कारण यह प्रचलित पिकनिक स्थल बन गया है।

महामंदिर : इसका निर्माण ई. सन् 1812 में हुआ था। यह अपने 84 नक्काशीदार खंभों के कारण असाधारण है।

कायलाना झील : यह खूबसूरत झील एक आदर्श पिकनिक स्थल है। नौकायन सुविधा उपलब्ध है।

ओसियाँ : जोधपुर-बीकानेर राजमार्ग की दूसरी दिशा पर रेगिस्तान में यह मरुद्यान स्थित है। इस प्राचीन नगर-क्षेत्र की यात्रा के दौरान बीच-बीच में पड़ते हुए रेगिस्तानी विस्तार व छोटे-छोटे गाँव अतीत के लहराते हुए भू-भागों में ले जाते है। ओसियां में सुन्दर तराशे हुए जैन व ब्राहाणों के मंदिर है। इनमें से सबसे असाधारण हैं-आरम्भ का सूर्य मंदिर और बाद के काली मंदिर, सच्चियाय माता मंदिर और भगवान महावीर का मुख्य मंदिर। ओसियां को राजस्थान का भुवनेश्वर कहा जाता है।

धवा : एक वन्य प्राणी उद्यान जिसमें भारतीय मृग सबसे अधिक संख्या में है। इसे स्थानीय लोग धवा के नाम से उच्चारित करते है।

रोहट किला : अब हैरिटेज होटल है, यह किला देखने योग्य है।

लूनी किला : किले को अब हैरिटेज होटल में परिवर्तित कर दिया गया है। किला व उसके आसपास का वातावरण दर्शनीय है।

खरीदारी : जोधपुर के मोची गली से चमड़े का जूता, रंगीन कपड़ा, टाई, पॉलिश किया हुआ घरेलू सजावटी सामान आदि की

खरीदारी की जा सकती है। जोधपुर के मिर्चीबड़े बाहर के देशों में निर्यात किये जाते हैं।

भोजन : यहाँ खासतौर पर दूध निर्मित खाद्य पदार्थों का प्रयोग होता है। जैसे मावा का लड्डू, क्रीम युक्त लस्सी, मावा कचौरी और दूध फिरनी आदि। यहाँ का मिर्ची बड़ा बहुत ही प्रसिद्ध है। भोजन में प्राय: यहाँ बाजरे के आटे से बनी रोटियाँ जिन्हें सोगरा कहते हैं, प्रमुखता से खाया जाता रहा है। सोगरा किसी भी चटनी, साग आदि के साथ खाया जाता है जो खाने में स्वादिष्ट होता है। इसी प्रकार छाछ और प्याज भी इसके साथ खाया जाता है।

जोधपुर कैसे पहुँचें : जोधपुर शहर का अपने हवाई अड्डा और रेल्वे स्टेशन है जो प्रमुख भारतीय शहरों से सीधे जुड़े हैं। नई दिल्ली का इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा निकटतम अंतर्राष्ट्रीय एयरबेस है। पर्यटक जयपुर, दिल्ली, जैसलमेर, बीकानेर, आगरा, अहमदाबाद, अजमेर और उदयपुर से बसों द्वारा भी यहाँ तक पहुँच सकते है। इस क्षेत्र में वर्ष भर एक गर्म और शुष्क जलवायु बनी रहती है। ग्रीष्मकाल, मानसून और सर्दियाँ यहाँ के प्रमुख मौसम है। जोधपुर की यात्रा का सबसे अच्छा समय अक्टूबर के महीने से शुरू होकर और फरवरी तक रहता है।

प्रति वर्ष आश्विन माह की शरद पूर्णिमा से दो दिन तक जोधपुर में मारवाड़ महोत्सव अथवा माँड महोत्सव मनाया जाता है। दरअसल यहाँ राजस्थान के वीर सपूतों के सम्मान में किया जाता है जिसमें लोक गायक नृत्य एवं संगीत के माध्यम से वीरों की गाथाएं गाते हैं। इस अवसर पर ऊँट पोलो भी खेला जाता है।

इस प्रकार सूर्यनगरी जोधपुर न केवल राजस्थान में ही अपितु समूचे देश और विश्व के मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। शिक्षा, चिकित्सा, कला, संस्कृति, वास्तु शास्त्र आदि क्षेत्रों में जोधपुर ने राजस्थान का नाम रोशन किया है। जोधपुर रियासत काल से ही उपलब्धियों से सराबोर रहा है और उसकी उपलब्धियों की यह यात्रा अनवरत जारी है। हमें हमारे सूर्यनगरी जोधपुर पर गर्व है।

-प्राचार्य एवं प्रबंध निदेशक
गोकुल बाबू डिग्री कॉलेज, पीपाड़ शहर-342601
मो. 9829858232

आँखन देखी-

शिक्षा संबल अभियान-2013

बच्चों ने कलक्टर का मन मोहा

❒ दिनेश श्रीमाली

जहां एक तरफ सरकारी विद्यालयों में बालकों के गिरते शैक्षिक स्तर को लेकर रीडिंग कैम्पेन जैसे कार्यक्रम चलाने पड़ रहे हैं, वहीं राजसमंद जिले के सुदूर ग्राम्यांचल की राजकीय प्राथमिक विद्यालय, भोपों की भागल के नन्हे बच्चों के शैक्षिक स्तर, शाला पर्यावरण, सामान्य ज्ञान और स्वच्छता देख शिक्षा संबलन का जायजा लेने पहुंचे जिला कलक्टर डॉ. प्रीतम बी. यशवंत दंग रह गए।

जिला कलक्टर 23 सितम्बर को जब शिक्षा संबलन कार्यक्रम के तहत विद्यालय अवलोकन करने निकले तो उन्हें भी इस बात का शायद यकीन नहीं होगा कि खमनोर पंचायत समिति के मोलेला ग्राम पंचायत की एक छोटी सी भागल में चल रहे राजकीय प्राथमिक विद्यालय में ऐसा कार्य हो रहा है जो पूरे प्रदेश के लिए आदर्श बन सकता है। जिला कलक्टर के साथ जब हम विद्यालय के प्रवेश द्वार पर पहुंचे तो मैना, गौरैया, कबूतर, बुलबुल, तोतों की चीं-चीं, गुलाब, चमेली, मोगरे की महक के साथ अजीब शकुन दे रही थी। छोटे से प्राथमिक विद्यालय में करीब चार सौ पेड़-पौधे और उन पर टंगे सैकड़ों चीड की लकड़ी और मिट्टी के बने घौंसले देख मन मयूर नाच उठा।

कक्षा अवलोकन के दौरान दूसरी कक्षा के छात्र अशोक माली ने 18 का पहाड़ा फर्राटे से बोल दिया तो प्रभु कालबेलिया धारा प्रवाह पुस्तक पढ़ गया। तीसरी कक्षा के बालकों ने अंग्रेजी पुस्तक का वाचन कर लिया तो कक्षा चौथी की मीरा गायरी ने 24 का पहाड़ा बोल हमारा का मन जीत लिया । पांचवी कक्षा के बालकों ने दो कड़ी का भाग, करोड़ तक संख्या ज्ञान का एकदम सही सही उत्तर दे दिया। पुस्तक ज्ञान के साथ यहां के बालकों का सामान्य ज्ञान भी काफी अच्छा था। राजस्थान के मुख्यमंत्री, देश के राष्ट्रपति, राजधानी, पड़ौसी देश के नाम राजधानी, राज्य पशु, पेड़, पक्षी का एकदम सही जबाव सब कुछ दंग करने वाला था। इतना ही नहीं जब कलक्टर ने बच्चों को कल्पना चावला, सीमा विलियम्स, रवीन्द्रनाथ टेगौर, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरु के चित्र दिखा प्रश्न पूछे तो भी सही उत्तर पाकर वे गद्गद् हो गए । हम बच्चों से बातचीत कर रहे थे पर बच्चे भी बच्चों से सवाल-जवाब करते दिखे। पांचवीं कक्षा के उदयलाल गायरी ने प्रश्न किया कि गुलाबी पसीना किसे आता है तो डॉ. यशवंत समेत हम सभी एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे लेकिन कक्षा में तो दस-पांच हाथ खड़े थे। उत्तर मिला दरियाई घोड़ा । वाह क्या प्राथमिक विद्यालय में भी ऐसा हो सकता है हमारे दिमाग की घंटी बजने लगी।

जिला कलक्टर ने विद्यालय के प्रधान शिक्षक कृष्णगोपाल गुर्जर से पढ़ाने के तरीके की भी जानकारी ली । उन्होंने गुर्जर और उनके साथी अध्यापिका ललिता सेन के कार्य को अनुकरणीय बताया। डॉ. यशवंत ने इस प्रकार के विद्यालयों को आदर्श विद्यालय बताते हुए कहा कि यहां पर शिक्षक सेमीनार, संस्था प्रधान कार्यशालाओं का आयोजन होना चाहिए जिससे दूसरे लोग भी इससे प्रेरणा प्राप्त कर सके। विद्यालय में आए गांव के लोगों से मालूम किया तो पता चला यहां के शिक्षक गुर्जर सुबह सात बजे विद्यालय आ जाते हैं और सायं सात बजे तक यहीं रहते हैं। करीब तीस घरों की बस्ती वाला भोपों की भागल का यह गांव गुरुजी की एक आवाज पर खड़ा हो जाता है। स्कूल में ऐसा वातावरण कि बच्चा घर जाने को तैयार नहीं।

बहरहाल, यह विद्यालय देख कर ऐसा लगा कि मूंछों वाली माँ गिजू भाई के बारे में तो हमने केवल पढ़ा है लेकिन कृष्णगोपाल गुर्जर के समर्पण का परिणाम तो हमारे सामने है। जीवन के पांचवें दशक के अंतिम पड़ाव पर खड़ा हूँ पर आज का दिन मेरी शैक्षिक यात्रा को झकझोरने वाला है। यों विभाग ने मुझे संबलन अभियान के तहत जिला कलक्टर के साथ शिक्षाविद् के नाते भेजा था लेकिन आज भोपों की भागल से मैं भी कुछ विचार चुरा कर ले जा रहा हूं जो शायद मेरे विद्यालय में भी कुछ बदलाव कर सके।

-प्रधानाध्यापक, रा.उ.प्रा.वि.
डूमखेड़ा, तह. जिला-राजसमंद-313326
मो. 9414176733

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2013

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सब को मिलनी चाहिए-मार्ग्रेट आल्वा

'शिक्षा का काम नौकरी नहीं है।
यह एक मिशन है।'
'यह एक कमिटमेंट है।'
'समाज की चाबी आपके हाथ में है।'
'You can open the Mind.'
'You are the Nuclear of New India.'
'You are the Nuclear of New Generation.'

–मार्ग्रेट आल्वा
राज्यपाल, राजस्थान

5 सितम्बर, 2013 शिक्षा दिवस, राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, जयपुर का बिड़ला सभागार, गरिमामय वातावरण, सभी में शिक्षकों के प्रति सम्मान, कृतज्ञता का भाव, शुभ कामनाओं का सिलसिला हो भी क्यों न पूरे राज्य के 62 शिक्षकों का सम्मान समारोह और वो भी महामहिम श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा, राज्यपाल राजस्थान के मुख्य आतिथ्य में। बिड़ला सभागार अंदर और बाहर नई ऊर्जा से सराबोर।

स्काउट गाइड N.C.C. के उत्साही ऊर्जावान कैडेट्स पूर्ण मनोयोग से स्वागत सत्कार में। माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ. वीना प्रधान समारोह समय से पूर्व पधारकर सारी व्यवस्थाओं पर निगरानी रखे हुए। सबसे पहले पधारे सम्मान समारोह के अध्यक्ष और माननीय शिक्षा मंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा इसके बाद पधारीं सम्मान समारोह की विशिष्ट अतिथि माननीया श्रीमती नसीम अख्तर इंसाफ। खचाखच भरे बिड़ला सभागार में महामहिम श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा, राज्यपाल राजस्थान के प्रवेश करते ही सभी ने अपने स्थान से खड़े होकर मुख्य अतिथि महोदया के प्रति सम्मान प्रकट किया। राष्ट्रगान के ओजस्वी गान के साथ ही राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह–2013 के गरिमामय मंच पर महामहिम श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा, शिक्षामंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा, राज्यमंत्री श्रीमती नसीम अख्तर इंसाफ, अध्यक्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राज. अजमेर प्रो. पी.एस. वर्मा, प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा श्रीमती वीनू गुप्ता, निदेशक माध्यमिक शिक्षा डॉ. वीना प्रधान ने मंच पर आसन ग्रहण किया।

मुख्य अतिथि, अध्यक्ष और विशिष्ट अतिथिगण ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया।

समवेत स्वरों में सरस्वती वन्दना जय जय हे भगवती सुर भारती... से माहौल सरस्वती मय हो गया। गरिमामय मंच पर पुष्पगुच्छ से मुख्य अतिथि, अध्यक्ष और विशिष्ट अतिथिगण का स्वागत किया गया।

प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा श्रीमती वीनू गुप्ता ने स्वागत भाषण देते हुए बताया कि राज्यस्तरीय सम्मान समारोह–2013 में सम्मानित होने वाले राज्य के 62 शिक्षकों सहित अब तक कुल 1763 शिक्षक राज्यस्तर पर सम्मानित हो चुके हैं। वहीं राष्ट्रीय स्तर पर इस बार 15 शिक्षकों का सम्मान हो रहा हैं।

डॉ. राधाकृष्णन का पुण्यस्मरण करते हुए प्रमुख शासन सचिव श्रीमती वीनू गुप्ता ने सभी शिक्षकों को उत्कृष्ट सेवाओं के लिए बधाई दी साथ ही स्कूली शिक्षा के स्तर को संतोषजनक नहीं मानते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए और प्रयासों की आवश्यकता भी प्रतिपादित की।

शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना के अन्तर्गत शिक्षक दिवस पर माध्यमिक शिक्षा के शिविरा प्रकाशन अनुभाग द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तकों के क्रम में 2013 के लिए पाँच पुस्तकों का लोकार्पण महामहिम श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा राज्यपाल, राजस्थान के सान्निध्य में गरिमामय मंच पर किया गया।

शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना के अन्तर्गत अब तक 231 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

राज्य के सम्मलित होने वाले 62 शिक्षकों के श्रेष्ठ व्यक्तित्व और कृतित्व को दर्शाने वाली पुस्तिका 'प्रशस्तियाँ' का विमोचन भी राज्यपाल महामहिम श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा, शिक्षा मंत्री, शिक्षा राज्यमंत्री, अध्यक्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के करकमलों से किया गया।

माननीया शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती नसीम अख्तर इंसाफ ने शिक्षक दिवस पर सम्मानित हो रहे शिक्षकों के साथ सभी शिक्षकों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। अपने बाल्यकाल से ही शिक्षकों के प्रति आदर भाव को प्रकट करते हुए श्रीमती इंसाफ ने कहा– 'आज मैं जो कुछ भी हूँ वो शिक्षा के बल पर ही हूँ। इसलिए हमारा प्रत्येक बच्चा शिक्षा प्राप्त करे तथा अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करे यही मेरी इच्छा है। जो त्याग करता है वही प्राप्त भी करता हैं। हमारी संस्कृति गुरुओं के सम्मान की संस्कृति है हमें गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए। लैपटाप, स्कूटी और छात्रवृत्ति वितरण योजना को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताते हुए आपने दावा किया कि इससे शिक्षा की गुणवत्ता में भी सुधार आयेगा।

समारोह के विशिष्ट अतिथि और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. पी.एस. वर्मा ने शिक्षकों को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए अध्ययन, अध्यापन आकलन और

मूल्यांकन पर जोर देते हुए कहा कि 'गुरु का स्थान गोविन्द से भी आगे बताया है अतः शिक्षक आर्थिक असमानता को मिटाने, पर्यावरण व प्रकृति के प्रति सचेत रहते हुए सादा जीवन उच्च विचार अपनाते हुए अपने विद्यार्थियों को निरन्तर आगे बढ़ाने का जीवन दर्शन अपनाएं। शिक्षक अपने ज्ञान और आचरण से आने वाली पीढ़ी को नैतिकता और निर्भीकता दे सके, इस ओर विशेष ध्यान दें।'

समारोह में मंच संचालन कर रहे राजेन्द्र हंस ने माननीय शिक्षा मंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा को जब उद्बोधन के लिए 'शिक्षा और सृजन के मसीहा' के नाम से आमंत्रित किया तो पूरा सदन करतल ध्वनि से गुंजायमान हो गया। उन्होंने माँ सरस्वती को नमन और डॉ. राधाकृष्णन का पुण्य स्मरण करते हुए सम्मानित होने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रदान की। सम्मानित शिक्षकों को शिक्षा जगत के प्रकाश पुंज कहा और पथ प्रदर्शन करने वाले व्यक्तित्व के रूप में उनका स्वागत और अभिनन्दन किया।

राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं में विद्यार्थियों को लैपटॉप, पी.सी. टेबलेट, ट्रांसपोर्ट वाउचर, साइकिल, स्कूटी व चैक वितरण जैसी योजनाओं से विद्यार्थियों की शिक्षा में गुणवत्ता लाने की दिशा में अभूतपूर्व कदम बताया। विशेषतः बालिका शिक्षा हेतु किए जा रहे प्रयासों और नई शिक्षक भर्ती के निर्णयों से राज्य में सबको शिक्षा और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के कुशल नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़ रहे कदमों की जानकारी दी।

समारोह की मुख्य अतिथि और महामहिम श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा, राज्यपाल राजस्थान ने शिक्षक दिवस के अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामना दी। 'ईश्वर आपको और भी आगे बढ़ाए आपकी प्रगति हो ऐसी मेरी प्रभु से विनती है।' केवल एक दिन के सम्मान से ठीक नहीं होगा हमारे यहां तो गुरु शिष्य परम्परा रही है। ...पहले जो गुरु रहे हैं, वैसा सम्बन्ध आज दिखाई नहीं दे रहा..., अब टीचर है और वो नौकरी करता है। एक शिक्षक का काम जो होता है वो नौकरी नहीं है...It's misson, It's a Commitment... You are nuclear of New generation. बच्चों का जीवन, माइण्डसेट आपके हाथ में है। आप जो Values बच्चों को देते हैं वे ही बच्चों के साथ जीवन भर रहती हैं। मुझे आज बहुत खुशी है कि महान् शिक्षक डॉ. राधाकृष्णन का जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मना रहे हैं। खूब Teacher हैं फिर भी अध्यापक की कमी हैं, चार-चार क्लासों को एक टीचर पढ़ाता है। चुनाव और मिड डे मील जैसी योजनाओं में टीचर की सेवाएं ली जाती हैं...बहुत कुछ सरकारें कर रही हैं। सब कुछ कोशिश कर रही है...अभी भी बहुत कमी है। गाँवों में स्कूल की हालत क्या है? स्कूल है Teacher नहीं हैं। सब कुछ लोग शहर में बैठेंगे तो गाँव का क्या होगा? वैरी बिग गैप बिटवीन विलेज एण्ड सिटी, प्राइवेट स्कूल और सरकारी स्कूल में, अमीर और गरीब में....Quality Education सबको मिलनी चाहिए...Value Education Must मूल्यांकन की समस्या है। अभी जो परीक्षा होती है वो मूल्यांकन नहीं है यह तो Memory Test है।... 'तीसरी क्लास के बच्चे जोड़-बाकी नहीं कर पाते', 'VIII वाला III की किताब नहीं पढ़ पाता' क्या गलती है? कहीं न कहीं? हमें सोचना पड़ेगा। हमारा काम ठीक हो रहा है क्या? ...Teacher के बिना कोई Education नहीं हो सकती। मैं समझती हूँ आप की चुनौती बड़ी है। मैं आपसे शिकायत नहीं अपील करती हूँ-You are the nuclear of new India. विद्यालयों में पानी, टीचर और शौचालय भी पर्याप्त नहीं हैं। विद्यालयों को बाल केंद्रित बनाइए अध्यापक केन्द्रित नहीं। कमिटमेंट के बिना कुछ नहीं होगा। ...Quality Education के लिए आपको आगे आना होगा। बच्चों को प्रश्न करने दो, उन्हें आगे आने दो, प्रश्नों के लिए उन्हें मत रोको। समाज की चाबी आपके हाथ में है You can open the mind. आप सभी को बहुत-बहुत बधाई डॉ. राधाकृष्णन जी के मार्गदर्शक संदेश के साथ मैं कहना चाहूँगी..'देश सबका है... हम सब एक हैं... हमारे बीच ऊँचा वर्ग, नीचा वर्ग, जाति धर्म ये सब बातें छोड़ के आगे बढ़िये आपको पूरा दुनिया इज्जत से देखेगा...मैं हाथ जोड़ के आप से विनती करती हूँ। Understand your power, Responsibility,...Thank you.

मंत्रमुग्ध सभागार महामहिम के उद्बोधन से अभिभूत था। समारोह को अपनी दिशा की ओर बढ़ना था श्रेष्ठ 62 शिक्षकों का सम्मान गरिमामय मंच पर सम्पन्न हुआ। सम्मानित हो रहे शिक्षकों के जीवन का अविस्मरणीय पल उल्लास और खुशी से सराबोर इन क्षणों को सभी ने अपनी स्मृति का हिस्सा बनाया। औपचारिक समापन से पूर्व शासन सचिव श्री प्रवीण गुप्ता ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में सभी का आभार स्वीकारा, गरिमामय मंच के प्रति कृतज्ञता, सेवा को समर्पित श्रेष्ठ शिक्षकों के प्रति विनम्र और आदर भाव के साथ राष्ट्रगान के लिए सभी का आह्वान किया। समवेत स्वर में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हर वर्ष की भांति बिड़ला सभागार में 4 सितम्बर 2013 को आयोजित हुआ विभिन्न जिलों से आए शिक्षक कलाकारों ने सम्मानित शिक्षकों के समक्ष अपनी रंगारंग प्रस्तुतियां दी। सांस्कृतिक संध्या के मुख्य अतिथि माननीय श्री बृजकिशोर शर्मा, शिक्षा मंत्री राजस्थान सरकार और अध्यक्ष के रूप में माननीया श्रीमती नसीम अख्तर इंसाफ का सान्निध्य मिला। शासन सचिव प्रवीण गुप्ता, माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ. वीना प्रधान ने सांस्कृतिक संध्या में उपस्थित रहकर कलाकारों का उत्साह बढ़ाया। अजमेर और जयपुर मण्डल के शिक्षक कलाकारों ने एकल नृत्य, समूह गान, नृत्य और प्रसंगानुसार वेशभूषा आदि से सभी का मन मोहा। नेशनल नृत्य रत्न अवार्ड 2009 से सम्मानित अनुपिता झा ने सूर्य नृत्य प्रस्तुत कर अपनी नृत्य प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। मीरा सक्सेना, जयपुर के एकल नृत्य ठुमरी, अशोक शर्मा अजमेर के भवाई नृत्य, राजेन्द्र डांगी के तबला वादन और अजमेर के ही राहुल उपाध्याय के कथक नृत्य कृष्ण-राधा की प्रस्तुति ने दर्शकों को वाह! वाह! करने पर मजबूर किया। शासन सचिव प्रवीण गुप्ता और माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ. वीना प्रधान ने प्रत्येक प्रभावी प्रस्तुति पर तालियां बजाकर शिक्षक कलाकारों का उत्साहवर्द्धन किया।

–मुकेश व्यास, ज.प्र.स.बिजिरा

राज्य स्तर पर सम्मानित शिक्षकों की नामावली, 2013

1. **डॉ. भरतसिंह ओला,** वरिष्ठ अध्यापक रा.मा.वि., बड़बिराना,नोहर (हनुमानगढ़)
2. **श्री नवाब सिंह,** वरिष्ठ अध्यापक रा.मा.वि., पपरेरा (भरतपुर)
3. **श्रीमती रेणू तिवारी,** वरिष्ठ अध्यापिका रा.बा.मा.वि., रोहट (पाली)
4. **श्री दिनेश सिंह शेखावत,**व्याख्याता (भौतिक विज्ञान), श्री खोराजी उ.मा.वि., खोराबीसल (जयपुर)
5. **श्री ओमप्रकाश दौतानिया,** व्याख्याता (संस्कृत),रा.उ.मा.वि.बगवाड़ा (जयपुर)
6. **श्री महेन्द्र कुमार,** प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि., 40 जी.बी., श्रीगंगानगर
7. **श्रीमती विजयलक्ष्मी दीक्षित,** प्रधानाचार्य सेन्ट्रल पब्लिक सी.सै. स्कूल, अलवर
8. **श्री प्रेमचन्द निर्मल,** व.अ. (विज्ञान) रा.मा.वि. बालिता, कोटा
9. **श्री सुआलाल शर्मा,** प्रधानाध्यापक रा.मा.वि. मुरलीपुरा स्कीम, जयपुर
10. **श्री शिवशंकर बोहरा,** वरिष्ठ अध्यापक रा.मा.वि. मंगलपुरा, लाडनूं (नागौर)
11. **श्रीमती अलका सक्सैना,** प्राध्यापक रा.बा.उ.मा.वि., धौलपुर
12. **श्री उदयलाल रेगर,** वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक रा.उ.मा.वि., रेलमगरा (राजसमंद)
13. **श्री प्रकाश चन्द सिंगाड़िया,** प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि., सिरयारी (पाली)
14. **श्री हरेन्द्र सिंह चौहान,** व.अ. (विज्ञान) रा.उ.मा.वि., सकानी (डूंगरपुर)
15. **श्री बसन्त सिंह मान,** शा.शि. (तृ.श्रे.अ.) रा.उ.मा.वि. सिलवाला खुर्द, हनुमानगढ़
16. **श्री हीरालाल सैनी,** प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि., खोह (अलवर)
17. **श्री घेवरराम सिंगारिया,** वरिष्ठ अध्यापक रा.उ.मा.वि., रूपावास (पाली)
18. **श्रीमती रूपा पारीक,** व्याख्याता रा.उ.मा.वि. , हुरड़ा (भीलवाड़ा)
19. **श्री सुधीर पीपाड़ा,** शारीरिक शिक्षक रा.मा.वि., आटूण (भीलवाड़ा)
20. **श्री सुभाष कुमार श्रोत्रिय,** वरिष्ठ अध्यापक रा.मा.वि. कलक्ट्री (झालावाड़)
21. **श्री सोहनलाल चौधरी,** व्याख्याता रा.उ.मा.वि., गंगरार (चित्तौड़गढ़)
22. **श्री नरेन्द्र सिंह रावत,** वरिष्ठ अध्यापक रा.जैन गुरुकुल उ.मा.वि., ब्यावर (अजमेर)
23. **श्री रितेश कुमार पण्ड्या,** अध्यापक रा.मा.वि., रोहनवाड़ा (डूंगरपुर)
24. **श्री मनोहर सिंह देवड़ा,** प्रधानाचार्य श्री महावीर रा.उ.मा.वि.,बीजापुर (पाली)
25. **श्री मिश्रीलाल खारोल,** वरिष्ठ अध्यापक रा.उ.मा.वि., रायला (भीलवाड़ा)
26. **श्रीमती प्रीति जैन,** वरिष्ठ अध्यापिका रा.सेठ आनंदीलाल पोद्दार मूक बधिर उ.मा.वि., जयपुर
27. **श्री रामावतार चौधरी,** अध्यापक रा.उ.प्रा.वि., कुड़ली, फागी (जयपुर)
28. **श्री बाबूलाल टेलर,** प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.वि., वार्ड नं. 11 कालाडेरा, गोविन्दगढ़, जयपुर
29. **डॉ. मीना जांगिड़,** अध्यापिका रा.उ.प्रा.वि., शास्त्री नगर, जोधपुर
30. **श्रीमती अनिल कुमारी राठौड़,** प्र.अ. रा.बा.उ.प्रा.वि., पर्दा पावटा, जोधपुर
31. **श्री कृष्ण कान्त चौहान,** अध्यापक रा.प्रा.वि.,लकापा, पं.स.सलूम्बर, उदयपुर
32. **श्री जैसाराम धायल,** शारीरिक शिक्षक रा.उ.प्रा.वि., डूंगरों का तला, बाड़मेर
33. **श्री सुरेन्द्र सिंह सिकरवार,** अध्यापक रा.प्रा.वि., महाराजपुरा, पं.स. राजाखेड़ा धौलपुर
34. **श्री गोपाल लाल साधु,** प्रधानाध्यापक रा.प्रा.वि., जालिया-III, पं.स. अरांई (अजमेर)
35. **डॉ. शेरसिंह,** शारीरिक शिक्षक रा.उ.प्रा.वि., बुर्जवाला, श्रीकरणपुर (श्रीगंगानगर)
36. **श्री अरुण कुमार पूनिया,** प्रधानाध्यापक राज. श्री फूलचन्द राजगाढ़िया उ.प्रा.वि. राजगढ़ (चूरू)
37. **श्री जानकी लाल शर्मा,** प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.वि., सिरोज, अरांई (अजमेर)
38. **श्री सत्यनारायण शर्मा,** प्रधानाध्यापक श्री जैन दिवाकर मोहन मुनि रा.उ.प्रा.वि. पालू खुर्द, दूदू (जयपुर)
39. **श्री गोपाल लाल व्यास,** प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.वि.,जावदा-द्वि, निम्बाहेड़ा
40. **श्रीमती क्वीना मेरी,** शारीरिक शिक्षक रा.बा.उ.प्रा.वि., जगदीश चौक, उदयपुर
41. **श्री सांवल कुमार ओझा,** प्रधानाध्यापक श्री माणक लोढ़ा रा.उ.प्रा.वि., गुरला, सुवाणा (भीलवाड़ा)
42. **डॉ. राधाकिशन सोनी,** अध्यापक रा.मा.वि.गोगड़ियावाला, श्रीकोलायत, बीकानेर
43. **श्रीमती निर्मला भंडारी,** प्रधानाध्यापिका रा.प्रा.वि. बरसों का नगला, भरतपुर
44. **श्री मनोज कुमार भारद्वाज,** अध्यापक रा.उ.प्रा.वि., प्रेमनगर, कोटा
45. **श्री विष्णुदयाल शर्मा,** अध्यापक रा.प्रा.वि. टाईनाड़ी (खजवाना), पं.स. मूण्डवा (नागौर)
46. **श्री जगदीश चन्द्र गर्ग,** प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.वि., सड़क का बाड़िया, शिवपुर (भीलवाड़ा)
47. **श्री हनुमानराम विश्नोई,** प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.वि., गोदावास खुर्द, कल्याणपुर (बाड़मेर)
48. **श्री जमालूद्दीन खां,** प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.वि.,बड़ावास,लक्ष्मणगढ़ (अलवर)
49. **श्री राजकुमार वर्मा,** प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.वि., पीनणी, तह. मालपुरा-टोंक
50. **श्रीमती सुमन नेहरा,** अध्यापिका रा.बा.उ.प्रा.वि., चांदूसर, पं.स. जसवन्तपुरा (जालौर)
51. **श्री मानसिंह चौहान,** प्रधानाध्यापक रा.उ.प्रा.वि., जसपुर झापका (डूंगरपुर)
52. **श्री मुरारीलाल जांगिड़,** अध्यापक रा.उ.प्रा.विद्यालय, पं.स. किशनगढ़वास, अलमदीका (अलवर)
53. **श्री अशोक कुमार शर्मा,** व.अ. (अंग्रेजी) रा.व.उपा. संस्कृत वि., हाथोज, जयपुर
54. **श्री सीताराम शर्मा,** व.अ. रा.व.उपा. संस्कृत वि., पिलोद, झुंझुनूं
55. **श्री बसन्त कुमार कानूनगो,** व.अ. रा.प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय, चौमूं (जयपुर)
56. **श्री सुभाष चन्द्र दोतोलिया,** व.अ. रा.व.उपा. संस्कृत वि., बिलोची (जयपुर)
57. **श्री प्रदीप कुमार भारद्वाज,** व.अ. रा.उ.प्रा.संस्कृत वि., कनकपुरा, जयपुर
58. **श्री महेन्द्र कुमार पारीक,** अध्यापक रा.उ.प्रा.संस्कृत विद्यालय, मालूवाला जोहड़ा पीपराली (सीकर)
59. **श्री विनोद कुमार शर्मा,** अध्यापक रा.उ.प्रा.संस्कृत वि., देवपुरा ढाणी गुजरान चौमूं, जयपुर
60. **श्रीमती सुशीला शर्मा,** अध्यापिका रा.उ.प्रा.संस्कृत वि., खेतड़ी हाऊस, जयपुर
61. **श्री रामदयाल सैनी,** अध्यापक रा.प्रा.संस्कृत वि., डाबर का बालाजी, सीकर
62. **श्री सतीशचन्द्र शर्मा,** अध्यापक रा.प्रा.संस्कृत वि., कुम्हेर (भरतपुर)

प्रतिध्वनि

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान

महात्मा गांधी के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेने के लिए अनेक दृष्टान्त हमारे पास उपलब्ध हैं। वे दया, करुणा और संवेदनशीलता के साक्षात स्वरूप थे। सत्य और अहिंसा उनके व्यक्तित्व के आभूषण थे। सत्य उनके लिए ईश्वर था। सबके प्रति भलाई का भाव और अपने प्रति किसी भी प्रकार के अहित अथवा अपमान के बावजूद सहनशीलता एवं क्षमा कर देने की अद्भुत क्षमता गांधी बाबा के ही बस की बात हो सकती है। सामान्य व्यक्ति तो कदाचित ऐसा नहीं कर सकते।

भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के नायक के रूप में उन्हे देश का हर नागरिक जानता है। एक साधारण लगने वाले असाधारण व्यक्ति द्वारा किये गये अद्वितीय कार्य का यह एक विलक्षण उदाहरण था। भले ही गांधी की इस महान उपलब्धि के पश्चात्, जिसका आधार सत्याग्रह था, देश दुनिया में तद्नुरूप हुए आन्दोलनों में सफलता मिली हो लेकिन भारतीय स्वतन्त्रता हेतु चलाए गये आन्दोलन दौर या कि गांधी युग में वैसा होना असम्भव प्राय: लगा करता था। कहते थे कि अंग्रेजों के राज्य में कभी सूर्य अस्त नही होता। उन अंग्रेजों को परास्त करना कोई सामान्य काम नहीं था और वह भी सत्याग्रह के बलबूते।

सत्याग्रह का अर्थ है सत्य और न्याय के लिए निवेदन और इस निवेदन की पृष्ठभूमि में प्रेम, अंहिसा तथा सन्मति। सत्याग्रह की नाव और अहिंसा की पतवार। मगर उस नामुकिन लगने वाला, देश को गुलामी से मुक्ति दिलाने वाला यह काम सत्याग्रह और अहिंसा के बल पर मुमकिन हुआ। सत्याग्रह की नाव और उस पर लगी अहिंसा की पतवार इतनी मजबूत थी कि तूफानों और झझावतों से टकरा-टकरा कर अन्तत: मंजिल तक पहुँच ही गई। इस प्रकार प्रेम, अंहिसा और सन्मति के निर्मल नीर में नहाया और रस भरा सत्याग्रह तोप, तलवार व बन्दूक से बड़ी ताकत बनकर सामने आया। जिस पर दुनिया भर में चर्चा हुई और हथियारों के बेअन्त जखीरे में वह अमोघ अस्त्र के रूप में स्थापित हो गया। सत्याग्रह एक ऐसा हथियार है जो अन्य किसी भी हथियार को हरा सकता है।

जो लोग मानवता का हित साधने के भाव से शान्ति और सहिष्णुता के लिए काम करते हैं, उन्हें एक न एक दिन सफलता और प्रतिष्ठा अवश्य मिलती है। गांधीजी के द्वारा दिखाये गये रास्ते पर दुनिया के विभिन्न भागों में अलग अलग देशों में जन आन्दोलन हुए और उनमें आशातीत सफलता प्राप्त हुई। इनमें अमेरिका का नागरिक आन्दोलन भी एक था। अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति बराक ओबामा महात्मा गांधी से अत्यन्त प्रभावित हैं। उन्हें अपना हीरो बताते हुए बराक ओबामा कहते हैं, **'यदि किसी जीवित अथवा दिवंगत हस्ति के साथ मुझे रात्रि भोज करने का मौका दिया जावे तो महात्मा गांधी मेरी पहली पसन्द होंगे। अगर भारत में अहिंसा आन्दोलन शुरू नहीं हुआ होता तो अमेरिका में भी नागरिक अधिकारों के लिए आन्दोलन नहीं हो पाता।'**

विख्यात पत्रिका टाइम ने वर्ष 2011 में दुनिया के 25 सर्वकालिक महत्वपूर्ण नेताओं की सूची प्रकाशित की थी जिसमें सबसे ऊपर महात्मा गांधी का नाम है। टाइम पत्रिका ने लिखा है कि अहिंसामय शान्तिपूर्ण विरोध प्रदर्शन के कारण वे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के लिए प्राणवायु बन गये। कितनी बड़ी बात कही है टाइम ने। हमें इस पर गर्व करना चाहिए। वर्ष 2007 में गांधी दर्शन की उपादेयता को मान्यता देकर उनके जन्म दिन 2 अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाये जाने का संयुक्त राष्ट्र संघ का निर्णय गांधीजी को सर्वकालिक एवं सार्वभोमिक नेता बनाता है। इस प्रकार पूज्य बापू भारत की अनमोल धरोहर हैं। उनके विचारों को हमारे संस्कारों में संजोकर तद्नुसार आचरण करना हर भारतीय का पुनीत कर्तव्य है और इसी में हमारा हित निहित है।

महात्मा गांधी केवल भारत के आजादी आन्दोलन के ही हीरो नहीं थे बल्कि उन्होंने सम्पूर्ण जीवनचर्या पर अनुभूत दर्शन हमें प्रदान किया है। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत महत्वपूर्ण है। राजनीति, अर्थनीति, समाजशास्त्र, धर्मशास्त्र, चिकित्साशास्त्र आदि-आदि सभी क्षेत्रों में गांधीजी के विचार हमें रास्ता दिखाने वाले हैं। गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा का जो स्वरूप देश के सम्मुख रखा था, उसमें बालक के सर्वतोमुखी विकास के साथ-साथ उसे एक आदर्श नागरिक के रूप में तैयार करने की ताकत है। बुनियादी शिक्षा के पैटर्न को लेकर गाँधीजी कितने उत्साहित एवं आशावान थे, यह उनके द्वारा 22 सितम्बर 1937 को प्रथम वर्धा परिषद में दिए गये वक्तव्य से उजागर होता है। उन्होंने अत्यन्त भावुक होकर तब कहा था, 'इसमें (बुनियादी शिक्षा) मेरे सारे रचनात्मक कार्यक्रम को व्यावहारिक रूप देने की कुंजी निहित है। यह मेरी अंतिम वसीयत है।' बुनियादी शिक्षा का महत्व बताने के लिए इससे वजनी कोई और बात हो नहीं सकती।

महात्मा गाँधी कदाचित औपचारिक परीक्षा प्रणाली के पक्षधर नहीं थे। वे पढ़ाई-लिखाई के साथ शारीरिक श्रम, अपनी संस्कृति में विश्वास, सदाचार तथा मन मस्तिष्क के समग्र विकास को शिक्षा के समानन्तर देखना चाहते थे। यदि प्रमाण-पत्र/उपाधि आधारित पढ़ाई किया कोई व्यक्ति खाना नहीं बना सकता, अपने मैले हो गये कपड़े धो नहीं सकता, घर की सफाई नहीं कर सकता और यहाँ तक कि अपना पाखाना खुद साफ नहीं कर सकता है तो यह उसकी अधूरी पढ़ाई का परिचायक है। गाँधीजी इसे व्यापक एवं समग्र शिक्षा मानते थे जिसे ग्रहण करने वाले व्यक्ति को असफल होने का कोई डर नहीं रहता।

शिविरा के इस अंक को सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम (CCE) विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। गांधीजी भी यही चाहते थे। CCE में यदि E के स्थान पर C(Care) रखते हैं तो यह CCC या 3C या C^3 बनता है। इसमें तीसरा C यानी Care का आशय यह है कि हम शिक्षक बच्चे की इतनी केयर यानी देखभाल करें कि वह वांछित कौशल व दक्षता प्राप्त कर लें। तब न तो उसे किसी मूल्यांकन से भय लगेगा और न ही हमें। बच्चा भी पास और हम भी पास। सब पास। कोई फेल नहीं और आखिर यही तो कहता है शिक्षा का अधिकार अधिनियम। मगर इसके लिए हमें सच्चे मन से बच्चे की केयर करनी पड़ेगी जो अन्तत: हमारा नैतिक एवं व्यवसायगत कर्तव्य भी बनता है।

-ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

शिविरा पत्रिका मासिक/अक्टूबर 2013 अंक/प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक डॉ. वीना प्रधान, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा द्वारा डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेन्ट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर-334011 से प्रकाशित एवं हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : डॉ. वीना प्रधान

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, 2013 : पुरस्कृत शिक्षक

फोटो सौजन्य : शिक्षा संस्थिकी, जयपुर

डाक पंजीयन संख्या RJJP/CM-28/2011-13 त्रिमासिक पत्रिका (मासिक) • अक्टूबर, 2013 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10956/66
प्रकाशन तिथि : 1 अक्टूबर, 2013 मूल्य का भुगतान : डाक टिकट से, 6 प्रतियां

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

उम्मेद भवन पैलेस, जोधपुर

महाराजा उम्मेद सिंह ने इस महल का निर्माण सन् 1943 में किया था। मार्बल और बालूका पत्थर से बने इस महल का दूसरा पर्यटकों को बहुतायत पसंद आता है। इस महल के संग्रहालय में पुरातन युग की घड़ियाँ और पेंटिंग्स भी संरक्षित है। यहीं एक ऐसा बीसवीं सदी का महल है जो बाढ़ राहत परियोजना के अंतर्गत निर्मित हुआ जिसके कारण बाढ़ से पीड़ित जनता को रोजगार प्राप्त हुआ। यह महल दो वर्ष में बनकर तैयार हुआ। बलुआ पत्थर से बना यह अति सम्पन्न भवन अभी पूर्व शासकों का निवास स्थान है जिसके एक हिस्से में होटल चलता है और बाकी के हिस्से में संग्रहालय निर्मित है।

सौजन्य : डॉ. गोपाल सिंह राजपुरोहित, प्राचार्य एवं प्रबंध निदेशक, गोकुल बाबू शिक्षा कॉलेज, पीपाड़ शहर-342601 (जोधपुर)